भारत में जिहाद

सुलतानों (712-1800 सी.ई.) के अपने इतिहासकारों के आधार पर

जयदीप सेन

मुस्लिम राज्य काल में हिन्दुओं का कत्ले आम, बन्दी करण धर्मान्तरण एवं मन्दिर विनाश का संक्षिप्त विवरण

(ईलियट एवं डाउसन, खंड 1 से 7 तक)

मुस्लिम आक्रान्ताओं और शासकों ने जिहाद के नाम पर लाखों हिन्दू पुरूषों, स्त्रियों व बच्चों की हत्या की तथा लाखों को बन्दी बनाकर गज़नी आदि देशों में बेचा। हजारों मन्दिरों को नष्ट किया और अधिकांश के स्थान पर उसी मलवे से मस्जिदें बना दीं गईं। निम्नलिखित विवरण सुलतानों के अपने इतिहासकारों के कथनों पर आधारित है :

(1) **मुहम्मद बिन कासिम**—रेवार में छत्तीस हजार कत्ल, एक लाख बंदी और तीस हजार स्त्रियों को कैदकर बग़दाद भेजा।

(2) **महमूद गज़नवी**—पेशावर में पन्द्रह हजार कत्ल और पाँच लाख स्त्री पुरूष बन्दी, सिरसा में हजारों कत्ल और दो लाख बन्दी।

(3) **कुतुबुद्दीन ऐवक**—कालिंजर में पाँच हजार कत्ल, पचास हजार बन्दी!

(4) **मौहम्मद गौरी**—अजमेर में एक लाख और गुजरात में पचास हजार कत्ल एवं बीस हजार में अधिकांश स्त्रियाँ बंदी।

(5) **तिमूर**—भटनेर में दस हजार, सिरसा में दो हजार जाट और लोनी-दिल्ली में एक लाख कत्ल और हजारों स्त्रियां बन्दी।

(6) **बाबर**—बिजौरी में तीन हजार कत्ल।

(7) **अकबर**—चिन्तौड़ में अड़तालीस हजार कत्ल।

(8) **अकबर और जहाँगीर**—छः लाख कत्ल।

(9) **औरंगज़ेब** लाखों हिन्दुओं की हत्या और हजारों मन्दिरों के तुड़वाकर उनकी जगह मस्जिदें बनवाई। मन्दिर विनाश सबसे अधिक वाराणसी, मथुरा, उज्जेन, आदि तीर्थ स्थानों पर हुआ सीताराम सहगलने मन्दिर विनाश का विस्तृत वर्णन हिन्दू टेम्पिल्स—ह्वाट है पिन्स टू देम-दो खंडों में दिया है।

(10) **अहमदशाह अब्दाली**—मथुरा में बारह हजार जाटों, व दो सौ बच्चों, चार हजार सन्यासियों, एवं पानीपत में अठ्ठाईस हजार का कत्ल तथा 1761 कई लाख मराठे कत्ल किए गए। इन सबके प्रमाण इसी पुस्तक में दिए गए हैं।

(11) **टीपू सुलतान**—हजारों का कत्ल। 2000 मंदिर नष्ट।

धर्मान्तरण—प्रत्येक सुल्तान ने 'इस्लाम या तलवार' के बल पर लाखों हिन्दुओं को इस्लाम में धर्मान्तरित किया। भारत के 95 प्रतिशत मुसलमान इसी काल में धर्मान्तरित हुए थे। (के. एस. लाल)।

भारत में जिहाद :

सुलतानों (712-1800 सी.ई.)
के अपने इतिहासकारों के आधार पर

"इस्लाम एक धर्म-प्रेरित मुहम्मदीय राजनैतिक आन्दोलन है। कुरान जिसका दर्शन, पैगम्बर मुहम्मद जिसका आदर्श, हदीसें जिसका व्यवहार शास्त्र, शरियत जिसका विधिविधान, जिहाद जिसकी कार्य प्रणाली, मुसलमान जिसके सैनिक, मदरसे जिसके प्रशिक्षण केन्द्र, गैर-मुस्लिम राज्य जिसकी युद्ध भूमि और विश्व इस्लामी साम्राज्य जिसका अन्तिम उद्देश्य है। इसीलिए कियामत तक चलने वाली, जिहाद की यात्रा अन्तहीन है"

—डॉ. के.वी. पालीवाल

हिन्दू राइटर्स फोरम

129 बी, डीडीए एम. आई. जी

राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-110027

₹:30/-

विषय सूची

प्राक्कथन

हम भारतवासी जब तक इस्लाम की वास्तविकताओं को नहीं समझ लेंगे, तब तक हम समझ नहीं सकेंगे कि भारत भूमि पर पाकिस्तान क्यों बना? यदि देशवासी इस्लाम की वास्तविकता से अनभिज्ञ रहे आयेंगे तो वे देश के पुनः विभाजन को आमंत्रित करेंगे।

हिन्दुओं को कत्ल करके और उनकी संस्कृति को नष्ट करके, अरबी संस्कृति का विस्तार करना ही इस्लाम का उद्देश्य है। "भारत में जिहाद" जैसी पुस्तकें इस्लाम के विषय में ज्ञान के विस्तार के लिए आवश्यक हैं। पुस्तक के लेखक श्री जयदीप सैन की पूर्ण सफलता के लिए मैं हार्दिक कामनाएँ करता हूँ।

754, सदाशिव पैठ — **(ह.) गोपाल गौडसे**

पुणे, 411030, (महाराष्ट्र)

दिनाकं 2 फरवरी 2001

कृतज्ञता प्रकाश

इस लेख के लिपि बद्ध हो पाने के लिए स्वर्गीय श्री रामस्वरूप, श्री सीताराम गोयल, श्री अरविन्द घोष, श्री अमिताव घोष और श्री राना प्रताप राय, जिन्होंने हमारे देश में इस्लाम को इस्लामी ढंग से ही समझने तथा उसके प्रकाश में लाने के लिए प्रेरणा दी है तथा पथ प्रदर्शक का कार्य किया है; और जो अपनी योग्यता, पवित्रता, निष्ठा, और मानसिक समर्पण द्वारा हम राष्ट्रवादी भारतीयों के प्रेरणा स्त्रोत हैं और सदैव प्रेरणा स्त्रोत बने रहेंगे। वे ही सम्पूर्ण श्रेय के अधिकारी हैं। मैं, डॉ. दुर्जय चौधरी, जिनके सर्वतोमुखी अध्यवसाय और निष्ठा के अभाव में यह पुस्तक प्रगट हो ही नहीं पाती, के न चुक सकने वाले ऋण के प्रति कृतज्ञता प्रगट करता हूँ। मैं श्री वेद प्रकाश, पुनीत, देव जीत, गौतम, अरिन्दम, कौशिक, आरनब, इन्द्रानिल, और अनुपम जिनके सतत सहयोग, एवं उत्साहवर्धन व हिम्मत बनाये रखने के सतत प्रयासों के लिए भी मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ।

सबसे अन्त में, मैं अपने पूज्य माता पिता का भी ऋणी एवम् कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे इस पुस्तक के लिखने मात्र के लिए ही नहीं वरन् अपने अस्तित्व तथा स्वराष्ट्र, स्वधर्म, और स्वसंस्कृति के प्रति अनुराग व भक्ति की प्रेरणा दी। मैं उनके योगदान को प्रशंसा सहित हृदय से स्वीकार करता हूँ।

जय दीप सेन

अध्याय–1

इस्लामी जिहाद क्या, कैसे और क्यों ?

इस्लामी जिहाद क्या ?

"जिहाद शब्द अरबी भाषा के 'जुहद' शब्द से बना है जिसका अर्थ है–प्रयास करना, कोशिश करना। मगर इस्लाम के धार्मिक अर्थ में जो शब्द प्रयोग होता है वह है–*"जिहाद फ़ी सबी लिल्लाह"* यानी 'अल्लाह के लिए' या अल्लाह के मार्ग में जिहाद करना"

जिहाद मुसलमानों के लिए एक सर्वोच्च व महत्वपूर्ण कर्त्तव्य है। जिहाद का अर्थ है गैर-मुसलमानों* पर आक्रमण करना, उनका वध करना, दास बना लेना, धर्मान्तरण कर देना, भले ही उन्होंने मुसलमानों की कोई, कैसी भी हानि नहीं की हो। और भले ही वे निहत्थे हों। जिहाद अल्लाह के लिए किया जाता है। अल्लाह की सेवा के लिए पूजा और युद्ध एक समान हैं। जिहाद से बचना सबसे बड़ा पाप व अपराध हैं; जिहाद के माध्यम से महिमा व बड़प्पन प्राप्त कर लेना सबसे बड़ी उपलब्धि है। इस्लाम में विश्व विजय कर लेने सम्बन्धी अंहकार एक भीषण रोग है। इस्लाम कहता है कि उसे दूसरे पन्थों पर विजय प्राप्त कर लेनी है क्योंकि वह ही अकेला अन्तिम सच है। शेष सारे पन्थ पूरी तरह झूठे हैं। और उसमें कोई त्रुटि नहीं है। इस्लाम में यह रूढ़िवादिता आकस्मिक न होकर एक अनिवार्यता है। इस्लाम में ज्ञान का आशय पान्थिक ज्ञान से है जो पैगम्बर मुहम्मद को अल्लाह द्वारा प्रगटीकरण से उपलब्ध कराया गया था वह ही एक मात्र सच है। वह परिवर्तनशीलता के अभाव को ही शक्ति मानता है। यही कारण है कि इस्लामी धार्मिक नेताओं व विचारकों को सुधार शब्द से असीमित घृणा है। इस्लामी धर्म ग्रन्थ जिहाद के आदेशों, निर्देशों व आज्ञाओं से भरे पड़े हैं और इसमें विचार विनियम, एवं पारस्परिक सहमति के लिए कोई/कैसा भी स्थान नहीं है।

इस्लामी धर्म ग्रन्थों के अनुसार गैर मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध करना जिहाद है। जिहाद अल्लाह की सेवा के लिए ही किया जाता है। पाकिस्तानी सेना के ब्रिगेडियर एस. के. मलिक के अनुसार "कुरानिक कन्सैप्ट ऑफ वार", ***"युद्ध के संदर्भ में कुरान सम्बन्धी प्रमुख मार्गदर्शक तत्व यह है कि युद्ध अल्लाह के उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही लड़ा जाता है।"*** (पृ. 54) जो लोग इस सर्वाधिक उपयोगी दैवीय उद्देश्य की पूर्ति के लिए युद्ध करते हैं, उनके लिए कुरान अति आकर्षक, उत्तम व स्वर्गीय उपहारों की व्यवस्था करता है। अल्लाह के उद्देश्य की पूर्ति के लिए किसी व्यक्ति का अल्लाह की इच्छा के आगे पूर्ण समर्पण ही जिहाद का माप दण्ड है और जो लोग अल्लाह के उद्देश्य की पूर्ति के लिए पूरी तरह समर्पित हो जाने के लिए प्रस्तुत नहीं होते है अल्लाह उनसे नाराज़ हो जाता है। युद्ध में जीवन व धन सम्पत्ति के विनाश की जोखिम तो होती ही है। जिसे स्वेच्छा से स्वीकार कर लिया जाना चाहिए। कुरान मजीद (4 : 95, पृ. 217) में कहा गया है, ***"कि सभी (मुसलमान) जो घर बैठे रहते हैं और आघात नहीं सहते, वे, उन लोगों जो अपने शरीर व धन सम्पत्ति के साथ अल्लाह के लिए युद्ध करते हैं, के समान नहीं होते। जो अपने शरीर व धन सम्पत्ति के साथ युद्ध करते हैं उन लोगों के लिए, अल्लाह ने घर में बैठे रहने वाले मुसलमानों की अपेक्षा, एक अधिक उच्च स्तर दे रखा है।"*** कुरान ने प्रतिपादित कर रखा है कि सारे युद्धों का केन्द्र बिन्दु अल्लाह के उद्देश्य की पूर्ति है—इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सर्वप्रथम अल्लाह ने मुसलमानों को युद्ध के लिए अनुमति देना ही तय किया था किन्तु बाद में अल्लाह ने इसे धार्मिक कर्तव्य व दायित्व के रूप में आदेश निश्चित कर दिया।

'जिहाद' की नीतियों में शत्रुओं के हृदयों में भय स्थापित कर देने का काम एक महत्वपूर्ण व्यवस्था थी। बदर के युद्ध के सम्बन्ध में सर्वशक्ति मान् अल्लाह ने पैगम्बर मुहम्मद से इस प्रकार कहा था, ***"मैं तुम्हारे साथ हूँ। (8.12, पृ. 550) विश्वासियों को दृढ़ता दो, मैं गैर-मुसलमानों के हृदयों में भय भर दूँगा।"*** उहुद के युद्ध में अल्लाह

ने युद्ध में हुई इस्लामी हार की समीक्षा की थी; दैवीय मार्गदर्शन किया था, और एक वचन दिया था, ***"शीघ्र ही हम गैर-मुसलमानों के हृदयों में भय भर देंगे।"*** (3 : 151 पृ. 207) बानू कुरेजिया द्वारा दिये गये धोखे के सम्बन्ध में वर्णन करते हुए कुरान ने बताया : और 'किताब वालों' में से जिन लोगों ने उनकी (आक्रमण करने वालों की) सहायता की थी उन्हें उनकी गढ़ियों से उतार लिया और उनके दिलों में धाक बिठा दी कि तुम एक गिरोह को जान से मारने लगे और एक गिरोह को बन्दी बनाने लगे और उसने (अल्लाह ने) तुम्हें उनके भू-भाग और उनके घरों और उनके मालों का वारिस बना दिया और उस भू-भाग का भी जिसे तुमने पद दलित नहीं किया।" (33 : 26-26 पृ. 748) मलिक कहता है कि : "शत्रुओं के हृदयों में बैठाया हुआ भय मात्र साधन ही नहीं है वरन् साध्य भी है। शत्रुओं के हृदय में भय जब ही भर पाता है तब उनका मत (विश्वास) समाप्त कर दिया जाता है। मनोवैज्ञानिक विकृति तो अस्थिर वा अल्पकालीन होती है किन्तु मत (विश्वास) की विकृति स्थाई परिणामकारी होती है।" ....अन्तिम विश्लेषण के रूप में शत्रु पक्ष के हृदयों में भय व्याप्त कर देने के लिए उसके मत (विश्वास) की विकृति अनिवार्य है।" (वही, पृ. 58) यह वही है जो मुस्लिम शासकों ने अपने काल में भारत में किया। मुसलमानों को युद्ध के लिए आदेश करते समय कुरान ने मूर्ति पूजकों के विरूद्ध युद्ध को दैवी युद्ध के रूप में परिभाषित किया है।

जिहाद का उद्देश्य

कुरान ने आदेश दिया, "उनसे युद्ध करो जहाँ तक कि 'फ़ितना' (उपद्रव) शेष न रहे और 'दीन' अल्लाह का हो जाए।" (2 : 193, पृ. 158)

"तुम उनसे युद्ध करो यहाँ तक कि फ़ितना बाकी न रहे और 'दीन' (धर्म) पूरा-का-पूरा अल्लाह के लिए हो जाए।" (8 : 39 : पृ. 354)

नोट—सभी आयतें 'कुरान मजीद' अनु मुहम्मद फ़ारुक खां से ली गई हैं।

उपलिखित विश्लेषण में से तीन निष्कर्ष निकलते हैं, (1) प्रथम सारे युद्धों में से मुसलमानों द्वारा प्रारम्भ किये गये युद्ध ही अल्लाह की सेवा के लिए होते हैं। परिणामस्वरूप इस्लाम का धर्मयुद्धोन्माद, व आंतकवाद ईश्वरीय आदेशानुसार कार्य हो जाता है। (2) मूर्ति पूजा अशांति है और अत्याचार की श्रेणी में है और इस्लामी न्याय अल्लाह के विश्वास में रूपान्तरित हो जाता है और यही मुसलमानों को सिखाया जाता है। (3) इस ईश्वरीय युद्ध में भाग लेना मुसलमानों के लिए अनिवार्य है और युद्ध में जो लोग भाग लेते हैं उन्हें पुरस्कार, और जो लोग भाग नहीं लेते हैं उन्हें, दण्ड दिया जाता है।

जिहाद एक सम्पर्ण युद्ध है। अरब साम्राज्य के विस्तार तथा इस्लाम को पहले सारे अरब में और फिर सारे विश्व में विस्तार की अभिलाषा को पूर्ण करने के लिए ही जिहाद का प्रारम्भ हुआ था। मुहम्मद जानता था कि उसके व्यक्ति सम्पूर्ण विश्वभर पर तब तक शासन नहीं कर सकेंगे जब तक उन्हें एक प्रभावशाली शक्ति के रूप में ढ़ाला नहीं जाता। ताकि इससे वे मूर्ति पूजकों के देशों, उनकी व्यक्तिगत सम्पत्तियों, व महिलाओं पर अधिकार जमा सकें और उन्हें अरब शक्ति के प्रभाव में ला सकें और उन्हें दास बना सकें। जिहाद चूंकि अविश्वासियों के प्रति किया जाता है, अतः मुहम्मद ने अन्य पन्थों को झूठा व अल्लाह का विरोधी घोषित कर धर्म युद्धों के लिए असीमित अवसर उत्पन्न कर दिये। इस प्रकार जिहाद मुसलमानों के लिए अल्लाह का आदेश है कि गैर-मुसलमानों का विनाश कर दें। ***जिहाद प्रारम्भ करने के लिए यह बिल्कुल भी आवश्यक नहीं कि मुसलमानेतर लोगों ने मुसलमानों के प्रति कोई कैसा भी अपराध किया हो, उनका इस्लाम में विश्वास न करना ही पर्याप्त व बड़ा अपराध है। तलवार के बल पर इनके द्वारा इस्लाम स्वीकार करा लेना जिहाद का उद्देश्य है।***

इस्लामी शब्द कोष के आधार पर जिहाद शब्द का अर्थ है, "एक प्रयास या कोशिश पैगम्बर मुहम्मद के मिशन में आस्था न रखने वाले लोगों के विरूद्ध एक धार्मिक युद्ध। कुरान और हदीसों के अनुसार यह

एक आवश्यक धार्मिक कर्त्तव्य है जिसे विशेष रूप से इस्लाम के प्रसार के लिए तथा मुसलमानों में बुराइयों को दूर करने के लिए नभाया जाता है।

जब किसी मुस्लिम शासक द्वारा किसी गैर इस्लामी देश को जीत लिया जाता है तो उसके निवासियों के सामने तीन विकल्प रखे जाते हैं : पहला इस्लाम स्वीकारना, या ज़ज़िया (टैक्स) देना और दोनों को न मानने पर तलवार द्वारा हत्या करनी।'' (डिक्शनरी ऑफ इस्लाम टी. पी. ह्यूज़िस, पृ. 243)

यही आदेश नीचे की आयतों में दिया गया है

(1) ''पकड़ो उसे (बेईमान वाले को) और उसकी गर्दन में तौक डाल दो फिर उसे भड़कती हुई आग में झोंक दो। फिर उसे एक ऐसी जंज़ीर में जकड़ो जिसकी माप सत्रर हाथ है।'' (69 : 30-32, पृ. 1071)

(2) ''रहे वे लोग जिन्होंने इन्कार किया, वे कुछ दिनों का सुख भोग रहे हैं और खा रहे हैं कि जिस तरह चौपाए खाते हैं और आग उनका ठिकाना है। कितनी ही बास्तियाँ थी जो शक्ति में तुम्हारी उस बस्ती से जिनसे तुम्हें निकाल दिया, बढ़-चढ़ कर थीं। हमने उन्हें विनष्ट कर दिया।'' (47 : 12-13 पृ. 930-931)

(3) ''याद करो जब तुम्हारा रब फ़रिश्तों की ओर प्रकाशन्ना (वह्य) करकहा था कि ''मैं तुम्हारे साथ हूँ अतः तुम ईमानवालों को जमाए रखो। मैं इन्कार करने वालों के दिलों में रौब डाले देता हूँ। तो तुम उनकी गर्दनें मारो और उनके पोर-पोर पर चोट लगाओ।'' (8 : 12, पृ. 350)

(4) सूरा 9 : 5, (पृ. 368) में कहा है ''जब हराम (प्रतिष्ठित) महीनें बीत जाऐं तो मुशरिकों (मूर्ति पूजकों) को जहाँ-कही पाओ कत्ल करो, उन्हें पकड़ो और उन्हें घेरो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो। फिर यदि वे तौबा कर लें और नमाज़ कायम करें और ज़कात दें तो उनका मार्ग छोड़ दो।''

इस्लामी धर्मग्रन्थों– में इस प्रकार की आज्ञायें बार-बार दी गई हैं। यह जिहाद ही था जिसके माध्यम से इन आदेशों का पालन किया जा सकता था। जिहाद एक बहु आयामी अवधारणा है। जिहाद की आधारभूत अवधारणा के विषय में कोई भी दो मुसलमान, भिन्न मत वाले नहीं हो सकते। इसका स्पष्ट अर्थ है। अल्लाह के लिए युद्ध करना; इस्लाम के उद्देश्यों की पूर्ति व प्रसार के लिए युद्ध करना; सच्चे पन्थ (इस्लाम) के लिए लोंगों को बलात धर्मान्तरित करना; यदि वे प्रतिरोध करें तो उनका वध कर देना; उनकी सम्पत्तियों, महिलाओं व बच्चों को अधिकार में ले लेना और उनके पूजा घरों व मन्दिरों को विनष्ट कर देना, मूर्तिभंजन और दूसरों के मन्दिरों को ढहा देना इस्लाम का प्रमुख उद्देश्य है; पैगम्बर मुहम्मद के व्यवहार को उदाहरण मान वे इसे न्यायोचित मानते हैं। स्वयं मुहम्मद ने अरब में मूर्ति पूजकों के मन्दिर ढहाये थे और वह ही तभी से उनके अनुयायियों के लिए आदर्श बन गया है। जिहाद के अभाव में इस्लाम का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। अतः जिहाद प्रत्येक मुसलमान का एक अनिवार्य धार्मिक कर्त्तव्य व दायित्व है।

जिहाद के लिए प्रोत्साहक पुरस्कार

कुरान में आदेश है कि मुजाहिद (धर्म योद्धा) के लिए आगामी दुनिया में जन्नत मिलेगी। गैर-मुसलमानों के विरूद्ध युद्ध करते हुए मुजाहिद चाहे बच जाऐं, घायल हो जाए, अथवा मर जाए उसके लिए मरणोपरान्त जन्नत हर दशा में मिलेगी ही, यह निश्चित है। जिहाद में भाग लेने का धार्मिक महत्व अन्य धार्मिक कर्त्तव्यों व क्रियाओं जैसे रोज़ा रखना, निरन्तर नमाज के लिए खड़े होना, और कुरान में लिखे अल्लाह के आदेशों का पालन करना, आदि सभी के बराबर ही है। जन्नत प्राप्ति के लिए इस्लाम के विस्तार के लिए जिहाद में भाग लेना सर्वाधिक गुण युक्त व महत्व का है। पैगम्बर ने अपने अनुयायियों को बताया था कि 'जन्नत तलवारों के साये में है।' (बुखारी 4:73, पृ.55)

कुरान के अनुसार *"जन्नत में विश्राम, और परिश्रम रहित इन्द्रिय सुख मिलता है। कलकल कर शोर करते हुए नालों में सींचे हुए भरे बगीचे, जिनमें विश्वासी.....जैसाकि अरब के निवासी सामने रखे हुए बिना हत्थे वाले पात्रों में डालकार अथवा सुन्दर कुँवारी लड़कियों द्वारा चाँदी के शीशे जैसे चमकीले चारों ओर प्रस्तुत पात्रों में डालकर, नशीली शराबें बड़े-बड़े घूंटों में पीना पसन्द करते हैं.... (जन्नत) निश्चय ही पवित्र लोगों के लिए सौभाग्यपूर्ण आवास है, जहाँ बगीचे हैं, अंगूरों के बाग हैं, उठे हुए उरोजों वाली, समान उम्रवाली, और एक पूरा भरा प्याला.....जन्नत की इन परियों की पहचान है। उनकी बड़ी-बड़ी आकर्षक आँखें मानो सीपी में से मोती चमक रहे हों। ये परियाँ एक ऐसा अनुपम उपहार हैं जिसके लिए ही विश्वासी (मुसलमान) बने हैं। निश्चय ही इन हूरियों को एक अनुपम अलभ्य कृति के रूप में हमने बनाया है; हमने इन्हें समान उम्रवाली, ब्रह्मचारिणी और अति आकर्षक व सुन्दर बनाया है।"* **हूरियों के साथ उनकी शादियाँ होगी और बहुमूल्य हीरे जवाहिरात से जड़े हुए सोने के खम्भों वाले बगीचों में ये रहेंगे।** (34:41-49; 37:40-49; 43:69-73; 55:46-77) जन्नत में सत्तर हजार दरवाज़े होगे, प्रत्येक दरवाजे पर एक-एक अति सुन्दरी हूरी इनके आगमन की प्रतीक्षा में खड़ी होगी और इनके सारे पाप क्षमा कर दिये जाएँगे। (भाजाह खां. 4:2780, पृ. 148)

हदीसों में एक लेख है (बुखारी 4:44, पृ. 36) कि "एक व्यक्ति अल्लाह के पैगम्बर के पास गया और बोला मुझे एक ऐसा कार्य बताइए जिसका पुरस्कार जिहाद के पुरस्कार के बराबर हो। पैगम्बर ने उत्तर दिया कि ऐसा कोई कार्य मेरे ध्यान में नहीं आता।" जिहाद के ऐसे पुरस्कारों के कारण ही मुजाहिदों में एक बड़ी तीव्र इच्छा जगी, कि अल्लाह के मार्ग में अथवा अल्लाह के लिए युद्ध किया जाए और मरा जाए, बार-बार युद्ध किया जाए और बार-बार मरा जाए। (बुखारी 4:54, पृ. 42-43) सुनान इब्न माजाह (4:2803-4, पृ. 162-163) में जिहाद द्वारा प्राप्त जन्नत के विस्तृत वर्णन को, दुहराया गया है।

प्रारम्भिक उम्र से ही मदरसों में पढ़ने वाले बच्चों को कुरान व हदीसों की शिक्षाओं को मुसलमानों द्वारा बार-बार पढ़ाया जाता है। हदीसों में जिहाद और जन्नत का वर्णन है। वह पाठकों के मस्तिष्कों को प्रभावित करता है।

कुरान व हदीसों के आदेशों के पूर्णतः स्पष्ट होने पर भी कुछ मुसलमान कहते हैं कि जिहाद दो प्रकार का होता है : प्रथम ***'जिहादुल अकबर'*** अर्थात् 'बड़ा धर्म युद्ध' जो अपनी वासनाओं व कामेच्छा के विरूद्ध लड़ा जाता है और दूसरा ***'जिहादुल असगर'*** यानी 'छोटा धर्म युद्ध' जो गैर-मुसलमानों के विरूद्ध लड़ा जाता है। परन्तु हदीसों व कुरान में ***'जिहाद अकबर'*** व **असगर** का कहीं कोई और कैसा भी उल्लेख नहीं है। (जिहाद कि क्सेशन 23-24)

अध्याय–2

जिहाद का कार्य रूप में स्वरूप

भारत पर राज्य करने वाले मुस्लिम शासक, भूमण्डल के विभिन्न युगों, वंशों, और क्षेत्रों से सम्बन्धित थे। उनकी भाषायें भिन्न थीं किन्तु उनके व्यवहार का प्रारूप पूर्णतः एक समान था और वह अब भी है। इस चमत्कारिक व्यवहार की एकरूपता, का कारण कुरान, हदीस, आदि में ही निहित है जिन्हें कि वे गर्व के साथ न केवल उद्धृत करते हैं बल्कि अनुसरण भी करते हैं। इस्लामी पंथ के दो पहलू हैं। एक है सैद्धान्तिक पक्ष जो कि इस्लामी धर्म ग्रन्थों, कुरान, हदीसों (पैगम्बर के कर्म और वचन) और सुन्नाह (पैगम्बर द्वारा बनाये नियम) द्वारा प्रतिपादित है। दूसरा पक्ष है जिहाद यानी कि इस्लामी धर्म युद्ध। ये दोनों पक्ष आपस में पूरी तरह जुड़े हुए हैं और यह पवित्र कुरान है जो कि ***अल्लाह के मार्ग में अल्लाह के लिए इस्लामी संघर्ष, ''जिहाद'' करने को प्रेरित तथा मार्ग दर्शन करता है।***

आज भूमण्डल के सभी प्रबुद्ध नागरिक जो विभिन्न भागों में बोस्नियाँ से लेकर फिलिपाइन तक, चैचिनियाँ से लेकर कश्मीर तक, रह रहे हैं, ''जिहाद'' शब्द से परिचित हो चुके हैं, और कुछ न कुछ अनुभव भी कर चुके हैं। विश्व के किसी भी कोने में सही, यह शब्द ***''इस्लामी जिहाद''***, समान रूप से एक जैसी ही विशिष्टता, यानी कि मुस्लिमेतर समाज के प्रति असहिष्णुता, और उसका नर संहार, तथाकथित काफ़िरों की सम्पत्ति की लूट और उनकी महिलाओं का शील हरण, प्रगट करता है। मुहम्मद के समय में बदर के युद्ध के मुजाहिदों से लेकर वर्तमान में ओसामा बिन लादेन के मुजाहिदों की भावनाएं पहले जैसी अपरिवर्तित ही हैं। लैफ्टिनैण्ट सौरभ कालिया के शरीर के वध और उनके शव के विकृतीकरण से लेकर, 25.12.2000 को जकार्ता में बम विस्फोट, 11.9.2001 को न्यूयार्क के वर्ल्ड ट्रेड सैण्टर और वाशिंगटन के पैण्टागन के विध्वंस तथा 1.10.2001 को कश्मीर में एसैम्बली भवन पर बम विस्फोट तथा संसद भवन पर हमला (13.12.2001) तथा 2004 से 2011 तक ('इस्लाम के दो

चेहरे', पृ. 74-75)तक के आतंकवाद तथा अत्याचारों की शैली एक जैसी ही है।

जिहाद को समझने की आवश्यकता

अल्लाह और उसके पैगम्बर के अनुयायियों के व्यवहार प्रारूप की एक रूपता के उचित स्पष्टीकरण के लिए मुस्लिम मनोविज्ञान के आधार, कुरान के संदर्भ में ही इस्लाम के, पक्षपातहीन, विश्लेषण की नितान्त आवश्यकता है। मुस्लिमेतर समाज में कुरान व हदीसों की शिक्षाओं के विषय में गहनतम अज्ञान के कारण अधिकतम अस्पष्टता व भम्र का निर्माण हो रहा है। साथ ही मुस्लिमेतर समाज ही इस्लामी धर्म ग्रन्थों एवम् सिद्धान्तों का पूर्ण अज्ञान व भ्रम इस्लामी विश्व के लिए सबसे बड़ी शक्ति सिद्ध हो रहा है। परम दुर्भाग्य ही है कि मुस्लिमेतर समाज कुरान व हदीसों का अध्ययन ही नहीं करता है। और उन बहुत थोड़े मुस्लिमेतर लोगों को, जिन्होंने पवित्र कुरान के पन्ने पलटने का प्रयास किया है, तथा माना है कि कुरान में उसकी आयतों की और उनकी शिक्षाओं की अन्तहीन पुनरावृत्ति का ही स्वभाव है जिससे उन्हें नीरसता और अरूचि हो जाती है। गैर-मुसलमानों को, ऐसा अनुभव इसलिए होता है क्योंकि प्रत्यक्षतः वे अपेक्षा करते हैं कि हिन्दू या बौद्ध धर्म गन्थों की भाँति कुरान में भी आध्यात्मिकता पढ़ने को मिलेगी किन्तु वैसा न होने के कारण वे निराश हो कर पढ़ना बन्द कर देते हैं। अतः वेदान्तिक दर्शन के किसी भी आध्यात्मिक दर्शन की अपेक्षा व पूर्वाग्रह के स्थान पर मात्र ज्ञान प्राप्ति के उद्देश्य से ही कुरान तथा हदीसों को पढ़ने का प्रयास करना चाहिए और जानने का प्रयत्न करना चाहिए कि एक सामान्य मुसलमान के व्यवहार में कुरान की शिक्षाओं का प्रभाव किस सीमा तक देखने को मिलता है। यदि कुरान का अध्ययन इस्लामी जिहाद को समझने के उद्देश्य से किया जाए तो यह एक अत्यन्त उपयोगी एवम् चमत्कारक प्रयास सिद्ध होगा। अतः मित्रों, भाइयों व देशवासियों ! कुरान व हदीसों को पढ़ने व समझने का प्रयास अवश्य कीजिए जिनमें से कुछ इस प्रकार हैः कुरान के 19 मदीनाई सूराह नम्बर—2, 3, 4, 5, 8, 9, 22, 24, 33, 47, 48, 49, 57,

58, 59, 60, 61, 63, और 66 की सैंकड़ो आयतों तथा प्रामाणिक हदीसों की निम्नलिखित आयतें (1) सही बुरवारी, खंड 4, की 283 हदीसें; (2) सही मुस्लिम, खंड 3 की 439 हदीसे; (3) सुनान अबू दाऊद खंड 2 की 310 हदीसें; (4) सुनान इब्न माजाह खंड 4 की 128 हदीसें; (5) सुनान नासाई की 48 हदीसें; (6) मिश्कतुल मसाहिब खंड 2 की 341 हदीसें; (7) मुवट्टा मलिक की 47 हदीसे तथा हदीस तिरमिधी की अनेकों हदीसें।

इस्लामी जिहाद

इतिहास की पुस्तकों से यह भलीभाँति स्पष्ट हो चुका है कि भारत इस्लामी आक्रमणों के सामने क्यों हारा ? इसका प्रमुख कारण भारतीयों में युद्ध करने के गुणों, क्षमता व शौर्य की कमी नहीं थी वरन् इस्लामी आक्रमणकारियों के हाथों हमारी पराजय और हजार वर्ष की हमारी लम्बी दासता का प्रमुख कारण था इस्लामी छलकपट पूर्ण मानसिकता के विषय में हमारा घोर अज्ञान। यद्यपि पृथ्वीराज चौहान, महाराना प्रताप, छत्रपति शिवाजी, गुरू गोविन्द सिंह और अनेकों वीर पुरूष अपने-अपने समय के हमारे श्रेष्ठतम योद्धा थे; आधुनिक युग में भी गांधी, नेहरू व उन जैसे अन्य हमारे अनेकों नेता में जो बुद्धि बल के तो धनी थे, किन्तु मुस्लिम मानसिकता के विषय में पूर्णतः अनभिज्ञ ही थे। परिणामस्वरूप स्थिति और भी गंभीर हो गई। इन लोगों ने पञ्चशील और धर्न-निरपेक्षता जैसे निरर्थक नारे गढ़ लिए और जन साधारण को घोर विनाश के लिए अग्रसर कर दिया। नाम मात्र भर के इन काफ़िर हिन्दुओं ने, जिन्हें इस्लाम व मुस्लिम मानसिकता के विषय में कोई, कैसा भी ज्ञान नहीं था और न उन्होंने जानने का कभी, कोई, कैसा भी प्रयास ही किया, उनके आत्मविनाशक व पूर्ण भ्रामक नारों को सच मान लिया और आचरण किया और मुसलमान, इस बज्र मूर्खता को देख, मन ही मन मुसकाराते रहे। यह निबन्ध, इस्लाम के प्रमुख आधार स्तम्भ ''जिहाद'', जिसके विषय में काफिर हिन्दुओं को पूर्ण अनभिज्ञता व भ्रम है, उसके तात्कालिक ज्ञान की अत्यन्त आवश्यकता है, का एक आलोचनात्मक व संक्षिप्त प्रामाणिक अध्ययन है।

इस्लाम ने जिहाद की आवधारणा को अल्लाह के उद्देश्य की पूर्ति के लिए धर्म-युद्ध के रूप में प्रस्तुत किया है। जिहाद का वास्तविक अर्थ कुरान के ही शब्दों में इस प्रकार है–"वे किताब वाले जो न अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न अन्तिम दिन पर और न अल्लाह और उसके रसूल के हराम अनुचित ठहराए हुए को हराम ठहराते हैं और सत्य धर्म का अनुपालन करते हैं, उनसे लड़ो, यहाँ तक कि वे सत्ता से विलग (अलग) होकर और छोटे (अधीनस्थ) बनकर ज़िज़िया देने लगें।" (9 : 29 पृ. 372)

इस्लामी धर्म ग्रन्थों में मुस्लिमेतर लोगों के विरूद्ध युद्ध, **'जिहाद'** कहा जाता है। प्रारम्भिक युग में, अरब में मूर्ति पूजकों, यहूदियों और ईसाइयों के विरूद्ध जिहाद का युद्ध लड़ा जाता था। बाद में जहाँ कहीं भी इस्लाम का विस्तार हुआ, जिहाद का युद्ध लड़ा जाता था। ब्रिगेडियर एस. के. मलिक ने लिखा है कि जिहाद अल्लाह के अनुयायियों व भक्तों का सर्वाधिक आवश्यक कर्त्तव्य है–***'युद्ध के कुरान सम्बन्धी माप दण्ड का प्रमुख स्रोत यही तथ्य है कि युद्ध अल्लाह के निमित्त ही लड़ा जाता है...अल्लाह के उद्देश्य की पूर्ति के लिए युद्ध करने के विषय में मुसलमानों को एक धार्मिक कर्त्तव्य एवम् दायित्व के रूप में आज्ञा है''*** (कुरानिक कन्सैप्ट ऑफ वार पृ. 44)।

कुरान कहता है–(1) "निकल पड़ो, चाहे हल्के हो या बोझल, और अपने मालों और अपनी जानों के साथ अल्लाह के मार्ग में 'जिहाद' करो। यह तुम्हारे लिए अच्छा है यदि तुम जानो" (9 : 41, पृ. 375)

(2) "तुम पर युद्ध अनिवार्य किया गया और वह तुम्हें अप्रिय है और बहुत सम्भव है कि कोई चीज़ तुम्हें अप्रिय हो और वह तुम्हारे लिए अच्छी हो और बहुत सम्भव है कि कोई चीज़ तुम्हें प्रिय हो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते।" (2 : 216 पृ. 162)

जिहाद का रूढ़िवादी प्रगटीकरण

पैगम्बर मुहम्मद के ठोस व्यवहारों से और अल्लाह द्वारा कुरान में प्रकटीकरण से प्रतिपादित, जिहाद की अवधारणा को अनेकों इस्लामी विद्वानों ने, सारगर्भित ग्रन्थों में, समीक्षाकर, उसे सामान्य बना दिया है। विगत सदियों में अनेकों देशों में इस्लाम के तलवार धारी सैनिकों का इन सिद्धांतों ने सदैव भरपूर मार्ग दर्शन किया है।

आठवीं सदी के कानून को व्यवस्थित करने वाले इमाम अबू हनीफा का, विश्व भर के मुसलमान सर्वाधिक सम्मान करते हैं। भारत के मुसलमानों के लिए वह एक बहुत महत्वपूर्ण न्यायिक हस्ती है और उनमें से अधिकांश उनके विचारों को मानते हैं। बारहवीं सदी के शेख बुरहानुद्दीन अली, द्वारा संग्रहीत "हिद्राया" इस विचार क्षेत्र का सर्वाधिक महत्वपूर्ण शोध प्रबन्ध है। भारत, बङ्गलादेश, व पाकिस्तान सहित विश्वभर के इस्लामी धर्म शास्त्र के कॉलेजों में न्याय-शास्त्र (फिकह) के पृथक-पृथक विद्यार्थियों के लिए "हिदाया" आज भी एक उच्च स्तरीय पुस्तक है। सर्व प्रथम ईस्ट इण्डिया कम्पनी के चार्ल्स हैमिल्टन द्वारा इसका अंग्रेजी में अनुवाद 1791 में लन्दन में प्रकाशन किया गया था। इस बृहदाकार कृति में सभी पारम्परिक विषयों का समावेश है।

वर्तमान सन्दर्भ में हमारा सम्बन्ध इसकी पुस्तक संख्या 9 "दी इन्सटीट्यूट्स" से है। अनुवादक कहता है ***"इस पुस्तक में समाविष्ट एक प्रमुख अंग है, जिसे मुहम्मद के राजनैतिक अध्यादेश कहना न्यायोचित होगा। वह ऐतिहासिक और कानूनी दोनों ही दृष्टियों से उपयोगी है।"***

यहाँ इस निबन्ध में पुस्तक संख्या 9 के कुछ अध्यायों को, जिहाद का स्वाभाव स्पष्ट करने के लिए, संक्षिप्त रूप में वर्णन किया गया है।

स्थायी युद्ध की अवधारणा

अध्याय 1 परिचय कराता है कि, जिहाद एक दैवी आदेश के रूप में स्थापित है; अल्लाह के शब्दों में, जिसने कुरान में कहा है– ***"जब कभी तुम्हें मिलें, मूर्ति-पूजकों का वध कर दो, उन्हें पकड़ लो, घेर***

लो, रोक लो, हर स्थान पर उनकी घात में प्रतीक्षा करो'' (सूरा 9 आयत 5) और भी, *''उनसे युद्ध करो जब तक मूर्ति पूजा पूर्णतः समाप्त न हो जाए और अल्लाह के पंथ की पूर्ण व अन्तिम विजय न हो जाए''* (8:39)।

प्रथम अध्याय के अन्त में निष्कर्ष के रूप में कहा है, *''अनेकों पवित्र लेखों से जैसा प्रगट होता है जिन्हें सामान्यतया इसी प्रभाव के रूप में समझा जाता है, कि भले ही वे आक्रमणकर्ता न हों गैर-मुसलमानों का तलवार द्वारा वध आवश्यक हो जाता है।''* इस विषय में कुरान का आदेश इस प्रकार है– *''विश्वासियों! अपने निकट बसने वाले गैर-मुसलमानों से युद्ध करो। और चाहिए कि वे तुमें सख्ती पाएें ''* (9:123)

युद्ध करने की विधि

दूसरे अध्याय में *''युद्ध की विधि''* का वर्णन किया जाता है। सिद्धांत में, *''गैर-मुसलमानों''* को इस्लाम स्वीकार कर लेने और जिज़िया देना स्वीकार कर लेने के आग्रह के पूर्व *''गैर-मुसलमानों''* के क्षेत्रों को विजय करने के लिए मुसलमानों को आक्रमण नहीं करना चाहिए। अन्य किसी कारण के वशीभूत नहीं वरन् उनके मात्र मुसलमान न होने के कारण ही उन पर आक्रमण किया जा रहा है। *''गैर-मुसलमानों''* को ऐसी सूचना आक्रमण के पूर्व दे देनी चाहिए। यदि *''गैर-मुसलमान''* मुसलमान धर्म या ''जजिया'' देना स्वीकार कर लेते हैं तो युद्ध स्वतः ही समाप्त हो जाता है। इस संदर्भ में कुरान का आदेश है:–

''गैर–मुसलमानों को बता दो कि यदि वे अपने ढंग बदल देते हैं यानी कि इस्लाम स्वीकार कर लेते हैं तो उनके भूतकालीन अपराध क्षमा कर दिये जाएँगे; किन्तु यदि वे वही करने में लिप्त रहे तो, उन्हें उनके पूर्व पुरूषों के भाग्य (मृत्यु) का सामना करने दो।'' (8:38)

किन्तु व्यवहार में मुसलमान ''अविश्वासियों'' के विरूद्ध आकस्मिक आक्रमण कर सकते हैं, उनका वध कर सकते हैं, उनकी सम्पत्ति लूट

सकते हैं। उदाहरणार्थ, सही नाकी में जैसा लिखा है, स्वयं पैगम्बर ने मुशलिक कबीले को आकस्मिक रूप में बिना सूचना दिये लूट लिया था और नष्ट कर दिया था; और कोबना पर निर्धारित तिथि से पूर्व एवं सूर्योदय से पहले आक्रमण करने और आग लगा देने को वह असमा के साथ सहमत हो गया था। इस सिद्धांत विरोध की आलोचना नहीं की जा सकती क्योंकि ***"जिस काम से इस्लाम की रक्षा होती है, उसके विरूद्ध गैर-मुसलमानों को कुछ भी कहने का अधिकार नहीं है।"***

महिलाओं और बच्चों का वध

सिद्धान्ततः ***"गैर-मुसलमानों"*** की महिलाओं और छोटे-छोटे बच्चों का वध नहीं किया जाना चाहिए। यदि कोई मुसलमान उनका कत्ल कर भी देता है तो कोई पाप नहीं हैं। वह किसी कैसी भी सजा या आर्थिक दण्ड का भागी नहीं होता। महत्व की बात यह है कि ***"गैर-मुसलमानों"*** की महिलाओं और उनके बच्चों के वध की मनाही किसी कैसी भी दया भावना के कारण नहीं है वरन् वे लूट के माल के प्रमुख अंग हैं जिससे मुजाहिदीन को वञ्चित नहीं किया जाना चाहिए।

जिहाद गैर-मुसलमानों के विरूद्ध एक सम्पूर्ण युद्ध

यदि "गैर-मुस्लिमान" इस्लाम स्वीकार नहीं करते या ज़िज़िया देना अस्वीकार कर देते हैं तो मुसलमान युद्ध के लिए सभी साधनों से उन पर आक्रमण कर दें, उनके आवासों और मन्दिरों में आग लगा दें, उनके बाग बगीचों को तोड़ डालें, और उनके खेत व खलिहानों को रोंद डालें।" ये सभी मार्ग विधि संगत हैं क्योंकि इनसे ***"गैर-मुसलमान"*** दुर्बल हो जाते है; उनकी अवरोधन शक्ति और साधन समाप्त हो जाते हैं। इस विषय में कुरान के आदेश हैं—"याद करो जब तुम्हारा रब फरिश्तों की ओर प्रकाशना (वह्य) कर रहा था कि "मैं तुम्हारे साथ हूँ। अतः तुम ईमानवालों को जमाए रखो। मैं इनकार करने वालों के दिलों को रौब डाले देता हूँ। तो तुम उनकी गरदनें मारो और उनके पोर-पोर-पर चोट लगाओ। यह इसलिए कि

उन्होंने अल्लाह और रसूल का विरोध किया और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करे (उसे कठोर यातना मिलकर रहेगी) क्योंकि अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।" (8 : 12-13, पृ. 150)

यदि पिता-*"गैर-मूसलमान"* है, तो "पुत्र पिता से मैत्री न करे। इस संदर्भ में कुरान का आदेश है, "हे ईमान वालो! अपने बापों और अपने भाइयों को अपना मित्र न बनाओ यदि वे 'ईमान' की अपेक्षा कुफ्र को पसन्द करें। और तुम में से जो कोई उनसे मित्रता का नाता जोड़ेगा तो ऐसे ही लोग ज़ालिम होंगे।" (9 : 23, पृ. 370)

शान्ति स्थापना की रणनीतियाँ

अध्याय तीन में शांति स्थापना की रणनीतियों का वर्णन है। यदि इमाम (जिहाद के नेता) को लगे कि **"गैर-मुसलमानों"** के साथ शांति करना मुसलमानों के हित में है तो उसे शांति के लिए सहमत हो जाना चाहिए जैसा कि पैगम्बर ने ***"मक्का के गैर-मुसलमानों"*** के साथ किया था। किन्तु यदि शांति करना मुसलमानों के हित में नहीं है, तो शांति करना विधि संगत नहीं होगा, क्योंकि प्रत्यक्षतः व्यवहार में शांति की बात युद्ध से पीछे हट जाने के बराबर होगी। ***"गैर मुसलमानों"*** के साथ जब यह मुसलमानों के हित में हो तभी केवल अस्थाई शांति कर लेने की स्थिति को छोड़कर कभी भी "मुसलमानों" को अविश्वासियों के साथ तो मित्रता नहीं करना चाहिए। इस सन्दर्भ में कुरान का आदेश है–"हे ईमानवालो! अपनों के सिवा दूसरों को अपना अंतरंग मित्र न बनाओ, वे तुम्हें नुकसान पहुँचाने में कोई कमी नहीं रखेंगें।" (3 : 118, पृ. 203)

यदि सन्धि को तोड़ देना मुसलमानों के सर्वाधिक हित में हो तो **गैर-मुसलमानों** के साथ एक निश्चित अवधि वाली सन्धि को भी इमाम तोड़ सकता है। मुसलमानों के लिए अनुकूल अवसर आ जाने पर भी स्वीकृति शांति की संधि को चलाये रखना और न तोड़ने का अर्थ *"युद्ध विसर्जित कर देना होता है"*। युद्ध करना अल्लाह का एक आदेश है, उसे त्याग देना, अपराध है। यदि मुसलमानों को निष्कासन का सामना करना पड़े तो ***"गैर-मुसलमानों"*** के साथ

शांति कर लेना तब तक के लिए विधि संगत है, जब तक कि मुसलमान उन्हें हरा देने और विनष्ट कर देने के लिए पर्याप्त मात्रा में शक्ति सम्पन्न न हो जाएँ।

लूट के माल का बँटवारा

हिदाया का चौथा अध्याय लूट और लूट के माल के बंटवारे से सम्बन्धित है। यदि *''गैर-मुसलमानों''* के देश का आयुधों की शक्ति से जीता गया है तो इमाम मुजाहिदों के मध्य लूट के माल का उसी प्रकार बटवारा कर सकता है जिस प्रकार पैगम्बर ने अपने अनुयायियों के मध्य खीबीर को बाँटा था। लूट के माल 1/5 भाग इमाम अपने पास रख सकता है शेष मुजाहिदों को बाँट दे जैसा कि पैगम्बर स्वयं किया करते थे। यदि किसी ने *'गैर-मुसलमानों'* के वध में कोई विशेष वीरता का प्रदर्शन किया है तो उसे उसके लूट के सामान्य भाग के अतिरिक्त कुछ पुरस्कार भी दिया जाना चाहिए। इमाम शफी का मानना था है ***''वध हुए व्यक्ति की व्यक्तिगत सम्पत्तियों का वधकर्ता ही अधिकारी है।''*** उसने पैगम्बर के वचनों को उद्धृत किया जिसने कहा था कि ***''जो कोई भी ''गैर-मुसलमानों'' का वध करता है वह ही उसकी सम्पत्ति का अधिकारी है।''*** (मिश्कत खं. 2:236, पृ. 417)

इस संदर्भ में यहाँ यह कह देना उचित ही होगा कि ''गैर-मुसलमानों'' की महिलायें और बच्चे लूट के माल में ही सम्मिलित रहते थे।

युद्ध बन्दियों के साथ इस्लामी व्यवहार

युद्ध में पकड़े गये *''गैर-मुसलमानों''* के प्रति, इमाम तीन प्रकार का व्यवहार कर सकता है। प्रथम विकल्प के अनुसार उन्हें वध कर या करा सकता है क्योंकि स्वयं पैगम्बर युद्ध बन्दियों को वध कर दिया करता था। वह इसलिए भी कि ऐसा करने से शैतानीपन सदैव के लिए समाप्त हो जाती है। इस सम्बन्ध में कुरान कहता है– ***''किसी पैगम्बर के लिए आवश्यक नहीं कि, युद्ध बन्दियों को, जब तक उनका वध न हो जाए, रखे रहे।*** (8:67, पृ. 259) यह धार्मिक कारण की प्रेरणा

थी कि 1999 के कारगिल युद्ध के मध्य भारतीय भूमि पर वायुसेना के स्क्वैड्रन लीडर अजय आहूजा, लैफ्टिनैण्ट सौरभ कालिया और छः अन्य भारतीय सैनिकों को जो पाकिस्तानी सेना के हाथों युद्ध बन्दी थे, पाकिस्तानी सेना ने पूर्ण बर्बरतापूर्वक, टुकड़े-टुकड़े कर वध कर दिया। दूसरे विकल्प के अनुसार इमाम युद्ध बन्दियों को दास बनाकर बेच सकता है ताकि उनके पाप की दवा हो जाए; साथ ही मुसलमान उनसे सेवा के रूप में लाभ कमा सकें। तीसरे उन्हें धिम्मी यानी कि दास बनाया जा सकता है। किन्तु *''गैर-मुसलमानों''* और पंथ को त्याग देने वालों को मुक्ति दे देना पूर्णतः वर्जित है। यदि युद्ध बन्दी इस्लाम स्वीकार कर लें, तो उन्हें वध नहीं किया जाना चाहिए।

इस संदर्भ में यह ध्यान रखना चाहिए कि इस्लामी सिद्धांतों और परम्पराओं के अनुसार केवल शत्रु पक्ष के सैनिक ही नहीं वरन् युद्ध से बाहर रहने वाले असैनिकों, महिलाओं और बच्चों, सभी को, युद्ध बन्दी के रूप में गिरफ्तार कर लिया जाना चाहिए।

इतिहास के पृष्ठों से युद्ध बन्दियों के प्रति इस्लामी दुर्व्यवहार के अनेकों उदाहरण दिये जा सकते हैं किन्तु सबसे अधिकृत तो वह हैं जिन्हें स्वयं पैगम्बर मुहम्मद ने प्रदर्शित किया। उत्तेजक उदाहरणों में से एक है। 'बैन कुरेजिया' नामक यहूदी कबीले की अल्लाह के आदेश के अन्तर्गत मुहम्मद और उसके मुजाहिदों द्वारा गिरफ्तारी का उदाहरणः ***''इनके सशक्त क्षेत्रों से इन्हें पकड़ लो और इनके हृदयों में भय व आंतक भर दो; ताकि इनमें से कुछ का वध कर दो और कुछ को दास बना लो। और अल्लाह ने तुम्हें उनकी सम्पत्तियों, घोड़ों और वस्तुओं का स्वामी बना दिया।''*** (33: 26-27 पृ. 749)

इन दैवी आदेशों के पालन में कुरेज़िया किस्म के कबीले के सभी आठ सौ यहूदी युद्ध बन्दियों से बलात् उनकी कब्रें खुदवाईं गईं और एक-एक कर उनके सिर काटे गये। यह सारी कहानी मुहम्मद के जीवनी लेखक इब्न इशाक, ताबारी और मीखण्ड द्वारा वर्णन की गई है। कत्ले आम सम्पन्न हो जाने के बाद मुहम्मद ने एक सुन्दर यहूदी महिला रेहाना, जिसके पिता, भाई और पति का उसकी आँखों के ही

समाने वध किया गया था, से शादी का प्रस्ताव रखा। चूंकि रेहाना ने पैगम्बर मुहम्मद से शादी करने से मना कर दिया तो उसे बलात् अनेकों रखैलों में से एक रखैल बना दिया गया। बैन कुरैजिया महिलाओं में से अनेकों को मुजाहिदों में बाँट दिय गया, शेष को बेच दिया गया। (मूर. खं. 3, पृ. 276-9)

मुजाहिद को पारितोषिक

धार्मिक आदेशों के अतिरिक्त काम वासना की तुष्टि का आकर्षण एक बहुत बड़ा प्रोत्साहन रहा है जिसके कारण एक मुजाहिद "जिहाद" में लिप्त होने के लिए प्रेरित होता है। अल्लाह ने मुजाहिद को नरसंहार में भाग लेने के लिए अनगिनत इन्द्रियसुखों का पुरस्कार घोषित कर रखा है। यदि वह मर जाता है तो उसकी काम लिप्सा पूर्ति के लिए, अनन्त यौवना, बड़े और गोल उरोजों वाली ***कमसिन उम्र वाली*** बहत्तर हूरियाँ और अट्ठाईस जवान सुन्दर लौण्डे जन्नत में उसकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।

कुरान प्रतिज्ञा करता है कि ***"निश्चय ही (ईश्वर ने) अल्लाह से डरने वालों "विश्वासियों" के लिए एक अति सुरक्षित स्थान (जन्नत) जहाँ बगीचे होंगे, अंगूरों का बाग होगा, उठे हुए उरोजों वाली हूरें होंगी, उनकी प्रतीक्षा में हैं।"*** (78: 31-34, पृ. 1120)। और यदि वह बच जाता है तो लूट के माल में भाग, जिसमें ***"गैर-मुसलमानों"*** की महिलायें सम्मिलित हैं, मिलेगा। लैङ्गिक अपराधों यथा कुमारी सम्भोग, व्यभिचार आदि के लिए कुरान कोड़ों से मारना, और पत्थर मारकर वध का दण्ड नियमित करता है क्योंकि वह ऐसे कामों को, जो वैवाहिक जीवन के प्रसंग में हों, विधि विरूद्ध व अपराधपूर्ण मानता है, किन्तु जब कोई मुसलमान ***'गैर-मुसलमानों'*** के वध व उनकी सम्पत्ति की लूट—"अल्लाह के काम के लिए युद्ध करता है", तो पवित्र कुरान इस नियम में अपवाद कर देता है।

औटास के युद्ध में मुसलमानों ने कुछ महिलाओं को उनके पतियों के साथ गिरफ्तार कर लिया था। पूर्व काल में यद्यपि ***"गैर-मुसलमानों"***,

की विवाहिता महिला के साथ सम्भोग करना एक मुसलमान के लिए वर्जित था; इस अवसर पर पैगम्बर ने प्रगट किया कि अल्लाह ने इस प्रतिबन्ध को ढीला कर दिया था और आज्ञा दे दी थी कि ***युद्ध के समय यदि कोई ऐसी महिला एक सैनिक के लूट के माल के रूप में उसके भाग में आती थी, तो वह उसकी व्यक्तिगत सम्पत्ति हो जाती थी और वह उसके साथ सम्भोग कर सकता था।*** (हदीस : सही तिरमिज़ी खंड 1, पृष्ठ 417)

इन्द्रिय सुख के अतिरिक्त, जिहाद के लिए दूसरा प्रोत्साहन है, लूट का माल। यही कारण है कि पवित्र कुरान, लूट के माल को उचित ठहराता है। "तो जो कुछ "गनीगत" (लूट का माल) तुमने हासिल किया है, उसे 'हलाल' और पाक समझकर खाओ" (8 : 69, पृ. 359)

जिहाद सदैव के लिए

हमारे समय के, इस्लामी धर्म व इतिहास के एक प्रसिद्ध विद्वान, अनवर शेख कहते हैं कि, ***"अरब शक्ति एवम् सामर्थ्य के विस्तार, और इस्लामी धर्म के लिए पहले, अरब में, और बाद में, विश्व भर, में प्रसार के निमित्त ही "जिहाद" का प्रारम्भ हुआ था। मुहम्मद जानता था कि जब तक उसके लोगों को गैर-मुसलमानों के विरूद्ध उनकी व्यक्तिगत सम्पत्तियों के और उनकी महिलाओं के अपहरण, उनके देशों की विजय और उन्हें दास बनाने के लिए एक प्रभावशाली संघर्षशील, शक्ति सम्पन्न सामर्थ्य के रूप में नहीं ढाल दिया जाता तब तक वे विश्व को जीत नहीं सकेंगे, उस पर शासन नहीं कर सकेंगे और अरब का प्रभुत्व नहीं हो सकेगा.....। चूंकि जिहाद गैर-मुसलमानों के विरूद्ध होता है, पैगम्बर ने युद्ध के लिए, दूसरे धर्मों को झूंठा व अल्लाह के विरूद्ध घोषित कर, असीमित अवसर निर्माण कर दिये हैं।"*** ("इस्लाम", अनवर शेख, पृ. 42, 49, 51)

इस्लाम एक ऐसा मत है जिसने सारी मानवता को दो स्थाई, प्रतिद्वन्दी एवं विरोधी वर्गों में बाँट दिया है। प्रथम वे जो अल्लाह और

पैगम्बर में विश्वास रखते हैं, उन्हें (मुसलमान) अल्लाह का दल या मौमिन कहा जाता है, दूसरे वे हैं जिन्हें ***''गैर-मुसलमान''*** कहा जाता है, उन्हें शैतान का दल कहा जाता है (58 : 19-22, पृ. 1018)। प्रथम वर्ग का पवित्रतम कर्तव्य है कि वह ***''गैर-मुसलमानों''*** का वध कर दें और उन्हें दास बना लें। कुरान कहता है, ***''हे मूर्ति पूजकों! हम तुम्हें त्यागते हैं– हमारे और तुम्हारे मध्य घृणा और शत्रुता बनी रहेगी*** (60:4, पृ. 1030)'' और ***''हे पैगम्बर! ''गैर-मुसलमानों'' व मुनाफ़िकों से युद्ध करो, उनसे कठोरता का व्यवहार करो। जहन्नम ही उनका घर होगा।''*** (66:9, पृ. 1055)।

जिहाद करना परम आवश्यक है, इतना आवश्यक कि इस्लाम अपने अनुयायियों को ***''गैर-मुसलमानों''*** के वध, उनकी सम्पत्ति को लूटने और उनकी महिलाओं के अपहरण, शील भंग, आदि अपराधों के लिए खुला प्रोत्साहन एवम् अनुमति ही नहीं देता है वरन् इन जघन्य अमानवीय कृत्यों को सर्वश्रेष्ठ गुण भी प्रतिपादित करता है। इस्लाम इसे 'जिहाद' कहता है जिससे मुजाहिद को निश्चयात्मक रूप में 'जन्नत' प्राप्त हो जाती है। इस प्रकार, किसी के ***''गैर-मुसलमान''*** होने के कारण से ही इस्लाम में आवश्यक हो जाता है कि एक मुज़ाहिद उसका वध कर दे।

अल्लाह ने पहले से ही मानव जाति को दो भागों में बाँट रखा है पहले ''विश्वासी'' और दूसरे ''अविश्वासी''। और उन दोनों में युद्ध की दशा में कोई निश्चित निर्धारित नियम या मर्य्यादा नहीं हैं। क्योंकि अन्ततः युद्ध में अल्लाह में अल्लाह का दल ही जीतेगा। ये ही वे लोग हैं जो जन्नत में औरतों का उपभोग करेंगे, आनन्द लेंगे; और उनके विरोधी निश्चय ही नर्क की आग में जलेंगे। ***गैर-मुसलमानों को समाप्त कर देने के लिए ''जिहाद'' अल्लाह का आदेश ही है। मुसलमानों के लिए ''जिहाद'' एक धार्मिक कर्तव्य है जिसके अभाव में इस्लाम का अस्तित्व ही नहीं है।***

अध्याय–3

भारत में इस्लामी जिहाद-इतिहास के पन्नों से

ऐतिहासिक प्रमाण

बिल डयूरैण्ट अपनी विश्व विख्यात पुस्तक, ''दी स्टोरी ऑफ सिविलिज़ेशन'' में लिखते हैं, *''इतिहास में इस्लाम द्वारा भारत की विजय के इतिहास की कहानी सम्भवतः सर्वाधिक रक्त रंञ्जित है। यह एक अति निराशाजनक कहानी है क्योंकि इसका प्रत्यक्ष आदर्श यही है कि सभ्यता जो इतनी बहुमूल्य व महान है, जिसमें, स्वतंत्रता, संस्कृति एवम् शांति का इतना कोमल मिश्रण है, कि उसे कोई भी बर्बर, विदेशी, आक्रमणकर्ता, अथवा भीतर ही बढ़ जाने वाले आतताई, किसी भी क्षण नष्ट भ्रष्ट व समाप्त कर सकते हैं।''*

भारत में इस्लामी विध्वंस के विषय में एक ऐसा ही चित्र स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में भी देखा जा सकता है–*''उनके ही अपने ऐतिहासिक लेखों के अनुसार जब पहली बार मुसलमान भारत आये तो भारत में हिन्दुओं की जनसंख्या साठ करोड़ थी। इन कथन में न्यून वर्णन का दोष हो सकता है किन्तु अतिशयोक्ति का नहीं; क्योंकि मुसलमानों के अत्याचारों के कारण असंख्यों हिन्दुओं का वध हो गया था।.....किन्तु वे हिन्दू अब आज घटकर बीस करोड़ रह गये हैं।''* (कम्पलीट वर्क्स, खण्ड V पृष्ठ 233)

विश्वभर के मुस्लिम शासक, उनके ही समय के, उनके ही मुस्लिम इतिहास लेखकों के रक्तरञ्जित विवरण, आंतकवाद, अत्याचार, बर्बरता, वध और अंग-भंग के अनुपम कीर्तिमानों वाले हैं। इस्लामी धर्म व्यवस्था और परम्परा में सभी मुस्लिमेतर समाजों के प्रति, हृदय द्रावक, भयानकतम, यातनाएँ, उनकी सम्पत्तियों की लूट, उनकी महिलाओं को भगा लेने व शीलभंग, उनके पूजा स्थलों का विनाश करना प्रत्येक मुसलमान का परम पवित्र कर्म व दायित्व माना गया है। इस प्रकार

हिंसा के कृत्य, अमानवीय, यंत्रणायें, और बर्बरता को स्वयं कुरान ने प्रोत्साहित किया है;

विश्व विख्यात इतिहासकार श्री जदुनाथ सरकार ने अपने प्रसिद्ध उच्चतम कोटि के शोध ग्रंथ, "ए शौर्ट हिस्टरी ऑफ औरंगजेब" में लिखा है, ***"एक धर्म, (इस्लाम) जिसके अनुयायियों को लूट, और वध को धार्मिक कर्तव्य सिखाया जाता हो, मानव विकास का सहगामी नहीं हो सकता।"*** (तृतीय आवृति खण्ड III, पृष्ठ 168) इसी पुस्तक में आगे कहा है, ***"मुस्लिम राज्यव्यवस्था ने विश्वासियों का एक ऐसा वर्ग बनाया जिसका युद्ध के अतिरिक्त अन्य कोई काम नहीं है.....युद्ध ही एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। उनके लिए शांति, बेरोजगारी और पतन है।"*** (वही पृष्ठ 169)।

तीन फरवरी उन्नीस सौ में कैलिफोर्नियाँ के शेक्सपीयर क्लब में स्वामी विवेकानन्द ने, अपने प्रख्यात प्रवचन में मुस्लिम समाज का एक उपयुक्त वर्णन किया था। उन्होंने कहा था, ***"मुसलमान सर्वाधिक असभ्य, बर्बर और घोर पन्थवादी हैं। उनका आदर्श वाक्य है—अल्लाह एक है और मुहम्मद उसका पैगम्बर है।" इसके परे जो कुछ भी है वह केवल बुरा ही नहीं है उसे तुरन्त नष्ट कर दिया जाना चाहिए; एक क्षण की भी सूचना दिये बिना उन सभी मनुष्यों और स्त्रियों को जो उसमें एकदम वैसा ही विश्वास नहीं करते, हर हालत में मार देना चाहिए; प्रत्येक पुस्तक जो उससे भिन्न शिक्षा देती है, जला दी जानी चाहिए, पैसिफिक से लेकर अटलाण्टिक तक, पूरे पाँच सौ वर्षों तक सारे विश्व में रक्तपात होता रहा। यह है मौहम्मदवाद।"*** (स्वामी विवेकानन्द के कम्पलीट वर्क्स, खं IV पृष्ठ 126)।

इतिहासज्ञ कोनार्ड ऐल्स्ट ने अपनी प्रख्यात पुस्तक "निगेशनिज्म इन इण्डिया" के पृष्ठ 33-34 पर लिखा है, ***"बलात मुस्लिम विजयें हिन्दुओं के लिए सोलहवीं सदी तक जीवन मरण के संघर्ष का ही प्रश्न बनी रहीं। सम्पूर्ण शहर जला दिये गये थे, सम्पूर्ण जनसंख्या***

का वध कर दिया गया था। प्रत्येक आक्रामक संघर्ष में हज़ारों का वध कर दिया गया। आक्रान्ता द्वारा वध किये हुए हिन्दुओं के सिरों के वस्तुतः पहाड़ खड़े किये जाते थे। एक हज़ार ईसवी में अफ़गानिस्तान की बलात विजय के बाद वहाँ हिन्दुओं का वध कर पूर्ण सफ़ाया कर दिया गया था; उस स्थान को अभी भी 'हिन्दू-कुश' यानी कि 'हिन्दुओं के कत्ले आम का स्थान' कहा जाता है।''

अतः मुस्लिम शासन, भारत के इतिहास में सर्वाधिक रक्त-रंजित काल रहा है जिसमें मानवता पूर्णतः लुप्त थी। *सारे विश्व भर में कहीं भी, कभी भी मानवता ने जो यातनायें सही हैं, उनमें सर्वाधिक यातनाएँ भारत में केवल हिन्दुओं ने ही सही हैं। सम्पूर्ण मानव जाति को सभ्यता की प्रथम किरण दिखाने वाले समाज के जीवन के लिए इस्लाम ने नितान्त अन्धकार, अशान्ति व यातनायें दीं हैं।*

जब से मोहनदास कर्मचन्द गाँधी और उसके चाटुकार जवाहर लाल नेहरू भारत के क्षितिज पर आये, राजनीतिज्ञों और मार्क्सिस्ट जाति के इतिहासकारों ने इस्लाम के तेजाब जैसे तीखे शासनकाल को पवित्र व समझदारी भरा बना दिया है। सभी शैक्षणिक पाठ्य पुस्तकों एवम् संदर्भ पुस्तकों से जिहाद की सारी बर्बरता भरी घटनाओं को निकाल दिया और दबा दिया गया है। हमारे इतिहास के विकृतीकरण या पंथनिरपेक्षीकरण के उन अनेकों उदाहरणों में से एक है पश्चिम बङ्गाल की वामपन्थी सरकार के शिक्षा विभाग का आदेश सूचना संख्या ऐस वाई ऐल/89/; दिनाङ्क 28.4.1989 है जो इस प्रकार का संदेश देता है–

''मुस्लिम शासन की कोई कैसी भी आलोचना का पाठ्य पुस्तकों में समावेश नहीं होना चाहिए। मुस्लिम आक्रान्ताओं और शासकों द्वारा मन्दिरों के तोड़े जाने का वर्णन समाविष्ट नहीं किया जाना चाहिए।''

जवाहर लाल नेहरू विश्व विद्यालय और अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय के अन्तः वासी लोगों ने केवल मार्क्सिस्टों की स्वभावगत विशिष्टता–प्रोत्साहित ढोंग-भरे उत्साह के अन्तर्गत मुस्लिम शासनकाल

में ''साम्प्रदायिक सौहार्द'' और ''मिश्रित संस्कृति'' के झूंठ को स्थाई बनाने का भरसक प्रयास किया है। रोमिला थापर, बिपिन चन्द्र, इरफान हबीब प्रभृति लोगों, ने, जो आई. सी. एच. आर. (इतिहास शोध की भारतीय काउन्सिल) की आरामदायक शैक्षणिक पदवियों पर अभी हाल तक विराजित थे, नेहरू वंशीय परम्परा वाले राजनीतिज्ञों को प्रसन्न करने के लिए क्या नहीं किया ? इन लोगों ने, अनेकों आतताई, बर्बर व पथभृष्ट शासकों को वास्तव में पन्थ निरपेक्ष व उदार, सम्भवतः हिन्दू राजाओं से भी अधिक परोपकारी व समतावादी घोषित कर दिया है। भारतीय इतिहास के प्रवर, डॉ. रमेश चन्द मजूमदार ने, इतिहास के इस जानबूझकर और राजनीति प्रेरित ढंग से विकृतीकरण के सन्दर्भ में उच्च स्वर से कहा;

''यह बड़े दुःख की बात है कि राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इतिहास का विकृतीकरण मात्र राजनीतिज्ञों तक ही सीमित नहीं रह गया है वरन् यह दोष पेशेवर इतिहासज्ञों में भी व्याप्त हो गया है''...भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के तत्वावधान में लिखित इतिहास में मुस्लिम विध्वंस आक्रान्ताओं द्वारा हिन्दू मन्दिरों के विध्वंस को झुठलाने का प्रयास किया गया और बल देकर कहा गया कि मुस्लिम शासक धर्म के मामलों में बड़े सहिष्णु थे।'' (हिस्ट्री ऐण्ड कल्चर ऑफ इण्डियन पीपुल, खण्ड VII पृष्ठ 12, 13, बी. वी. बी.)

एक बार सीताराम गोयल ने कहा– ***''जिन हिन्दुओं ने मुस्लिम काल में इस्लामी आंतक के आघात सहे उन्होंने कोई इतिहास नहीं लिखा कि उनके साथ क्या हुआ, उन्हें क्या कुछ सहना पड़ा। यह तो मध्यकालीन मुस्लिम इतिहासज्ञ ही थे जिन्होंने पूर्णता व जागरूकता और बड़ी प्रसन्नता के साथ ''गाज़ियों'' द्वारा ''काफिरों'' के साथ बार-बार क्या किया गया सम्बन्धी, सभी प्रलेखों को सम्हाल कर रखा है।''***

भारत में इस्लामी जिहाद का यह संक्षिप्त इतिहास, सुल्तानों और बादशाहों के दरबारी इतिहासज्ञों द्वारा फारसी और अरबी में लिखित

मूल लेखों-जिसे ईलियट और डाउसन ने अंग्रेजी में अनुवाद कर, 'हिस्ट्री आफ इंडिया एज़ टोल्ड बाई इट्स ओन हिस्टोरियंस आठ खंड़ों (1867-77) में प्रकाशित किया है से ही यहां उद्धृत है। कुछ विषयों में विश्व के जाने माने प्रख्यात लेखकों के संदर्भ भी लिए गये हैं।

इस प्रयास का प्रमुख उद्देश्य मुस्लिम शासकों द्वारा हिन्दुओं को दी गईं असंख्य यातनाओं में से कम से कम कुछ को जिन्हें इतिहासज्ञों ने जान बूझकर दबा दिया है, ज्ञात कर लिया जाए और इस प्रकार पूरी तरह अन्धेरे, अज्ञान, और उपेक्षा में लिप्त हिन्दुओं को कुछ तो बता दिया जाए कि उनके पूर्वजों का कैसा दुर्भाग्य था; ताकि वे अपने भविष्य के विषय में कुछ चिन्ता करने लगें। इस पुस्तक में नीचे कुछ सीमित *मात्रा में* ही उन प्रसिद्ध मुस्लिम शासकों, व आक्रमणकर्ताओं के बर्बर क्रियाकलापों के प्रलेखों का वर्णन है। यह प्रयास अपने आप में समुद्र की एक बूंद के ही समान है।

मुस्लिम शासकों के अपने इतिहासकारों द्वारा भारत में जिहाद की एक झांकी

1. मुहम्मद बिन कासिम (712-715 सी.ई)

मुहम्मद बिन कामिस द्वारा भारत के पश्चिमी भागों में चलाये गये जिहाद का विवरण, एक मुस्लिम इतिहासज्ञ अल क्रुफी द्वारा अरबी के ***"चच नामा"*** में लिखा गया है जिसका अंग्रेजी में अनुवाद ईलियट और डाउसन (खं.1 पृ. 131-212) ने किया था।

सिन्ध में जिहाद

सिन्ध के कुछ किलों को जीत लेने के बाद बिन कासिम ने ईराक के गवर्नर, अपने चाचा हज्जाज को लिखा है–***"सिविस्तान और सीसाम के किले पहले ही जीत लिये गये हैं। गैर-मुसलमानों का धर्मान्तरण कर दिया गया है या फिर उनका वध कर दिया गया है। मूर्ति वाले मन्दिरों के स्थान पर मस्जिदें बना दी गई हैं।"*** (चच नामा: ईलियट और डाउसन, खण्ड 1 पृ. 163-164)

जब बिन कासिम ने सिन्ध विजय की, वह जहाँ भी गया कैदियों को अपने साथ ले गया और बहुत से कैदियों को, विशेषकर महिला कैदियों को, उसने अपने देश भेज दिया। राजा दाहिर की दो पुत्रियाँ—परिमल देवी और सूरज देवी—जिन्हें खलीफा के हरम को सम्पन्न करने के लिए हज्जाज को भेजा गया था वे हिन्दू महिलाओं के उस समूह का भाग थीं, जो युद्ध के लूट के माल के पाँचवे भाग के रूप में इस्लामी शाही खजाने के भाग के रूप में भेजा गया था। चच नामा का विवरण इस प्रकार है—***"हज्जाज के बिन कासिम को स्थाई आदेश थे कि हिन्दुओं के प्रति कोई दया नहीं की जाए, उनकी गर्दनें काट दी जाएँ और महिलाओं को और बच्चों को कैदी बना लिया जाए"*** (वही, पृष्ठ 173)।

हज्जाज की ये शर्तें और सूचनाएँ कुरान के आदेशों के पूर्णतः अनुरूप ही थीं। इस विषय में कुरान का आदेश है—***"जब कभी तुम्हें, मूर्ति पूजक मिलें उनका वध कर दो। उन्हें बन्दी बना लो, घेर लो, घात के हर स्थान पर उनकी प्रतीक्षा करो"*** (9:5, पृं. 157) और ***"उनमें से जिस किसी को तुम्हारा हाथ पकड़ ले उन सब को अल्लाह ने तुम्हें लूट के माल के रूप दिया है।"*** (33:58, पृ. 25)

रेवार की विजय के बाद कासिम वहाँ तीन दिन रूका। ***तब उसने छः हजार आदमियों का वध किया। उनके अनुयायी, आश्रित, महिलायें और बच्चे सभी गिरफ्तार कर लिये गये। जब कैदियों की गिनती की गई तो वे तीस हजार व्यक्ति निकले जिनमें तीस सरदारों की पुत्रियाँ थीं, उन्हें हज्जाज के पास भेज दिया गया।*** (वही, पृष्ठ 172-173)

करांची का विनाश

"कासिम की सेनायें जैसे ही देवालयपुर (कराची) के किले में पहुँची, उन्होंने कत्लेआम, शील भंग, व लूटपाट का मदनोत्सव मनाया। यह सब तीन दिन तक चला। सारा किला एक जेल खाना बना दिया गया जहाँ शरण में आये सभी "काफिरों"—सैनिकों

और नागरिकों—का कत्ल और अंग-भंग कर दिया गया। सभी काफिर महिलाओं को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें मुस्लिम योद्धाओं के मध्य बाँट दिया गया। मुख्य मन्दिर को मस्जिद बना दिया गया और उसी सुर्री पर जहाँ भगवाध्वज फहराता था, वहाँ इस्लाम का हरा झंडा फहराने लगा। ''काफिरों'' की तीस हजार औरतों को बग़दाद भेज दिया गया।'' (अल-बिदौरी की फुतुह-उल-बुल्दनः ईलियट और डाउसन, खण्ड 1, पृ. 113-130)

ब्राह्मनाबाद में कत्लेआम और लूट

''मुहम्मद बिन कासिम ने सभी काफ़िर सैनिकों का वध कर दिया और उनके अनुयायियों और आश्रितों को बन्दी बना लिया। सभी बन्दियों को दास बना दिया और प्रत्येक के मूल्य तय कर दिये गये। एक लाख से भी अधिक ''काफिरों'' को दास बनाया गया।'' (चचनामा, : ईलियट और डाउसन, खण्ड 1 पृष्ठ 179)

2. सुबुक्तगीन (977-997 सी.ई.)

लम्बघन का विनाश

सुल्तान ने ''काफ़िर द्वारा इस्लाम अस्वीकार देने, और अपवित्रता से पवित्र करने के लिए, जयपाल की राजधानी पर आक्रमण करने के उद्देश्य से, अपनी नीयत की तलवार तेज़ की। अमीर लम्घन नामक शहर, जो अपनी महान् शक्ति और भरपूर दौलत के लिए विख्यात था, की ओर अग्रसर हुआ। उसने उसे जीत लिया, और निकट के स्थानों, जिनमें काफ़िर बसते थे, में आग लगा दी, मूर्तिधारी मन्दिरों को ध्वंस कर दिया और उनमें इस्लाम स्थापित कर दिया। वह आगे की ओर बढ़ा और उसने दूसरे शहरों को जीता और नीच हिन्दुओं का वध किया; मूर्ति पूजकों का विध्वंस किया और मुसलमानों की महिमा बढ़ाई। समस्त सीमाओं का उल्लंघन कर, हिन्दुओं को घायल करने और कत्ल करने के बाद लूटी हुई सम्पत्ति के मूल्य को गिनते गिनते उसके हाथ ठण्डे पड़ गये। अपनी

बलात विजय को पूरा कर वह लौटा और इस्लाम के लिए प्राप्त विजयों के विवरण की उसने घोषणा की। हर किसी ने विजय के परिणामों के प्रति सहमति दिखाई और आनन्द मनाया और अल्लाह को धन्यवाद दिया।'' (तारीख-ई-यामिनीः महमूद का प्रधानमंत्री अल-उत्बी, ईलियट और डाउसन, खण्ड II, पृष्ठ 22, और तवारीख-ई-सुबुक्त गीन, स्वाजा बैहागी, ईलियट और डाउसन, खण्ड II पृ. 53-155)

3. गज़नी का महमूद (997-1030 सी.ई.)

भारत के विरूद्ध सुल्तान महमूद के जिहाद का वर्णन उसके प्रधानमंत्री अल-उत्बी द्वारा बड़ी सूक्ष्म सूचनाओं के साथ किया गया है (ईलियट और डाउसन, खण्ड II पृ.14-52)

पुरूषपुर (पेशावर) में जिहाद

अल-उत्बी ने लिखा-*''अभी मध्याह्न भी नहीं हुआ था कि मुसलमानों ने ''अल्लाह के शत्रु'', हिन्दुओं के विरूद्ध बदला लिया और उनमें से पन्द्रह हजार को काट कर कालीन की भाँति भूमि पर बिछा दिया ताकि शिकारी जङ्गली जानवर और पक्षी उन्हें अपने भोजन के रूप में खा सकें। अल्लाह ने कृपा कर हमें लूट का इतना माल दिलाया है कि वह गिनती की सभी सीमाओं से परे है यानी कि अनगिनत है जिसमें पाँच लाख, सुन्दर पुरूष और महिलायें हैं। यह 'महान' और 'शोभनीय' कार्य बृहस्पतिवार मुहर्रम की आठवी 392 हिजरी (27.11.1001) को हुआ''* (अल-उत्बी-की तवारीख-ई-यामिनी, ईलियट और डाउसन, खण्ड II, पृष्ठ 27)

नन्दना की लूट

अल-उत्बी ने लिखा-*''जब सुल्तान ने हिन्द को मूर्ति पूजा से मुक्त कर दिया था, और उनके स्थान पर मस्जिदें खड़ी कर दी थीं, उसके बाद उसने उन लोगों को, जिनके पास मूर्तियाँ थीं, दण्ड देने का निश्चय किया। असंख्य व असीमित लूट के माल और दासों के*

साथ सुल्तान लौटा। ये सब इतने अधिक थे कि इनका मूल्य बहुत घट गया और वे बहुत सस्ते हो गये; और अपने मूल निवास स्थान में इन अति सम्माननीय व्यक्तियों को, अपमानित किया गया कि वे मामूली दूकानदारों के दास बना दिये गये। किन्तु यह अल्लाह की कृपा ही है उसका उपकार ही है कि वह अपने पन्थ को सम्मान और गैर-मुसलमानों को अपमान देता है।'' (वही, पृष्ठ 39)

थानेश्वर में कत्लेआम

अल-उत्बी लिपि बद्ध करता है–*''इस कारण से थानेश्वर का सरदार अपने अविश्वास में अल्लाह को अस्वीकृति में-उद्धत था। अतः सुल्तान उसके विरूद्ध अग्रसर हुआ तौकि वह इस्लाम की वास्तविकता का माप दण्ड स्थापित कर सके और मूर्ति पूजा का मूलोच्छेदन कर सके। गैर-मुसलमानों (हिन्दू, बौद्ध आदि) का रक्त इस बहुलता से बहा कि नदी के पानी का रंग परिवर्तित हो गया और लोग उसे पी न सके। यदि रात्रि न हुई होती और प्राण बचाकर भागने वाले हिन्दुओं के भागने के चिह्न भी गायब न हो गये होते तो न जाने कितने और शत्रुओं का वध हो गया होता। अल्लाह की कृपा से विजय प्राप्त हुई जिसने सर्वश्रेष्ठ पन्थ, इस्लाम, की सदैव के लिए स्थापना की''* (वही, पृष्ठ 40-41)

फरिश्ता के मतानुसार, *''मुहम्मद की सेना, गजनी में, दो लाख बन्दी लाई थी जिसके कारण गजनी एक भारतीय शहर की भाँति लगता था क्योंकि हर एक सैनिक अपने साथ अनेकों दास व दासियाँ लाया था।''* (फरिश्ता : ईलियट और डाउसन-खण्ड I, पृष्ठ 28)।

सिरासवा में नर संहार

अल-उत्बी आगे लिखता है–*''सुल्तान ने अपने सैनिकों को तुरन्त आक्रमण करने का आदेश दिया। परिणामस्वरूप अनेकों गैर-मुसलमान बन्दी बना लिये गये और मुसलमानों ने लूट के माल की तब तक कोई चिन्ता नहीं की जब तक उन्होंने अविश्वासियों, (हिन्दुओं) सूर्य व अग्नि के उपासकों का भरपूर वध करके अपनी*

भूख पूरी तरह न बुझा ली। लूट का माल खोजने के लिए अल्लाह के मित्रों ने पूरे तीन दिनों तक वध किये हुए अविश्वासियों (हिन्दुओं) के शवों की तलाशी ली....बन्दी बनाये गये व्यक्तियों की संख्या का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि प्रत्येक दास दो से लेकर दस दिरहम तक में बिका था। बाद में इन्हें गजनी ले जाया गया और बड़ी दूर-दूर के शहरों से व्यापारी इन्हें खरीदने आये थे।......गोरे और काले, धनी और निर्धन, दासता के एक समान बन्धन में, सभी को मिश्रित कर दिया गया।'' (उल-उत्बी : ईलियट और डाउसन, खण्ड II, पृष्ठ 49-50)

अल-बरूनी ने लिखा था—*''महमूद ने भारत की सम्पन्नता को पूरी तरह विध्वस कर दिया। इतना आश्चर्यजनक शोषण व विध्वंस किया था कि हिन्दू धूल के कणों की भाँति चारों ओर बिखर गये थे। उनके बिखरे हुए अवशेष निश्चय ही मुसलमानों की चिरकालीन प्राण लेवा, अधिकतम घृणा को पोषित कर रहे थे।''* (अलबरूनी-तवारीख-ई-हिन्द, अनु. अल्बरूनीज़ इण्डिया, बाई ऐडवर्ड सचाउ)

सोमनाथ की लूट

''सुल्तान ने मन्दिर में विजयपूर्वक प्रवेश किया, शिव लिङ्ग को टुकड़े-टुकड़े कर तोड़ दिया, जितने में समाधान हुआ उतनी सम्पत्ति को आधिपत्य में कर लिया। वह सम्पत्ति अनुमानतः दो करोड़ दिरहम थी। बाद में मन्दिर का पूर्ण विध्वंस कर, चूरा कर, भूमि में मिला दिया, शिव लिङ्ग के टुकड़ों को गजनी ले गया, जिन्हें मस्जिद की सीढ़ियों के लिए प्रयोग किया'' (तारीख-ई-जैम-उल-मासीर, दी स्ट्रगिल फौर ऐम्पायर, पृष्ठ 20-21)

4. मुहम्मद गौरी (1173-1206 सी.ई.)

हसन निज़ाम ने अपने ऐतिहासिक लेख, ''ताज-उल-मासीर'', में मुहम्मद गौरी के व्यक्तित्व और उसके द्वारा भारत के बलात् विजय का विस्तृत वर्णन किया है।

युद्धों की आवश्यकता और लाभ के वर्णन, जिसके बिना मुहम्मद का रेवड़ अधूरा रह जाता है अर्थात् उसका अहङ्कार पूरा नहीं होता, के बाद हसन निज़ाम ने कहा *''कि पन्थ के दायित्वों के निर्वाह के लिए जैसा वीर पुरूष चाहिए वह, सुल्तानों के सुल्तान, अविश्वासियों और बहु-देवता पूजकों के विध्वंसक, मुहम्मद गौरी के शासन में उपलब्ध हुआ; और उसे अल्लाह ने उस समय के राजाओं और शहंशाहों में से छांटा था, ''क्योंकि उसने अपने आपको पन्थ के शत्रुओं के सवंश विनाश के लिए नियुक्त किया था। उनके हृदयों के रक्त से भारत भूमि को इतना भर दिया था, कि क़यामत के दिन तक यात्रियों को नाव में बैठकर उस गाढ़े खून की भरपूर नदी को पार क़रना पड़ेगा। उसने जिस किले पर आक्रमण किया उसे जीत लिया, उसे मिट्टी में मिला दिया और उस (किले) की नींव व खम्मों को हाथियों के पैरों के नीचे रौंद कर भस्मसात कर दिया; और मूर्ति पूजकों को अपनी अच्छी धार वाली तलवार से काट कर नर्क की अग्नि में झोंक दिया; मन्दिरों, मूर्तियों व आकृतियों के स्थान पर मस्जिदें बना दीं।''* (ताज-उल-मासीर : हसन निजामी, (पृ. 204-243, ईलियट और डाउसन, खण्ड II, पृष्ठ 209)

अजमेर में इस्लाम की बलात् स्थापना

हसन निजामी ने लिखा था—*''इस्लाम की सेना पूरी तरह विजयी हुई और एक लाख हिन्दू तेज़ी के साथ नरक की अग्नि में चल गये. ..इस विजय के बाद इस्लाम की सेना आगे अजमेर की ओर चल दी जहाँ हमें लूट में इतना माल व सम्पत्ति मिली कि समुद्र के रहस्यमयी कोषागार और पहाड़ एकाकार हो गये।'' ''जब तक सुल्तान अजमेर में रहा उसने मन्दिरों को विध्वंस किया और उनके स्थानों पर मस्जिदें बनवाईं।''* (वही, पृष्ठ 215)

देहली में मन्दिरों का विध्वंस

हसन निजामी ने आगे लिखा—*''विजेता ने दिल्ली में प्रवेश किया जो धन सम्पत्ति का केन्द्र है और आशीर्वादों की नींव है।*

शहर और उसके आसपास के क्षेत्रों को मन्दिरों, मूर्तियों तथा मूर्ति पूजकों से रहित बना दिया यानी कि सभी का पूर्ण विध्वंस कर दिया। एक अल्लाह के पूजकों (मुसलमानों) ने मन्दिरों के स्थानों पर मस्जिदें खड़ी करवा दीं।'' (वही, पृष्ठ 222)

वाराणसी का विध्वंस

''उस स्थान से आगे शाही सेना बनारस की ओर चली जो भारत की आत्मा है और यहाँ उन्होंने एक हजार मन्दिरों का विध्वंस किया तथा उनकी नीवों के स्थानों पर मस्जिदें बनवा दीं व इस्लामी पंथ के केन्द्र की नींव रखी।" (वही, पृष्ठ 223)

हिन्दुओं के सामूहिक वध के विषय में हसन निजामी लिखता है, *''तलवार की धार से हिन्दुओं को नर्क की आग में झोंक दिया गया। उनके सिरों से आसमान तक ऊंचे तीन बुर्ज बनाये गये, और उनके शवों को जंगली पशुओं और पक्षियों के भोजन के लिए छोड़ दिया गया।''* (वही, पृष्ठ 251)

इस सम्बन्ध में मिन्हाज़-उज़-सिराज़ ने लिखा था– *''दुर्ग रक्षकों में से जो बुद्धिमान एवं कुशाग्र बुद्धि के थे, उन्हें धर्मान्तरण कर मुसलमान बना लिया किन्तु जो अपने पूर्व धर्म पर आरूढ़ रहे, उन्हें कत्ल कर दिया गया।''* (तबाकत-ई-नसीरी-मिन्हाज़, अनु. ईलियट और डाउसन, खण्ड प्ट, पृष्ठ 228)

गुजरात में गाज़ी लोग (1197)

गुज़रात की विजय के विषय में हसन निजामी ने लिखा– *''अधिकांश हिन्दुओं को बन्दी बना लिया गया और लगभग पचास हजार को तलवार द्वारा वध कर नर्क भेज दिया गया, और कटे हुए शव इतने थे कि मैदान और पहाड़ियाँ एकाकार हो गईं। बीस हजार से अधिक हिन्दू, जिनमें अधिकांश महिलायें ही थीं, विजेताओं के हाथ दास बन गये।''* (वही, पृष्ठ 230)

देहली का इस्लामीकरण

''तब सुल्तान देहली वापिस लौटा उसे हिन्दुओं ने अपनी हार के बाद पुनः जीत लिया था। उसके आगमन के बाद किसी मूर्ति युक्त मन्दिर का कोई अवशेष न बचा। अविश्वास के अंधकार के स्थान पर पंथ (इस्लाम) का प्रकाश जगमगाने लगा।'' (वही, पृष्ठ, 238)

5. मुहम्मद बख्तियार खिलजी (1204-1206 सी.ई.)

मुहम्मद बख्तियार खिजली को हिन्दू और बौद्ध शिक्षा केन्द्रों को खोजने और नष्ट करने में विशेष रूचि थी। नालन्दा की लूट के विषय में मिन्हाज़ ने लिखा था–

''बख्तियार बेहर किले के द्वार पर पहुँचा और हिन्दुओं के साथ युद्ध करने लगा। बड़े साहस और अंहकार के साथ द्वार की ओर झपटा और उस स्थान को अपने अधिकार में कर लिया। विजेताओं के हाथ लूट का अपार माल हाथ लगा। निवासियों में अधिकांश नङ्गे-मुड़े हुए सिर वाले ब्राह्मण थे। उनका, सभी का, वध कर दिया गया। वहाँ असंख्य पुस्तकें मिलीं और मुसलमानों ने उन्हें देखा और किसी को बुलाकर जानना चाहा कि उनमें क्या लिखा है तो पाया कि वहाँ तो सभी का वध हो चुका है। उनकी समझ में आया कि वह सारा, एक शिक्षा का स्थान हे तो सारे स्थल को जलाकर भस्म कर दिया।''*(तबाकत-ई-नासिरी : मिन्हाज़-उज-सिराज, पृ. 259-383 ईलियट और डाउसन, खण्ड II पृष्ठ 306)

6. कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 सी.ई.)

हसन निजामी ने अपने ऐतिहासिक लेख ताज-उल-मासीर में लिखा था, *''कुतुबुद्दीन इस्लाम का शीर्ष है और गैर-मुसलमानों का विध्वंसक है.....उसने अपने आपको शत्रुओं–हिन्दुओं–के धर्म के पूर्ण विनाश के लिए नियुक्त किया था, और उसने हिन्दुओं के रक्त से भारत भूमि को भर दिया...उसने मूर्ति पूजकों के सम्पूर्ण समदाय को नर्क की अग्नि में झोंक दिया था....और मन्दिरों और*

मूर्तियों के स्थान पर मस्जिदें बनवायी थीं।'' (ताज-उल-मासीर, हसन निजामी, ईलियट और डाउसन, खण्ड 2, पृष्ठ 209)

''कुतुबुद्दीन ने देहली में जामा मस्जिद बनवाई और जिन मन्दिरों को हाथियों से तुड़वाया था, उनके सोने और पत्थरों को इस मस्जिद में लगाकर इसे सजा दिया।'' (वही, पृष्ठ 222)

इस्लाम का कालिंजर में प्रवेश

''मन्दिरों को तोड़कर, भलाई के आगार, मस्जिदों में रूपान्तरित कर दिया गया और मूर्ति पूजा का नामो निशान मिटा दिया गया. ...पचास हजार व्यक्तियों को घेरकर बन्दी बना लिया गया और हिन्दुओं को तड़ातड़ मार के कारण मैदान काला हो गया।'' (वही, पृष्ठ 231)

''अपनी तलवार से हिन्दुओं का भीषण विध्वंस कर भारत भूमि को पवित्र इस्लामी बना दिया, और मूर्ति पूजा की गन्दगी और बुराई को समाप्त कर दिया, और सम्पूर्ण देश को बहुदेवतावाद और मूर्तिपूजा से मुक्त कर दिया, और अपने शाही उत्साह, निडरता और शक्ति द्वारा किसी भी मन्दिर को खड़ा नहीं रहने दिया।'' (वही, पृष्ठ 216-17)

ग्वालियर में इस्लाम

कुतुबुद्दीन के ग्वालियर में जिहाद के विषय में मिन्हाज़ ने लिखा था–*''पवित्र धर्म युद्ध के लिए अल्लाह के, दैवी, यानी कि कुरान के आदेशानुसार धर्म शत्रु-हिन्दुओं के विरूद्ध उन्होंने (मुसलमानों ने) रक्त की प्यासी तलवारें बाहर निकाल लीं।''* (तबाकत-ई-नासिरी, मिन्हाज़-उज़-सिराज, ईलियट और डाउसन, खण्ड II, पृष्ठ 227)

7 .अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 सी.ई.)

सोमनाथ का विध्वंस

खिलजी दरबार के सामयिक इतिहास लेखक, जिया उद्दीन बरानी ने अपने प्रसिद्ध प्रलेख–तारीख-ई-शाही-में लिखा था, *''सारा गुजरात*

अलाउद्दीन की सेना का शिकार हो गया और सोमनाथ की मूर्ति, जो मुहम्मद गौरी के गज़नी चले जाने के बाद पुनः स्थापित कर दी गई थी, को हटाकर दिल्ली ले आया गया और लोगों के पैरों तले कुचले जाने व अपमानित किये जाने, के लिए डाल दी गई।'' (तारीख-ई-फीरोजशाही : जिया उद्दीन बरानी, पृ. 93-268, ईलियट और डाउसन, खण्ड III, पृष्ठ 163)

अधिकधिक दास, धर्मान्तरित लोग और हिन्दू महिलायें

''अलाउद्दीन को सेनायें सम्पूर्ण देश के एक क्षेत्र के बाद दूसरे क्षेत्रों में गईं और विनाश किया। वे अपने साथ अधिकाधिक दास, धर्मान्तरित लोग और हिन्दू महिलाओं को लाये।'' (वही,)

तलवार स्थापित करती है इस्लाम

बरानी ने अपने उसी प्रलेख में लिखा था, कि अल्लाउद्दीन शेखी में क्या चिल्लाया करता था, *''अल्लाह ने पैगम्बर को आशीर्वाद स्वरूप चार मित्र दिये....मैं उन चारों के सहयोग से अल्लाह के सच्चे पन्थ और कौम को स्थापित कर दूंगा और मेरी तलवार, उस पन्थ को स्वीकार करने के लिए विवश कर देगी।''* (वही, पृष्ठ 169)

गाज़ी लोग पुनः गुजरात गये

अब्दुल्ला वस्साफ ने अपने इतिहास प्रलेख–तारीख-ई-वस्साफ-में लिखा था–*''उन्होंने कम्बायत को घेर लिया और मूर्ति पूजक अपनी निद्रा जैसी लापरवाही की दशा से जगा दिये गये और वे आश्चर्य चकित हो गये। मुसलमानों ने इस्लाम के लिए पूर्ण निर्दयतापूर्वक दायीं और बाईं, चारों ओर–सारी अपवित्र भूमि पर कत्ल करने शुरू कर दिये और रक्त मूसलाधार वर्षा के रूप में बहा।''* (तारीख-ई-वस्साफ अब्दुल्ला वस्साफ, ईलियट और डाउसन, खण्ड III, पृष्ठ 42-43)

लूट और मूर्ति भन्जन

जियाउद्दीन बरानी की भाँति अब्दुला वस्साफ ने भी अलाउद्दीन द्वारा सोमनाथ की लूट का सजीव विवरण लिखा था :

"उन्होंने लगभग बीस हजार सुन्दर व सभ्य हिन्दु महिलाओं को बन्दी बना लिया और दोनों ही लिङ्गों के अनगिनत बच्चों को, जिनकी संख्या लेखनी लिख भी न सके, बन्दी बना लिया.... संक्षेप में मुहम्मद की सेना ने सम्पूर्ण देश का विकराल विनाश किया, निवासियों के जीवनों को नष्ट किया, शहरों को लूटा; और उनके बच्चों को बन्दी बनाया, मूतियाँ तोड़ दी गईं और पैरों के नीचे रौंदी गईं, जिसके कारण बहुत से मन्दिरों को त्याग दिया गया, उनमें सबसे बड़ी मूर्ति सोमनाथ की थी मूर्ति खण्डों को देहली भेज दिया गया और जामा मस्जिद के प्रवेश मार्ग को उनसे ढक दिया, ताकि लोग इस विजय को स्मरण करें और बातचीत करें" (वही, पृष्ठ 44)

"प्रसिद्ध सूफी कवि अमीर खुसरु ने लिखा था–*"हमारे पवित्र सैनिकों की तलवारों के कारण सारा देश एक दावा अग्नि के कारण काँटों रहित जंगल जैसा हो गया है। हमारे सैनिकों की तलवारों के वारों के कारण अविश्वासी हिन्दू भाप की तरह उड़ गये। हिन्दुओं के शक्तिशाली लोगों को पाँवों तले रोंद दिया गया। इस्लाम जीत गया और मूर्ति पूजा हार गई।"* (तारीख-ई-अलाई, ईलियट और डाउसन, खण्ड III, पृष्ठ 67-92)

अल्लाह दक्षिण–भारत में प्रकट हुआ

निजामुद्दीन औलिया, जो दूर-दूर तक देहली के सूफी चिश्ती के रूप में विख्यात है, के कवि शिष्य, अमीर खुसरु, ने अपने प्रलेख-तारीख-ई-अलाई-में अलाउद्दीन द्वारा दक्षिण भारत में जिहाद का बड़े आनन्द के साथ विवरण दिया है–

"उस समय के खलीफा की तलवार की जीभ, जो कि इस्लाम की ज्वाला की भी जीभ है, ने सारे हिन्दुस्तान के सम्पूर्ण अँधेरे को अपने मार्गदर्शन द्वारा प्रकाश दिया है।...दूसरी ओर तोड़े गये सोमनाथ मन्दिर से इतनी धूल उड़ी जिसे समुद भी, भूमि पर नीचें स्थापित नहीं कर सका; दायीं और बायीं ओर, समुद से लेकर समुद

तक हिन्दुओं के देवताओं की अनेकों राजधानियों को, जहाँ जिन्न के समय से ही शैतानी बसती थी, सेना ने जीत लिया और सभी कुछ विध्वंस कर दिया गया है। देवगिरी (अब दौलता बाद) में अपने प्रथम आक्रमण के प्रारम्भ द्वारा, सुल्तान ने, मूर्ति वाले मन्दिरों के विध्वंस द्वारा, गैर-मुसलमानों की सारी अपवित्रताओं को समाप्त कर दिया है। ताकि अल्लाह के कानून के प्रकाश की किरणें, इन अपवित्र देशों को पवित्र व प्रकाशित करें, मस्जिदों में नमाज़ें हों और अल्लाह की प्रशंसा हो।'' (तारीख-ई-अलाई अमीर खुसरु–ईलियट और डाउसन, खण्ड III, पृष्ठ 85)

इस्लामी कानून के अन्तर्गत हिन्दू

बरानी ने अपने प्रलेख में आगे लिखा कि–*''सुल्तान ने काज़ी से पूंछा कि इस्लामी कानून में हिन्दुओं की क्या स्थिति है ? काज़ी ने उत्तर दिया, 'ये भेंट (टैक्स) देने वाले लोग हैं और जब आय अधिकारी इनसे चाँदी मांगें तो इन्हें किसी, कैसे भी प्रश्न के, बिना पूर्ण विनम्रता, व आदर से सोना देना चाहिए। यदि अफसर इनके मुँह में धूल फेंकें तो इन्हें उसे लेने के लिए अपने मुँह खोल देने चाहिए। इस्लाम की महिमा गाना इनका कर्त्तव्य है...अल्लाह इन पर घृणा करता है, इसीलिए वह कहता है, ''इन्हें दास बना कर रखो।'' हिन्दुओं को नींचा दिखाकर रखना एक धार्मिक कर्त्तव्य है क्योंकि हिन्दू पैगम्बर के सबसे बड़े शत्रु हैं (8 : 55) और चूंकि पैगम्बर ने हमें आदेश दिया है कि हम इनका वध करें, इनको लूट लें, इनको बन्दी बना लें, इस्लाम में धर्मान्तिरित कर लें या हत्या कर दें (9 : 5)। इस पर अलाउद्दीन ने कहा, ''अरे काजी! तुम तो बड़े विद्वान आदमी हो कि यह पूरी तरह इस्लामी कानून के अनुसार ही है, कि हिन्दुओं की निकृष्टतम दासता और आज्ञाकारिता के लिए विवश किया जाए......हिन्दू तब तक विनम्र और दास नहीं बनेंगे कि जब तक इन्हें अधिकतम निर्धन न बना जाए।''* (तारीख-ई-फीरोजशाही-बरानी, ईलियट और डाउसन, खण्ड III, पृष्ठ 184-85)

बरानी की तारीख-ई-फिरोजशाही के संदर्भ में मोरलैण्ड ने अपने प्रसिद्ध शोधग्रंथ, ''अग्रेरियन सिस्टम इन मुस्लिम इण्डिया'' में लिखा है—***''सुल्तान ने इस्लामी विद्वानों से उन नियमों और कानूनों को पूंछा, ताकि हिन्दुओं को पीसा जा सके, और सम्पत्ति और अधिकार, जिनके कारण घृणा और विद्रोह होते है, उनके घरों में न रहें।''*** (मोरलैण्ड-दी ऐग्रेरियान सिस्टम इन मुस्लिम इण्डिया एण्ड दी देहली सुल्तनेट, पृष्ठ 24)

''इस सन्दर्भ में बरानी ने बताया कि अलाउद्दीन ने हिन्दुओं की दशा इतनी हीन, पतित और कष्ट पूर्ण बना दी थी, और उन्हें इतनी दयनीय दशा में पहुँचा दिया था, ***''कि हिन्दू महिलाएं और बच्चे मुसलमानों के घर भीख माँगने के लिए विवश थे''*** (तारीख-ई-फीरोज़शाही और फ़तवा-ई-जहानदारी : ईलियट और डाउसन, खण्ड III पृष्ठ 93-268)

बरानी ने आगे लिखा कि ***''घर में काम आने वाली वस्तुएँ जैसे गेहूँ, चावल, घोड़ा और पशु आदि के मूल्य जिस प्रकार निश्चिय किये जाते हैं, अलाउद्दीन ने बाजार में ऐसे ही दासों के मूल्य भी निश्चित कर दिये। एक लड़के का विक्रय मूल्य 20-30 तन्काह तय किया गया था; किन्तु उनमें से अभागों को मात्र 7-8 तन्काह में ही खरीदा जा सकता था। दास लड़कों का उनके सौन्दर्य और कार्यक्षमता के आधार पर वर्गीकरण किया जाता था। काम करने वाली लड़कियों का मानक मूल्य 5-12 तन्काह, अच्छी दिखने वाली लड़की का मूल्य 20-40 तन्काह, और सुन्दर व उच्च्य परिवार की लड़की का मूल्य एक हजार से लेकर दो हजार तन्काह होता था।''*** (ईलियट और डाउसन, खण्ड III, हिस्ट्र ऑफ खिलजीज़, के. एस. लाल, पृष्ठ 313-15)

* सूड़ान के इस्लामी राज्य में अब भी ईसाइओं को दास बनाया जाता है और बेचा जाता है। इसी कारण से 1999 में यू. एन. की जनरल एसैम्बली में ईसाई देशों ने संगठित होकर सूड़ान के यू. एन. एसैम्बली से निष्काषन के लिए प्रस्ताव रखा था।

8. मुहम्मद बिन तुगलक (1326-1351 सी.ई.)

'मार्क्सिस्ट जाति' के भारतीय इतिहासज्ञों ने, मुहम्मद बिन तुगलक का, एक सद्‌भावना युक्त उदार और कुछ विक्षिप्त सुधारक के रूप में बहुत लम्बे काल से प्रशंसा की है। नेहरूवादी प्रतिष्ठान ने तो देहली की एक प्रसिद्ध सड़क का नाम भी उसकी स्मृति में तुगलक रोड रख दिया। किन्तु एक प्रसिद्ध, विश्व भ्रमणकर्ता, अफ्रीकी यात्री इब्न बतूता, जिसने तुगलक के दरबार को देखा था, के शब्दानुसार उसके (तुगलक के) राज्य के कुछ दृश्य निम्नांकित हैं।

सुल्तान से अपनी पहली भेंट के संदर्भ में, बतूता ने लिखा था, ***"5000 दीनार प्रतिवर्ष के मूल्य के गाँव, एक घोड़ा, दस हिन्दू महिला दासियाँ और 5000 दीनार मुझे अनुदान स्वरूप मिले।"*** (ईलियट और डाउसन, खण्ड III , पृष्ठ 586)

हिन्दुओं को दास बनाने के काम के कारण तुगलक इतना बदनाम हो गया था कि उसकी ख्याति दूर-दूर चारों ओर फैल गई थी इतिहास अभिलेखक शिहाबुद्दीन अल-उमरी ने अपने अभिलेख, 'मसालिक-उल-अब्सर में उसके (बिन तुगलक) विषय में इस प्रकार लिखा था– ***"सुल्तान गैर-मुसलमानों पर युद्ध करने के अपने सर्वाधिक उत्साह में कभी भी, कोई, कैसी भी कमी नहीं करता था...हिन्दू बन्दियों की संख्या इतनी अधिक थी कि प्रतिदिन हजारों हिन्दू दास बेच दिये जाते थे।"*** (मसालिक-उल-अब्सार, ईलियट और डाउसन, खण्ड III, पृष्ठ 580)

मुस्लिम हाथों में हिन्दू महिलाओं का उपयोग या तो काम वासना की तृप्ति के लिए था या विक्रय कर धन कमाना था। अल-उमरी आगे और कहता है : ***"दासों के मूल्यों में कमी होने पर भी युवा हिन्दू लड़कियों के मूल्य में 20,000 (बीस हज़ार) तनकाह दिये जाते थे। मैंने इसका कारण पूंछा...ये लड़कियाँ अपने सौन्दर्य, आकर्षण, महिमा और ढंगों से आश्चर्यजनक हैं।"*** (वहीं, पृष्ठ 580-81)

इस संदर्भ में सुल्तान द्वारा हिन्दुओं के दास बनाये जाने का इब्नबतूता का प्रत्यक्ष दर्शी वर्णन इस प्रकार है– ***"सर्वप्रथम युद्ध के***

मध्य बन्दी बनाये गये, काफिर राजाओं की पुत्रियों को अमीरों और महत्वपूर्ण विदेशियों को उपहार में भेंट कर दिया जाता था। इसके पश्चात् अन्य काफ़िरों की पुत्रियों को सुल्तान अपने भाइयों व सम्बन्धियों को दे देता था।'' (तुग़लक कालीन भारत, एस. ए. रिज़वी, भाग 1, पृष्ठ 189)

हिन्दू सिरों की शिकार

अन्य राजाओं की भाँति बिन तुगलक भी शिकार को जाया करता था। किन्तु यह शिकार पूर्णतः असाधारण रूप से भिन्न ही हुआ करती थी। वह शिकार होती थी हिन्दू सिरों की। इस विषय में इब्न बतूता ने लिखा था–*''तब सुल्तान शिकार के अभियान के लिए बारान गया जहाँ उसके आदेशानुसार सारे हिन्दू देश को लूट लिया और विनष्ट कर दिया गया। हिन्दू सिरों को एकत्र कर लाया गया और बारान के किले की चहार दीवारी पर टाँग दिया गया।''* (इब्न बतूता : ईलियट और डाउसन, खण्ड II, पृष्ठ 242)

9. फीरोज़ शाह तुग़लक (1357–1388 सी.ई.)

फीरोज़शाह तुग़लक के शासन का वर्णन चार भिन्न-भिन्न ऐतिहासिक अभिलेखों में लिखा है। वे अभिलेख हैं–(1) तारीख-ई-फ़ीरोज़शाही, जिआउद्दीन बरानी, (2) तारीख-ई-फ़ीरोज़शाही, सिराज अफीफ़, (3) सिरात-ई-फ़ीरोज़शाही, फरिश्ता, (4) फुतूहत-ई-फ़ीरोजशाही, स्वयं फ़ीरोजशाह तुगलक।

हिन्दु महिलाओं का हरम

काम वासना की तृप्ति के लिंए हिन्दू महिलाओं के दासी बनाये जाने के विषय में बारानी ने लिखा था–*''फ़ीरोज़शाह के लिए, व्यापक एवम् विविध वर्गों की भगाई गई हिन्दू महिलाओं के हरम में नियमित रूप में जाना, एकदम अत्याज्य था।''* (तारीख-ई-फ़ीरोज़शाही, जियाउद्दीन बरानी, ईलियट और डाउसन, खण्ड III, पृ. 93-268)

ताजरीयत-अल-असर के अनुसार *"मुस्लिम आक्रमणकर्ताओं द्वारा भगाई हुई हिन्दू महिलाओं के साथ मात्र शील भंग ही नहीं किया जाता था वरन् उनके साथ अनुपम, अवर्णनीय यातनायें भी दी जाती थीं जैसे लाल गर्म लोहे की शलाखों को हिन्दू महिलाओं की योनियों में बलात घुसेड़ देना, उनकी योनियों को सिल देना, और उनके स्तनों को काट देना।"* (इलियट और डाउसन खं, पृ. 24-54)

बङ्गाल में नर संहार

"बङ्गाल में हार के बदले के लिए, फीरोजशाह ने आदेश दिया कि असुरक्षित बंगाली हिन्दुओं का अंग भंग कर वध कर दिया जाए। अंग भंग किये गये प्रत्येक हिन्दू के ऊपर इनाम स्वरूप एक चाँदी का टंका दिया जाता था। हिन्दू मृतकों के सिरों की गिनती की गई जो 1,80,000 (एक लाख अस्सी हज़ार) निकले" (बरानी, वही,)

ज्वालामुखी मंदिर का विनाश

फरिश्ता ने आगे लिखा– *"सुल्तान ने ज्वालामुखी मन्दिर की मूर्तियों को तोड़ दिया, उसके टुकड़ों को वध की गई गउओं के मांस में मिला दिया और मिश्रण को तोबड़ों में भरवा कर ब्राह्मणों की गर्दनों में बँधवा दिया, और प्रमुख मूर्ति को मदीना भेज दिया।"* (वहीं, पृ.)

उड़ीसा का विध्वंस

सिरात-ई-फीरोज़शाही में फरिश्ता ने लिखा– *"फ़ीरोज़शाह, पुरी के जगन्नाथ मन्दिर में घुसा, मूर्ति को उखाड़ा और अपमानकारक स्थान पर रखने के लिए देहली ले गया। पुरी के पश्चात् फीरोजशाह समुद्रतट के निकट चिल्का झील की ओर गया। सुल्तान ने टापू को अविश्वासियों के वध द्वारा उत्पन्न रक्त से रक्त का हौज बना दिया। हिन्दू महिलाओं को काम वासना की तृप्ति के लिए भगा ले*

जाया गया, गर्भिणी महिलाओं का शील भंग किया गया, उनकी आँतें निकाल ली गईं और जंजीरों में बाँध दिया गया।'' (सीरात-ई-फीरोजशाही, फरिश्ता, ईलियट और डाउसन, खण्ड III)

* इस संदर्भ में यह लिखने योग्य है कि एक अन्य महत्वपूर्ण सड़क और देहली के क्रिकेट स्टेडियम का नाम इस गाज़ी फ़ीरोज़शाह के नाम पर है।

10. तिमूर (1398-1399 सी.ई.)

तिमूर ने अपनी जीवनी मुलफुजात-ई-तिमूरी (तुजुख-ई-तिमूरी, पृ. 389-477) में अपनी महत्वाकांक्षाओं को बलपूर्वक लिखा- *''लगभग उसी समय मेरे मन में एक अभिलाषा आयी कि मैं गैर-मुसलमानों के विरूद्ध एक अभियान प्रारम्भ करूं और 'गाज़ी' हो जाऊ है क्योंकि मैंने सुना है कि यदि वह स्वयं मर जाता है तो 'शहीद' हो जाता है (सूरा 3 आयत 169, 170, 171)। इसी कारण मैंने यह निश्चय किया किन्तु मैं अपने मन में अनिश्चित व अनिर्णीत था कि मैं चीन के अविश्वासियों की ओर अभियान प्रारम्भ करूँ अथवा भारत के अविश्वासियों और मूर्ति पूजकों व बहु ईश्वर वादियों की ओर। इस उद्देश्य के लिए मैंने कुरान से शकुन खोजना चाहा और जो 'आयत निकली वह इस प्रकार थी, 'ए! पैगम्बर अविश्वासियों और विश्वासहीनों के विरूद्ध युद्ध करो, और उनके प्रति कठोरता का व्यवहार करो।* (सूरा 66 आयत 9)। *''मेरे महान अफसरों ने बताया कि हिन्दुस्तान के निवासी, अविश्वासी और विश्वासहीन हैं। सर्वशक्तिमान अल्लाह के आदेशानुसार आज्ञापालन करते हुए मैंने उनके विरूद्ध अभियान की आज्ञा दे दी।''* (तिमूर की जीवनी-मुलफुजात-ई-तिमूर : ईलियट और डाउसन, खण्ड III, पृष्ठ 394-95)

उलेमा और सूफ़ियों द्वारा जिहाद का अनुमोदन

''इस्लाम के विद्वान लोग मेरे सामने आये और अविश्वासियों तथा बहुदेवत्ववादियों के विरूद्ध संघर्ष के विषय में वार्तालाप

प्रारम्भ हुआ; उन्होंने अपनी सम्मति दी कि इस्लाम के सुल्तान का और उन सभी लोगों का, जो मानते हैं, "कि अल्लाह के सिवाय अन्य कोई ईश्वर नहीं है और मुहम्मद अल्लाह का पैगम्बर है", यह परम् कर्तव्य है कि वे इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए युद्ध करें ताकि उनका पंथ सुरक्षित रह सके, और उनकी विधि व्यवस्था सशक्त रही आवे और वे अधिकाधिक परिश्रम कर अपने पन्थ के शत्रुओं का दमन कर सकें। विद्वान लोगों के ये आनन्ददायक शब्द जैसे ही सरदारों के कानों में पहुँचे उनके हृदय, हिन्दुस्तान में धर्म युद्ध करने के लिए, स्थिर हो गये और अपने घुटनों पर झुक कर, उन्होंने इस विजय वाले अध्याय को दुहराया।" (वही, पृष्ठ 397)

भाटनिर में नरसंहार

तिमूर की यह जीवनी, भाटनिर (जो आजकल राजस्थान के गङ्गानगर जिले का हनुमान गढ़ है) को मूर्ति पूजा से सुरक्षित करने के विषय में एक अति विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती है।

"इस्लाम के योद्धाओं ने हिन्दुओं पर चारों ओर से आक्रमण कर दिया और तब तक युद्ध करते रहे, जब तक अल्लाह की कृपा से मेरे सैनिकों के प्रयासों को विजय की किरण नहीं दिख गई। बहुत थोड़े समय में ही किले के सभी व्यक्ति तलवार द्वारा काट दिये गये और समय की बहुत छोटी अवधि में ही दस हज़ार हिन्दुओं के सिर काट दिये गये। अविश्वासियों के रक्त से इस्लाम की तलवार अच्छी तरह धुल गई और सारा खज़ाना सैनिकों की लूट का माल हो गया।" (वही, पृष्ठ 421-22)

सिरसा में नरसंहार

"तिमूर ने आगे लिखा–*"जब मैंने सरस्वती नदी के विषय में पूछा, तो मुझे बताया गया कि उस स्थान के लोग इस्लाम के पंथ से अनभिज्ञ हैं। मैंने अपनी सैनिक टुकड़ी उनका पीछा करने भेजी और एक महान युद्ध हुआ। सभी हिन्दुओं का वध कर दिया गया उनकी महिलाओं और बच्चों को बन्दी बना लिया गया और उनकी*

सम्पत्तियाँ व वस्तुएँ मुसलमानों के लिए लूट का माल हो गईं। सैनिक अपने साथ कई हजार हिन्दू महिलाओं और बच्चों को साथ ले वापिस लौट आये। इन हिन्दू महिलाओं और बच्चों को मुसलमान बना लिया गया।'' (वही, पृष्ठ 427-28)

जाटों का नर संहार

तिमूर ने अपनी जीवनी में लिखा था–*''मेरे ध्यान में लाया गया था कि ये उत्पाती जांट चींटी की भाँति असंख्य हैं। हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने का मेरा महान् उद्देश्य अविश्वासी हिन्दुओं के विरूद्ध धर्म युद्ध करना था। मुझे लगने लगा कि इन जाटों का पराभव (वध) कर देना मेरे लिए आवश्यक है। मैं जङ्गलों और बीहड़ों में घुस गया, और दैत्याकार, दो हजार जाटों का मैंने वध कर दिया.....उसी दिन सैय्यदों, विश्वासियों, का एक दल, जो वहीं निकट ही रहता था, बड़ी विनम्रता व शालीनता से मुझसे भेंट करने आया और उनका बड़ी शान से स्वागत किया गया। मैंने उनके सरदार का बड़े सम्मान से स्वागत किया।''* (वही, पृष्ठ 429)

सैक्यूलरिस्टों, जो अपने हिन्दू मुस्लिम भाई-भाई के उन्माद युक्त सिद्धांत से बुरी तरह पगलाये रहते हैं, के लिए यह पाठ बहुत अधिक महत्व का है। **यहाँ सैय्यद मुसलमान, अपने पड़ौसी जाटों के साथ न तो तनिक भी सहयोगी हुए, और न उन्होंने उनके साथ कोई कैसी भी सहानुभूति ही दिखाई; वरन् अपने पन्थ के आक्रमणकारियों, द्वारा जाटों के नरसंहार पर खूब प्रसन्न हुए।** मुसलमान सैय्यदों का यह व्यवहार सभ्यता के माप दण्डों से बेमेल भले ही हो किन्तु वह कुरान के आदेशों के पूर्णरूपेण, अनुकूल ही था यथा–

''विश्वासियों! मुसलमानों को छोड़ गैर-मुसलमानों को अपना मित्र मत बनाओ। उन्हें मित्रता के लिए मत चुनो। क्या तुम अल्लाह को अपने विरूद्ध एक सच्चा साक्ष्य प्रस्तुत करोगे? (4:144, पृ.247)

लोनी में चुन चुन कर कत्लेआम

जमुना के उस पार देहली के निकट शहर, लोनी, की बलात विजय का वर्णन करते हुए तिमूर लिखता है कि उसने किस प्रकार मुसलमानों की जान बचाते हुए, चुन-चुन कर हिन्दुओं का वध किया था।

"उन्तीस तारीख को मैं पुनः अग्रसर हुआ और जमुना नदी पर पहुँच गया। नदी के दूसरे किनारे पर लोनी का दुर्ग था दुर्ग को तुरन्त विजय कर लेने का मैंने निर्णय किया। अनेकों राजपूतों ने अपनी पत्नियों और बच्चों को घरों में बन्द कर आग लगा दी; और तब वे युद्ध क्षेत्र में आ गये, शैतान की भाँति लड़े, और अन्त में मार दिये गये। दुर्ग रक्षक दल के अन्य लोग भी लड़े, और कत्ल कर दिये गये और बहुत से बन्दी बना लिये गये। दूसरे दिन मैंने आदेश दिया कि मुसलमान व बन्दियों को पृथक् कर दिया जाए, किन्तु गैर-मुसलमानों को धर्मान्तरणकारी तलवार द्वारा कत्ल कर दिया जाए। मैंने यह आदेश भी दिया कि मुसलमानों के घरों को सुरक्षित रखा जाए, किन्तु अन्य सभी घरों को लूट लिया जाए, और नष्ट कर दिया जाए।" (मुलफ़ुज़ात-ई-तिमूरी, ईलियट और डाउसन, खण्ड III, पृष्ठ 432-33)

एक लाख असहाय हिन्दुओं का एक ही दिन में कत्ल

हिन्दुओं के वध एवम् रक्तपात में उसे कितना आनन्द आता था, इसके विषय में तिमूर ने लिखा था– *"अमीर जहानशाह और अमीर सुलेमान शाह और अन्य अनुभवी अमीरों ने मेरे ध्यान में लाया, कि जब से हम हिन्दुस्तान में घुसे हैं तब से अब तक हमने 100000 हिन्दू बन्दी बनाये हैं और वे सभी मेरे डेरे में हैं। मैंने बन्दियों के विषय में उनका परामर्श माँगा, और उन्होंने कहा, कि बड़े युद्ध के दिन इन बन्दियों को लूट के सामान के साथ नहीं छोड़ा जा सकता; और इस्लामी युद्ध नीति व नियमों के सर्वथा विरूद्ध ही होगा कि इन बन्दियों को मुक्त कर दिया जाए। वास्तव में उन्हें तलवार द्वारा*

कत्ल कर देने के अतिरिक्त कोई विकल्प ही नहीं था। जैसे ही मैंने इन शब्दों को सुना, मैंने पाया कि वे इस्लामी युद्ध के नियमों (8:67, पृ. 359) के अनुरूप ही थे, और मैंने सीधे ही सभी डेरों में आदेश दे दिया, कि प्रत्येक व्यक्ति जिसके पास युद्ध बन्दी हैं, उनका वध कर दें। इस्लाम के गाज़ियों को जैसे ही आदेशों का ज्ञान हुआ, उन्होंने बन्दियों को मौत के घाट उतार दिया। 100000 'अविश्वासी', 'अपवित्र मूर्ति पूजक', (हिन्दू) उस दिन कत्ल कर दिये गये। मौलाना नसीरुद्ददीन उमर, एक परामर्श दाता और विद्वान, जिसने अपने सारे जीवन में जहाँ एक चिड़िया भी नहीं मारी थी, मेरे आदेशों के पालन में, उसने अपने पन्द्रह हिन्दू बन्दियों का वध कर दिया।' (वही, पृष्ठ 435-36)।

दिल्ली में चुन चुनकर कत्ल

"महीने की छः तारीख को मैंने देहली को लूट कर, ध्वंस कर दिया। हिन्दुओं ने अपने ही हाथों अपने घरों में आग लगा दी, और अपनी पत्नियों और बच्चों को उन घरों के भीतर जला दिया, और युद्ध में दैत्यों की भाँति कूद पड़े, और मार दिये गये.....उस दिन बृहस्पतिवार को और शुक्रवार की पूरी रात्रि को लगभग पन्द्रह हज़ार तुर्क, हिन्दुओं का वध करने व लूटने के विनाश कार्य में लिप्त थे....अगले दिन शनिवार को भी पूरे दिन उसी प्रकार का क्रिया कलाप चलता रहा और बर्बादी व लूट इतनी अधिक थी कि प्रत्येक व्यक्ति के भाग में पचास से लेकर सौ तक बन्दी-पुरूष, महिला व बच्चे—आये। कोई व्यक्ति ऐसा नहीं था जिसके पास बीस बन्दी न हों। और दूसरे प्रकार की लूट भी माणिक, मोती, हीरों के रूप में अथाह व असीमित थी। औरतें तो इतनी अधिक मात्रा में उपलब्ध थीं, कि गणना से भी परे थीं। उलेमाओं और दूसरे मुसलमानों को छोड़कर अन्य सभी का वध कर दिया गया और सारे शहर का विध्वंस कर दिया।" (वहीं, पृष्ठ 445-46)

मौहम्मद हबीब और ए. के. निजामी ने, "ए कम्प्रीहैन्सिव हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, खण्ड 5 "दी सुल्तानेट्स", (पृष्ठ 122) में बन्दी व वध

हुए हिन्दू पुरूष-महिला व बच्चों सम्बन्धी इस लेख में से 'हिन्दू' शब्द को जानबूझ कर हटा दिया गया है। यह है उदाहरण हमारे सैक्यूलरवादी इतिहासज्ञों की बौद्धिक ईमानदारी का!

यमुना के किनारे-किनारे जिहाद

तिमूर ने लिखा था–*"जुमादा-ई-अव्वाल के पहले दिन मैंने अपनी सेना की बाईं ओर के भाग, को अमीर जहाँशाह के नेतृत्व में सौंप दिया और आदेश दे दिया कि यमुना के किनारे-किनारे ऊपर की ओर अग्रसर हुआ जाए और मार्ग में आने वाले प्रत्येक दुर्ग, शहर व गाँव को विजय किया जाए और देश के सभी गैर-मुसलमानों को तलवार से काट दिया जाए....मेरे वीर अनुयायियों ने आज्ञा पालन किया और शत्रुओं का पीछा किया और उनमें बहुतों को मार दिया और उनकी पत्नियों और बच्चों को बन्दी बना दिया। जब अल्लाह की कृपा से मैंने विजय प्राप्त कर ली तो मैं अपने घोड़े से उतर आया और अल्लाह को धन्यवाद देने के लिए भूमि पर लेट गया और साष्टाङ्ग प्रणाम किया।"* (वही, पृष्ठ 451-54)

हरिद्वार के कुम्भ मेले में रक्तपात

तिमूर ने आगे लिखा था–*"मेरे वीर आदमियों ने बड़े साहस और चुनौती का प्रदर्शन किया; उन्होंने अपनी तलवारों को सैनिक ध्वज बनाया और गङ्गा स्नान के पर्व के अवसर पर हिन्दुओं के वध में परिश्रम किया, उन्होंने अविश्वासियों में से बहुतों को वध कर दिया और उनका पीछा किया जो पर्वतों की ओर भागे। उनमें से इतनों का वध किया गया कि उनका रक्त पर्वतों और मैदानों में बहने लगा। इस प्रकार सभी को नर्क की अग्नि में झोंक दिया गया।"* (वही, पृष्ठ 459)

शिवालिक में इस्लाम का प्रवेश

शिवालिक पहाड़ी में लूट पाट व नर संहार के विषय में अपनी जीवनी में तिमूर ने लिखा–*"जुमादा-ई-अव्वाल के दसवें दिन*

शिवालिक के अविश्वासियों से युद्ध करने व उन का वध करने के निश्चय के साथ मैं अपने घोड़े पर चढ़ा और अपनी तलवार खींच ली। वीर-युद्धाओं ने, वध किए हुए हिन्दुओं के, अनेकों ढेर बना दिये। पहाड़ी की सभी महिलायें व बच्चे बन्दी बना लिये गये। अगले दिन मैंने यमुना नदी पार कर ली और शिवालिक पहाड़ी की दूसरी ओर डेरा लगा दिया। मेरे विजयी सैनिकों ने अपनी तलवारों को लहराते हुए पीछा किया और भगोड़ों के समूहों का वध किया और उन्हें नर्क को भेज दिया। जब सैनिकों ने मूर्ति पूजकों का वध करना त्यागा तो उन्हें व्यापक लूट में असीमित वस्तुएं और बहुमूल्य पदार्थ, बन्दी, स्त्री पुरुष और पशु प्राप्त हुए। उनमें से किसी के पास एक या दो सौ गायों और दस या बीस दासों से कम न थे।'' (वही, पृष्ठ 462-464)

काङ्गड़ा में जिहाद

''शिवालिक के उस पार घाटी में मैं जैसे ही घुसा तो हिन्दुओं के एक विशाल शहर, नगर कोट, के विषय में मुझे सूचना दी गई, तो तुरन्त ही मैंने अमीर जहाँ शाह को शत्रु पर आक्रमण करने के लिए आदेश दिया। इस्लाम के पवित्र योद्धाओं ने हाथों में तलवारें लेकर भगोड़ों के मध्य घुस जाने का साहस दिखाया और हिन्दुओं की लाशों के ढेर लगा दिये। बहुतांश संख्या में, वध कर दिये गये, और विजेताओं के हाथों में एक महान लूट के रूप में विशाल संख्या में, वस्तुएं, बहु मूल्य पदार्थ व बन्दी आये।'' (वही, पृष्ठ 465-66)

मुलमानों के लिए लूट का माल माँ के दूध के समान

हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहक तत्वों, के संदर्भ में तिमूर ने अपनी जीवनी में लिखा था– *''हिन्दुस्तान आने और इतना सारा परिश्रम करने तथा कष्ट उठाने का हेतु, दो उद्देश्यों की सिद्धि थी। प्रथम इस्लाम के शत्रुओं, अविश्वासियों (हिन्दुओं) से युद्ध करना; और इस धर्म युद्ध के द्वारा भावी जीवन के लिए किसी*

इनाम के लिए अधिकार प्राप्त कर लेना था। दूसरा एक सांसारिक उद्देश्य भी था; कि इस्लाम की सेना, अविश्वासियों की कुछ गणना योग्य धन सम्पत्तियों, और बहुमूल्य पदार्थों को लूट सके। मुसलमानों के लिए युद्ध में लूट का माल उतना ही विधि संगत है जितना उनके लिए माँ का दूध। मुसलमान, जो दीन के लिए युद्ध करते हैं उनके लिए लूट का माल, जो इस्लामी विधि के अनुसार सर्वथा उचित व मान्य है, उसका उपभोग महिमा कारक है, बड़प्पन का स्रोत है। (वही, पृष्ठ-461 कुरान सूरा 49 आयत 15, सूरा 4 आयत 100)

11. बाबर (1519-1530 सी.ई.)

भारत में इस्लामी आक्रमणकर्ताओं के मुगल साम्राज्य के संस्थापक, बाबर, ने 'मुजाहिद' की पदवी उस समय प्राप्त की जब उसने उत्तमपश्चिम सीमा प्रान्त के, एक छोटे से राज्य, बिजौर, में अपनी भारत विजय के प्रारम्भिक काल 1519 में आक्रमण किया। उसने अपनी जीवनी, बाबरनामा, में इस घटना का बड़े आनन्द के साथ वर्णन किया था।

हिन्दू शवों के सिरों से बाबर द्वारा बनवाई गई मीनारें

"चूंकि बिजौरीवासी इस्लाम के शत्रु थे, और उनके मध्य विधर्मी और विरोधी रीति रिवाज व परम्परायें प्रचलित थीं, उनका सर्व समावेशी, नर संहार किया गया। उनका पत्नियों और बच्चों को बन्दी बना लिया गया। एक अनुमान के अनुसार तीन हजार व्यक्ति मौत के घाट उतारे गये। दुर्ग को विजयकर, हमने उसमें प्रवेश किया और उसका निरीक्षण किया। दीवालों के सहारे, घरों में, गलियों में, गलियारों में अनगित संख्या में हिन्दू मृतक पड़े हुए थे। आने जाने वालों सभी को शवों के ऊपर से ही जाना पड़ रहा था.....मुहर्रम के नौवें दिन मैंने आदेश दिया कि मैदान में हिन्दू मृतक शिरों की एक मीनार बनाई जाए।" (बाबरनामा अनु. ए. एस. बैवरिज, पृष्ठ 370-71)

हिन्दुओं के शिरों से शिकार खेलने की अपने पूर्वज तिमूर की अभिरूचि में बाबर भागीदार था। दोनों ही गाज़ियों को, कटे हुए हिन्दू शिरों की मीनारें खड़ी करने की एक असाधारण लगन थी।

बाबर गाज़ी हो गया

जवाहर लाल नेहरू से लेकर, जवाहर लाल नेहरू विश्व विद्यालय एवम् अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय के सैक्यूलरवादियों तक, सभी ने बाबर को एक दक्ष, चतुर व भावुक कवि चित्रित किया है। हमें लगा कि बाबर के काव्य का एक नमूना प्रस्तुत कर देना उपयोगी होगा। निम्नलिखित, उद्धृत, काव्य पूर्णतः स्पष्ट है, उसका अर्थ करना निरर्थक है, क्योंकि उसका पाठ स्वयं ही सर्वाधिक स्पष्ट है। यथा–

''इस्लाम के निमित्त मैं जङ्गलों में भटका।
मूर्ति पूजकों व हिन्दुओं के विरूद्ध प्रस्तुत हुआ।
शहीद की मृत्यु स्वयं पाने का निश्चय किया,
अल्लाह का धन्यवाद कि मैं गाज़ी हो गया।''

(वही, पृष्ठ 574–75)

बाबरी मस्जिद

1528–29 में, बाबर के आदेशानुसार, मुगल सैन्य सञ्चालक, मीर बकी ने, भगवान राम की जन्मभूमि की स्मृति में बने, अयोध्या मन्दिर, का विध्वंस कर दिया और उसके स्थान पर एक मस्जिद बनवा दी।* (वही, पृष्ठ 656; मुस्लिम स्टेट इन इण्डिया, के. एस. लाल)

*बाबरी मस्जिद पर एक शिला लेख : ''शहंशाह बाबर के आदेशानुसार, उदार हृदय मीर बकी ने फरिश्तों के उतरने का यह स्थान बनवाया।''

गुरु नानक देव द्वारा बाबर की निन्दा

भारत के महानतम सन्तों में से एक सन्त गुरु नानक देव बाबर के समकालीन थे। हिन्दुओं की अवर्णनीय यातनाओं का ध्यान कर गुरु नानक देव इतने द्रवित हुए कि उन्होंने संसार के उत्पत्ति कर्ता, परमपिता परमेश्वर से, हिन्दुओं की घोर पीड़ा से द्रवित हो, प्रश्न किया कि **''हे प्रभो ! आप ऐसे नर संहार, ऐसी यातनाओं और पीड़ाओं को**

किस प्रकार सहन कर पाते हैं।'' उन्होंने कहा–*''ईश्वर ने अपने पंखों के नीचे खुरासन लगा रखा है यानी कि समधिस्थ हो गये हैं और भारत को बाबर के अत्याचारों के लिए खुला छोड़ दिया है।''*

''हे जीवन दाता! आप अपने ऊपर कोई कैसा भी दोष नहीं लपेटते अर्थात् सदैव ही निर्लिप्त रहे आते हो। क्या यह मृत्यु ही थी जो मुगल के रूप में हमसे युद्ध करने आई ? जब इतना भीषण नर संहार हो रहा था, इतनी भीषण कराहें निकल रही थीं, क्या तुम्हें पीड़ा नहीं हुई ? (गुरु नानक, पृष्ठ 125)

कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया नामक ग्रन्थ में जदुनाथ सरकार ने लिखा था–*''अपने समकालीन मुसलमानों की, गुरु नानक ने भर्त्सना की थी और उन्हें नींच, पतित व पथ भृष्ट कहा था।''* (खण्ड 4, अध्याय VIII, पृष्ठ 244)

विजयानगरम् का विनाश (1565)

इस्लामी आंतकवाद व गुण्डगर्दी के इतिहास में दक्षिण भारत में विजयानगरम् राजधानी का विध्वंस सम्भवतः सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थानों के विध्वंसों में से एक है। काम्पिल के राजा के पुत्रों, हरिहर और बुक्का, ने इस राजधानी को स्थापित किया था जिसे मुहम्मद बिन तुगलक ने धर्मान्तरित कर इस्लामी बना दिया था। बाद में स्वामी विद्यारण्य के प्रोत्साहन व मार्ग दर्शन में उन्होंने तुग़लक राज्य को, उलट दिया, दरबार वालों को समाप्त कर दिया और हिन्दू धर्म में पुनः धर्मान्तरित कर दिया और दक्षिण में मुस्लिम शक्ति व साम्राज्य के विस्तार को रोकने के लिए, विजया नगर राज्य की स्थापना की। यह राजधानी अपने समय की विश्व भर में सर्वाधिक सम्पन्न राजधानियों में से एक थी–जो स्वयं में सौन्दर्यकला का एक आश्चर्य ही है। इस हिन्दू राज्य में धन, सम्पदा, संस्कृति असाधारण रूप से प्रजातांत्रिक और उदार मानव समाज, का प्रभु का आर्शीवाद था। यह हिन्दू समाज, यूनाइटेड नेशन्स द्वारा विश्व व्यापी मानवाधिकारों की घोषणा के चार सौ वर्ष पहले से ही मानव मूल्यों व मानवाधिकारों का आदर और

पोषण करता था। सम सामयिक भारत में भ्रमणार्थ आये यात्री, दुआर्ते बारबोसा के शब्दों में :

"विजया नगर के राजाओं ने आज्ञा दे रखी थी कि कोई भी व्यक्ति, कभी भी, कहीं भी आये या जाये; और बिना किसी भी रुकावट, के, स्वेच्छानुसार अपने मतानुसार अपना जीवन यापन करे। उसे यह बताने की आवश्यकता नहीं थी कि वह ईसाई, यहूदी, मूर वा विधर्मी है। वह जो भी है सुख से स्वेच्छानुसार रहे। सर्वत्र सभी द्वारा समता, न्याय और आत्मीयता ही देखने को थी।" (दुआर्ते बारबोसा की पुस्तक, खण्ड I, पृष्ठ 202)

उदाहरणार्थ, *"(1419-1449) में देव राय ने आदेश निकाला कि मुसलमानों को सेवाओं में रखा जाए, उन्हें सम्पत्तियाँ आवंटत कीं, और विजया नगर में एक मस्जिद बनवाई। राम राजा के शासन काल में जब एक बार मुसलमानों ने तुर्क वाड़ा क्षेत्र की एक मस्जिद में एक गाय का वध किया और राजा के भाई तिरुमल के ही नेतृत्व में, उत्तेजित अफसर और सरदारों ने, राजा से शिकायत की, तो भी राजा अपने निश्चय से डिगे नहीं, और प्रतिवेदन कर्ताओं के सामने झुके नहीं, और उत्तर दिया कि वह किसी की धार्मिक मान्यताओं में हस्तक्षेप नहीं करेंगा, और घोषित किया कि वह अपने सैनिकों के शरीरों का स्वामी है, उनकी आत्माओं का स्वामी नहीं।"* (रौयल एशियाटिक सोसाइटी की बम्बई शाखा का जर्नल, खण्ड XXII, पृष्ठ 28)

इस्लाम को अविश्वासियों को धोखा देने के लिए अनुमति

एक से अधिक युद्धों में भी उसे हराकर राम राजा ने विजयानगर के निकट के मुस्लिम शासक, सुल्तान अली आदिल शाह के साथ शांति स्थापित कर ली। किन्तु सुल्तान ने मूर्ति पूजकों व अविश्वासियों (गैर-मुसलमानों) के साथ धोखाधड़ी कर देने सम्बन्धी कुरानी (3 : 118) आज्ञा का पालन करते हुए, दक्षिण भारत की मुस्लिम रियासतों का एक संघ बनाकर, इस वस्तुतः पन्थ निरपेक्ष राज्य के विरूद्ध

जिहाद कर दिया। किन्तु कहानी का अन्त यहाँ ही नहीं हो जाता है। *''तेईस जनवरी पंन्द्रह सौ पेंसठ को ताली कोट के युद्ध के अन्तिम दिन विजयानगर की सेना ने उपयुक्त अवसर पर त्वरित गति से आक्रमण कर दिया। परिणामस्वरूप मुसलमानों की संघीय सेना के बायें और दायें भाग की सेनाएं बुरी तरह अस्त व्यस्त हो गईं और सेनानायक समर्पण करने को, और वापिस जाने को प्रस्तुत हो गये। तभी हुसेन ने स्थिति बचा ली। तब युद्ध पुनः प्रारम्भ हो गया और दोनों ही पक्षों की भीषण क्षति हुई। युद्ध अधिक देर नहीं चला, क्योंकि राम राजा के दो मुसलमान सेना नायकों द्वारा धोखा देकर पक्ष त्याग देने के कारण युद्ध के अन्त का भविष्य निश्चित हो गया। कैसर फ्रैडरिक, जिसने उस समय विजय नगर को देखा था, कहा था कि इन दोनों सेना नायकों के नेतृत्व में प्रत्येक के अधीन सत्तर से अस्सी हज़ार योद्धा थे, इनके पक्ष त्याग व धोखा धड़ी के कारण ही विजया नगर की हार हुई। राम राजा शत्रुओं के हाथ लग गया और हसन के आदेशानुसार उसका शिरोछेदन कर दिया गया।''* (आर. सी. मजूमदार सं. 'हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ दी इण्डियन पीपुल', खाण्ड VII , पृष्ठ 425)

नरसंहार, लूटपाट, डकैती और विध्वंस

अब्बास खान शेरवानी ने अपने ऐतिहासिक अभिलेख तारीख-ई-फरिश्ता में लिखा– *''मुस्लिम मित्रों ने हिन्दुओं का पीछा किया और सफलता के साथ इतनी मात्रा में कत्ल किया कि रक्त बहने लगा और नदी का पानी रक्त रञ्जित हो गया। सर्व श्रेष्ठ अधिकारियों ने गणना की थी कि एक लाख से भी अधिक अविश्वासी, हिन्दुओं का वध किया गया था। लूटपाट इतनी व्यापक थी कि संघीय सेना का प्रत्येक असैनिक व्यक्ति सोने, जवाहरात, आयुध, घोड़े और दास सभी से बेहद धनी हो गया, उन्होंने लूटपाट की, प्रत्येक प्रमुख भवन को गिराकर भूमि सात कर दिया, और हर सम्भव प्रकार का अत्याचार किया।''* (तारीख-ई-फरिश्ता, अब्बास खान शेरवानी, ईलियट और डाउसन, खण्ड IV, पृष्ठ 407-09)

"युद्ध की समाप्ति के उपरान्त मुसलमानों ने कुरान के वायदे के अनुसार जन्नत में स्थाई स्थान पाने और बहत्तर हूरें प्राप्त कर लेने के उद्देश्य से, निरपराध, हिन्दुओं का नरसंहार किया। कुरान की प्रतिज्ञा इस प्रकार है निश्चय ही पवित्र लोग सफल होंगे दूसरे शब्दों में जहाँ तक पवित्र लोगों का प्रश्न है, वे निश्चय ही सफल होंगे, वहाँ बाग और अंगूरों के बगीचे, और ऊंचे उठे हुए उरोजों वाली हूरें साथी के रूप में; तथा लबालब भरा हुआ प्याला।" (78: 31-34, पृ.)

दार-उल-हरब का विनाश

"तीसरे दिन, अन्त का प्रारम्भ हुआ। विजयी मुसलमानों ने पूर्ण निर्ममतापूर्वक हिन्दू लोगों को कत्ल किया, मन्दिरों और पूजा घरों को तोड़ डाला, और राजाओं के आवासों (राजमहलों) का इतनी बर्बरता पूर्ण बदले की भावना प्रदर्शित करते हुए, विनाश किया कि जहाँ शाही भवन हुआ करते थे उन स्थानों की पहचान के लिए वहाँ अवशेषों के ढेर मात्र रह गये। उन्होंने प्रतिमाओं का ध्वंस कर दिया, और एक विशाल शिला से ही निर्मित, नरसिंह, के अंगों को भी तोड़ देने में सफल हो गये। ऐसा नहीं लगता था कि उनसे कुछ भी बच पाया हो। नदी के निकट विट्ठल स्वामी मन्दिर के अंश रूप में बने, आकर्षक, महिमा पूर्ण ढंग से सजे भवनों को विनष्ट करने के लिए उन्होंने व्यापक आग लगा दी, और उनके अनुपम रूप में सुन्दर पत्थरों की भवन निर्माण कला का ध्वंस कर दिया। अग्नि और तलवारों, सब्बलों और कुल्हाड़ियों द्वारा एक दिन के बाद दूसरे दिन इसी प्रकार वे अपने अभीष्ट विनाश का काम करते रहे। विश्व के इतिहास में सम्भवत कभी भी ऐसे विनाश का काम नहीं किया गया है और विनाश कार्य, इतनी आकस्मिकता के साथ वह भी इतने सुन्दर व ऐश्वर्यवान शहर पर; जो एक दिन धनी और सम्पन्न, जनसंख्या से परिपूर्ण था, और जो एक दिन सम्पन्नता के शिखर पर था, और दूसरे ही दिन, अधिकार में ले पूर्ण नरसंहार के साथ नष्ट कर दिया गया, खण्डहरों में बदल दिया गया, और ऐसे बर्बर,

आंतकपूर्ण व यातनापूर्ण वातावरण में कि उसका वर्णन भी न किया जा सके।''(रौबर्ट स्वैल : ए फौरगौटिन ऐम्पायर, पृष्ठ 199-200)

12. शेर शाह सूरी (1540-1545 सी.ई.)

जी.टी. रोड का सच

शेरशाह सूरी एक अफ़ग़ान था जिसने देहली में एक छोटी अवधि केवल पाँच वर्ष राज्य किया। हमारे सैक्यूलरिस्ट इतिहासज्ञ उसकी अपार प्रशंसा करते हैं मात्र इसलिए ही नहीं कि उसने छतीस सौ मील लम्बी ग्राण्ड ट्रंक रोड बनाई वरन् इसलिए भी कि वह उनके मतानुसार सैक्यूलर, परोपकारी, दयालु और कोमल हृदय का शासक था। यहाँ हम यह विवेचना नहीं कर रहे कि पाँच साल के इतने अल्पकाल में, विशेषकर जब वह अनेकों युद्धों में भी लिप्त रहा आया था, छत्तीस सौ मील लम्बी सड़क वह भी पूर्वी बङ्गाल से लेकर पेशावर तक, के लम्बे क्षेत्र में सड़क, निर्माण कार्य कैसे सम्भव हो सकता था, विशेषकर जब कि उसके आधे क्षेत्र में भी उसका शासन नहीं था, वह सब कैसे बनवा सकता था। और कथित सड़क के निर्माण का किसी भी सामयिक ऐतिहासिक अभिलेख में कोई कैसा भी वर्णन उपलब्ध नहीं है। यहाँ विवेचन का हमारा सम्बन्ध, इन सैक्यूलरिस्ट इतिहासज्ञों द्वारा प्रतिपादित तथ्य, शेरशाह के सैक्यूलर होने के विषय में है।

रायसीन में नरसंहार एवं यातनाऐं

अब्बास खान रिज़वी ने अपने इतिहास अभिलेख तारीख-ई-शेरशाही में बड़ी यथार्थता और विस्तार से शेरशाह के संक्षिप्तकालीन शासन का विवरण लिखा था। जो आज के तालिबानों के पिता द्वारा व्यवहार में लाई गई, तथाकथित सैक्यूलरिज्म, का एक अति विलक्षण वर्णन प्रस्तुत करता है।

1543 में शेरशाह ने रायसीन के हिन्दू दुर्ग पर आक्रमण किया। छः महीने के घोर संघर्ष के उपरान्त रायसीन का राजा पूरन मल हार गया। शेर शाह द्वारा दिये गये सुरक्षा और सम्मान के वचन एवम् आश्वासन

का, हिन्दुओं ने विश्वास कर लिया, और समर्पण कर दिया। किन्तु अगले दिन प्रातः काल हिन्दू, जैसे ही किले से बाहर आये, शेर शाह की सेना ने उन पर आकस्मिक आक्रमण कर दिया। अब्बास खान शेरवानी ने लिखा था–

"अफ़गानों ने चारों ओर से आक्रमण कर दिया, और हिन्दुओं का वध प्रारम्भ कर दिया। पूरन मल और उसके साथी, घबराई हुई भेड़ों व सूअरों की भाँति, वीरता और युद्ध कौशल दिखाने में, सर्वथा असफल रहे, और एक आँख के इशारे मात्र समय में ही, सबके सब वध हो गये। उनकी पत्नियाँ और परिवार बन्दी बना लिये गये। पूरन मल की एक पुत्री और उसके बड़े भाई के तीन पुत्रों को जीवित ले जाया गया और शेष को मार दिया गया। शेर शाह ने पूरन मल की पुत्री को किसी घुमक्कड़ बाजीगर को दे दिया जो उसे बाजार में नचा सके, और लड़कों को बधिया, करवा दिया ताकि हिन्दुओं का वंश न बढ़ें।" (तारीख-ई-शेर शाही : अब्बास खान शेरवानी, ईलियट और डाउसन, खण्ड IV, पृष्ठ 403)

अब्बास खान ने शेर शाह के सैक्यूलरिज़्म के अनेकों और उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। उनमें से एक इस प्रकार हैं–***"उसने अपने अश्वधावाकों को आदेश दिया कि हिन्दू गाँवों की जांच पड़ताल करें, उन्हें मार्ग में जो पुरूष मिलें, उन्हें वध कर दें, औरतों और बच्चों को बन्दी बना लें, पशुओं को भगा दें, किसी को भी खेती न करने दें, पहले से ब़ोई फसलों को नष्ट कर दें, और किसी को भी पड़ोस के भागों से कुछ भी न लाने दें।"*** (वही, पृष्ठ 316)

13. अकबर 'महान' (1556-1605 सी.ई.)

जवाहर लाल नेहरू द्वारा लिखित, बहुत प्रशंसित, ऐतिहासिक मिथ्या कथा, "डिस्कवरी ऑफ इण्डिया" में अकबर को 'महान' कहकर प्रशंसित किया गया, एक धुरीय, व्यक्तितत्व है, जो मार्क्सिस्ट ब्राण्ड के सैक्यूलरिस्टों के लिए, आनन्द व उल्लास का स्त्रोत है। इन मैकौलेवादी व मार्किसस्टों की जाति के, इतिहासकारों, द्वारा (अकबर

को) एक सर्वाधिक परोपकारी उदार, दयालु, सैक्यूलर और न जाने किन-किन गुणों से सम्पन्न शहंशाह के रूप में चित्रित किया गया है। अतः इस लेख के द्वारा, अकबर के स्वयं के, व उसके प्रधानमन्त्री द्वारा लिखित विवरणों के ही आधार पर, लोगों, के विशेषकर सैक्यूलवादी इतिहासज्ञों के समक्ष, यह प्रमाणित, करने का प्रयास किया जा रहा है, कि अकबर वास्तव में कितना 'महान' था!

अकबर गा़ज़ी हो गया (5 नवम्बर 1556)

एक निहत्थे, असुरक्षित और बुरी तरह घायल, हिन्दू, राजा हेमचन्द्र (हैमू) का वध कर अकबर, किशोरावस्था में ही, गाज़ी हो गया था। अकबर के सम सामयिक इतिहास लेखक अहमद यादगार ने, लिखा था–*"बैरम खाँ ने हैमू के हाथ पैर बाँध दिये और उसे, नव जवान, भाग्यवान शहजादे के पास ले गया और बोला, चूंकि यह हमारी प्रथम सफलता है, अतः आप श्रीमान अपने ही पवित्र कर कमलों से तलवार द्वारा इस अविश्वासी का कत्ल कर दें, और उसी के अनुसार शहज़ादे ने, उस पर आक्रमण किया और उसका सिर उसके अपवित्र शरीर व धड़ से अलग कर दिया।"* (तारीख-ई-सलातीन-ई-अफगान, अहमद यादगार, ईलियट और डाउसन, खण्ड III, पृष्ठ 65-66)

"बादशाह ने तलवार से हैमू पर आक्रमण किया और उसने गाज़ी की उपाधि प्राप्त कर ली।"(तारीख-ई-अकबर, पृष्ठ 74 अनु. तानसेन अहमद)

अबुल फजल ने लिखा था–*"अकबर को बताया गया कि हैमू का पिता और पत्नी और उसकी सम्पत्ति व धन अलवर में हैं, अतः बादशाह ने नासिर-उल-मलिक को चुने हुए योद्धाओं के साथ आक्रमण के लिए भेज दिया। हैमू के पिता को जीवित ले आया गया और नासिल-उल-मलिक के सामने प्रस्तुत किया गया जिसने उसे (हैमू के पिता को) इस्लाम में धर्मान्तिरित करने का प्रयास किया, किन्तु वृद्ध पुरूष ने उत्तर दिया, "मैंने अस्सी वर्ष तक ईश्वर*

की पूजा अपने मतानुसार की है; मैं अपने मत को कैसे त्याग सकता हूँ? क्या मैं तुम्हारे मत को बिना समझे हुए, भय के कारण, स्वीकार कर लूँ? मौलाना पीर मौहम्मद ने उसके उत्तर को अनसुना कर दिया, किन्तु उसका उत्तर, अपनी तलवार के आघात से दिया।" (अकबर नामा, अबुल फजल : ईलियट और डाउसन, खण्ड VI, पृष्ठ 21)

चित्तौड़ में जिहाद

अकबर की चित्तौड़ विजय के विषय में अबुल फज़ल ने लिखा था, *"अकबर के आदेशानुसार प्रथम आठ हजार राजपूत योद्धाओं को हथियार विहीन कर दिया गया, और बाद में उनका वध कर दिया गया। उनके साथ-साथ अन्य चालीस हजार कृषकों का भी वध कर दिया गया।"* (अकबर नामा : अबुल फज़ल, अनु. एच. बैबरिज)

* युद्ध बन्दियों के साथ इस्लामी व्यवहार का ढंग सूरा 8 आयत 67, कुरान में देखें।

फ़तहनामा-ई-चित्तौड़ (मार्च 1568)

चित्तौड़ की विजयोपरान्त प्रसारित फतहनामा को सम्मिलित कर अकबर ने विभिन्न अवसरों पर फ़तहनामें प्रसारित किये थे। यह ऐतिहासिक पत्र, अकबर ने जिहाद की पूर्णतम भावना के वशीभूत होकर लिखा था और इस प्रकार हिन्दुओं के प्रति उसकी गहन आन्तरिक घृणा, सम्पूर्ण रूप में इस पत्र द्वारा प्रकाशित होती है।

फ़तह नामा का मूल पाठ इस प्रकार था, *"अल्लाह की ख्याति बढ़े जिसने अपने वचन को पूरा किया, अकेले ही संयुक्त शक्ति को हरा दिया और जिसके पश्चात कहीं भी कुछ भी नहीं है.... सर्वशक्तिमान, जिसने कर्तव्य परायण मुजाहिदों को बदमाश अविश्वासियों को अपनी बिजली की तरह चमकीली कड़कड़ाती तलवारों द्वारा वध कर देने की आज़ादी थी, उसने (अल्लाहने) बताया था, उनसे युद्ध करो! अल्लाह उन्हें तुम्हारे हाथों के द्वारा*

दण्ड देगा और वह उन्हें नीचे गिरा देगा। वध कर धराशाही कर देगा। और तुम्हें उनके ऊपर विजय दिला देगा (कुरान सूरा 9 आयत 14) ''हमने अपना बहुमूल्य समय अपनी शक्ति से, सर्वोत्तम ढंग से जिहाद, (घिज़ा) में ही लगा दिया है और अमर अल्लाह के सहयोग से, जो हमारे सदैव बढ़ते जाने वाले साम्राज्य का सहायक है, अविश्वासियों के अधीन बस्तियों, निवासियों, दुर्गों व शहरों को विजय कर अपने अधीन करने में लिप्त हैं, कृपालु अल्लाह उन्हें त्याग दे और तलवार के प्रयोग द्वारा इस्लाम के स्तर को सर्वत्र बढ़ाते हुए, और बहुत्ववाद के अन्धकार और हिंसक पापों को समाप्त करते हुए, उन सभी का विनाश कर दे। हमने पूजा स्थलों को उन स्थानों में मूर्तियों को और भारत के अन्य भागों को विध्वंस कर दिया है। अल्लाह की ख्याति बढ़े जिसने, हमें इस उद्देश्य के लिए मार्ग दिखाया और यदि अल्लाह ने मार्ग न दिखाया होता तो हमें इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए मार्ग ही न मिला होता...।'' (फतहनामा-ई-चित्तौड़ : अकबर ।। नई दिल्ली, 1972 की इतिहास कांग्रेस की कार्य विधि ।। अनु. टिप्पणी : इश्तिआक अहमद जिल्ली पृष्ठ 350-61)

अकबर का शादी के निमित्त जिहाद

अपने हरम को सम्पन्न व समृद्ध करने के लिए अकबर ने अनेकों हिन्दू राजकुमारियों के साथ बलात शादियाँ की; और कुटिल एवम् धूर्त सैक्यूलरिस्टों ने इसे, अकबर की *हिन्दुओं के प्रति स्नेह, आत्मीयता और* सहिष्णुता के रूप में चित्रित किया है। किन्तु इस प्रकार के प्रदर्शन सदैव एक मार्गीय ही थे। अकबर ने कभी किसी भी मुगल महिला को, किसी हिन्दू को शादी में नहीं दिया।

''रणथम्भौर की सन्धि के अन्तर्गत शाही हरम में दुल्हिन-भेजने की, राजपूतों के स्तर को गिराने वाली, रीति से बूंदी के सरदार को मुक्ति दे दी गई थी।''

उपरोक्त सन्धि से स्पष्ट हो जाता है कि अकबर ने, युद्ध में हारे हुए हिन्दू सरदारों की अपने परिवार की सर्वाधिक सुन्दर महिला को प्राप्त कर लेने की एक परिपाटी बना रखी थीं और बूंदी ही इस क्रूर परिपार्टी का एक मात्र, सौभाग्यशाली, अपवाद था। ***''अकबर ने अपनी काम वासना की शांति के लिए गोंडवाना की विधवा रानी दुर्गावती पर आक्रमण कर दिया किन्तु एक अति वीरतापूर्ण संघर्ष के उपरान्त यह देख कर कि उसकी हार निश्चित है, रानी ने आत्म हत्या कर ली। किन्तु उसकी बहिन को बन्दी बना कर और उसे अकबर के हरम में भेज दिया गया।''*** (आर. सी. मजूमदार, दी मुगल ऐम्पायर, खण्ड VII, पृष्ठ 116)

हल्दी घाटी के गाज़ी

राणा प्रताप के विरूद्ध अकबर के अभियानों के लिए सबसे अधिक, सशक्त व प्रेरक तत्व था इस्लामी जिहाद की भावना, जिसकी व्याख्या व स्पष्टीकरण कुरान की अनेकों आयतों और अन्य इस्लामी धर्म ग्रन्थों में किया गया है। ***''उनसे युद्ध करो, जो अल्लाह और क़यामत के दिन (अन्तिम दिन) में विश्वास नहीं रखते, जो कुछ अल्लाह और उसके पैगम्बर ने हराम कर रखा है उसको हराम नहीं करते; जो उस पन्थ पर नहीं चलते हैं जो सच का पन्थ है, और जो उन लोगों का है जिन्हें किताब (कुरान) दी गई है; (और तब तक युद्ध करो) जब तक वे उपहार न दे दें और दीन हीन न बना दिये जाएँ''*** (9:29, पृ. 372)

अतः तर्कपूर्वक निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि राजपूत सरदारों और भील आदिवासियों द्वारा संगठित रूप में हल्दी घाटी में मुगलों के विरूद्ध लड़ा गया युद्ध मात्र एक शक्ति संघर्ष नहीं था इस्लामी आंतकवाद व आतताईपन के विरूद्ध हिन्दू प्रतिरोध ही था।

अकबर के एक दरबारी इमाम अब्दुल कादिर बदाउनी ने अपने इतिहास अभिलेख, 'मुन्तखाब-उत-तवारीख' में लिखा था कि 1576 में जब शाही फौजें राणा प्रताप के विरूद्ध युद्ध के लिए अग्रसर हो रहीं

थीं तो उसने (बदाउनीने) *"युद्ध अभियान से सम्मिलित होकर हिन्दू रक्त से अपनी इस्लामी दाड़ी को भिगो लेने के विशिष्ट अधिकार के प्रयोग के लिए इस अवसर पर उपस्थित रहे आने में अपनी असमर्थता के लिए आदेश प्राप्त करने के लिए शहंशाह से भेंट की व अनुमति के लिए प्रार्थना की।"* अपने व्यक्तित्व के प्रति इतने सम्मान और निष्ठा, और जिहाद सम्बन्धी इस्लामी भावना के प्रति निष्ठा से अकबर इतना प्रसन्न हुआ कि अपनी प्रसन्नता के प्रतीक स्वरूप मुट्ठी भर सोने की मुहरें उसने बदाउनी को दे डालीं। (मुन्तखाब-उत-तवारीख : अब्दुल कादिर बदाउनी, खण्ड II, पृष्ठ 383, वी. स्मिथ, अकबर दी ग्रेट मुगल, पृष्ठ 108)

काफ़िर होना, मृत्यु का कारण

हल्दी घाटी के युद्ध में एक मनोरञ्जक घटना हुई। वह विशेषकर अपने सैक्यूलरिस्ट बन्धुओं के निमित्त ही यहाँ उद्धृत है।

बदाउनी ने लिखा था–*"हल्दी घाटी में जब युद्ध चल रहा था और अकबर से संलग्न राजपूत, और राणा प्रताप के निमित्त राजपूत परस्पर युद्ध रत थे और उनमें कौन किस ओर है, भेद कर पाना असम्भव हो रहा था, तब अकबर की ओर से युद्ध कर रहे बदाउनी ने, अपने सेना नायक से पूछा कि वह किस पर गोली चलाये ताकि शत्रु को ही आघात हो, और वह ही मरे। कमाण्डर आसफ़ खाँ ने उत्तर दिया था कि यह बहुत अधिक महत्व की बात नहीं कि गोली किस को लगती है क्योंकि सभी (दोनों ओर से) युद्ध करने वाले काफ़िर ही हैं, गोली जिसे भी लगेगी काफ़िर ही मरेगा, जिससे लाभ इस्लाम को ही होगा।"* (मुन्तखान-उत-तवारीख : अब्दुल कादिर बदाउनी, खण्ड II, अकबर दी ग्रेट मुगल : वी. स्मिथ हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ दी इण्डियन पीपुल, दी मुगल ऐम्पायर : सं. आर. सी. मजूमदार, खण्ड VII, पृष्ठ 132)

इसी संदर्भ में एक और ऐसी ही समान स्वभाव की घटना वर्णन योग्य है। प्रथम विश्व व्यापी महायुद्ध में जब ब्रिटिश भारत की सेनायें

क्रीमियाँ में नियुक्त थीं तब ब्रिटिश भारत की सेना के मुस्लिम सैनिकों ने, जो उसी सेना के हिन्दू सैनिकों के पीछे स्थित थे, हिन्दू सैनिकों पर पीछे से गोलियाँ चला दीं, फलस्वरूप बहुत से हिन्दू सैनिक मारे गये। मुस्लिम सैनिकों की शिकायत थी कि जर्मनी के पक्षधर, और जो क्रीमियाँ पर अधिकार किये हुए थे, उन तुर्कों के विरूद्ध वे युद्ध नहीं करना चाहते थे। इस घटना के बाद ब्रिटिशों ने ब्रिटिश भारत की सेना के हिन्दू और मुसलमान सैनिकों को युद्ध स्थल पर ***कभी भी एक पक्ष में,*** एक साथ, नियुक्त नहीं किया। इस घटना का वर्णन उस ब्रिटिश अफसर ने स्वयं ही लिखा था जो इस अति विशिष्ट, तथा इस्लामी, घटना का स्वयं प्रत्यक्ष दर्शी था। (दी इण्डिया औफिस लाइब्रेरी, लण्डन, एम. एस. एस. 2397)

किन्तु हिन्दुओं ने अपने इतिहास से कुछ भी नहीं सीखा है, अतः ऐसी घटना की पुनरावृत्ति अत्याज्य है। घटना तुलनात्मक रूप में निकट भूत ही है जिसमें साम्यवादियों की बहुत अधिक कटु भागीदारी है। एक भली भाँति सिद्धांत विशारद साम्यवादी, विख्यात नेता, स्वर्गीय प्रोफैसर कल्यान दत्त (सी. पी. आई.) ने अपनी जीवनी ***''आमार कम्यूनिस्ट जीवन''*** में लिखा था। मुसलमानों ने अपनी पाकिस्तान की मांग को सम्पन्न कराने के लिए सोलह अगस्त उन्नीस सौ छियालीस को ***'प्रत्यक्ष कार्यवाही'*** प्रारम्भ कर दी। इसे बाद में ***''कलकत्ता का महान कत्लेआम, कहा गया।''*** (दी ग्रेट कैलकट्टा किलिङ्गस)। ***'जिहाद'*** जिस प्रत्यक्ष कार्यवाही (डाइरैक्ट ऐक्शन) नाम दिया गया, खिदर पुर डौकयार्ड के मुस्लिम मजदूरों ने हिन्दू मजदूरों पर आक्रमण कर दिया। ***आश्चर्यचकित हिन्दुओं ने वामपन्थी ट्रेड यूनियन्स की सदस्यता के, जिनके हिन्दू मुसलमान दोनों ही मजदूर सदस्य थे, कार्ड दिखा कर प्राण रक्षा की भीख माँगी; और कहा कि ''अरे कौमरेडो (साथियों) तुम हमारा वध क्यों कर रहे हो ? हम सभी एक ही यूनियन में हैं।'' किन्तु चूंकि इन मुजाहिदों को इस्लाम का राज्य (दारुल इस्लाम) मजदूरों के राज्य से कहीं अधिक प्रिय है,*** ''सभी हिन्दुओं का वध कर दिया गया।'' (कल्याण दत्त, 'आमार कम्यूनिस्ट जीवन' (बङ्गाली), पृष्ठ 10)

इस विशेष घटना का यहाँ वर्तमान करने का मेरा उद्देश्य यह है कि वामपंथी सेना "जो व्यावहारिक ज्ञान की अपेक्षा सिद्धांत बनाने में अधिक सिद्ध हस्त है", उनके मस्तिष्कों में *वास्तविकता, सचाई और सामान्य ज्ञान* का कुछ उदय हो जाए।

अकबर हिन्दुओं का वधिक

जहाँगीर ने, अपनी जीवनी, "तारीख-ई-सलीमशाही" में लिखा था कि *"अकबर और जहाँगीर के आधिपत्य में पाँच से छः लाख तक की संख्या में हिन्दुओं का वध हुआ था।"* (तारीख-ई-सलीम शाही, अनु. प्राइस, पृष्ठ 225-26)

गणना करने की चिंता किये बिना, मानवों के वध एवम् रक्तपात सम्बन्धी अकबर की मानसिक अभिलाषा के उदय का कारण, इस्लाम के जिहाद सम्बन्धी सिद्धांत, व्यवहार और भावना में थीं, जिनका पोषण इस्लामी धर्म ग्रन्थ और प्रशासकीय विधि विज्ञान के नियमों द्वारा होता है।

14. जहाँगीर (1605-1627 सी.ई.)

गुरु अर्जुन देव की शहादत

मुस्लिम शासन काल में सिक्खों को कठोर सज़ाऐं दी गईं और वे बड़ी निर्दयता के साथ कत्ल किए गए। सिक्खों का पारम्परिक इतिहास बतलाता है कि जहाँगीर ने गद्दी पर बैठने के एक साल बाद (1606) में ही गुरु अर्जुन देव पर महान अत्याचार किए। गुरु अर्जुन देव को गर्म लोहे की प्लेट पर ज़बरदस्ती बैठाया गया और फिर उनके शरीर पर गर्म रेत फेंका गया और उन्हें एक बड़े पानी भरे कढ़ाह में उबाला गया। दबिस्तान ए मज़हबी बतलाता है कि गुरु अर्जुन देव को पहले खाना पानी नहीं दिया गया और फिर उन्हें दहकते हुए गर्म रेत और पत्थरों पर लिटाया गया जिसके कारण उनके सिर से खून बहने लगा। इस तरह उन्हें तीन से पाँच दिनों तक सताया गया। जब उनके शरीर के घावों से खून लगातार बह रहा था तब उनके हाथ पैरों को

बांधकर तीस मई सोलह सौ छः (1606) को उन्हें जिन्दा रावी नदी में फैंक दिया गया जहाँ वे नदी की धारा में विलीन हो गए (संगत सिंह पृ. 38)। जहाँगीर ने अपने शासन के आठवें वर्ष अजमेर के भागवत मन्दिर को नष्ट कर दिया। उसने गुजरात के जैनियों पर की महान अत्याचार किए।

15. शाहजहाँ (1628-1658 सी.ई.)

शाहजहाँ शेखी मारा करता था कि ***''वह तिमूर का वंशज है जो भारत में तलवार और अग्नि लाया था। उस उज़्बैक के, जंगली जानवर, (तिमूर) से, उसकी हिन्दुओं के रक्तपात की उपलब्धि से, इतना प्रभावित था कि ''उसने अपना नाम तिमूर द्वितीय रख लिया''*** (दी लीगेसी ऑफ मुस्लिम रुल इन इण्डिया–डॉ. के. एस. लाल, पृष्ठ, 132).

शाहजहाँ ने बहुत प्रारम्भिक अवस्था से ही अविश्वासियों के प्रति युद्धों के लिए रूचि दिखाई। इतिहासकार कीने ने लिखा था कि, ***''शहज़ादे के रूप में ही शाहजहाँ ने फतहपुर सीकरी पर अधिकार कर लिया था और आगरा शहर विध्वंस कर दिया था जहाँ, भारत यात्रा पर आये इटली के एक धनी व्यक्ति देला वैले के अनुसार, उसकी (शाहजहाँ की) सेना ने भयानक बर्बरता का परिचय कराया था। हिन्दू नागरिकों को घोर यातनाओं द्वारा अपने सञ्चित धन को देने के लिए विवश किया गया, और अनेकों उच्च कुल की हिन्दू महिलाओं का शील हरण और उनका अंग भंग किया गया।''*** (कीन्स हैण्ड बुक फौर विज़िटर्स टू आगरा एण्ड इट्स नेबरहुड, पृष्ठ 25)

अनेक इतिहासज्ञों, विशेषकर सैक्यूलरिस्टों ने, शाहजहाँ को एक महान् निर्माता के रूप में चित्रित किया है। उसकी, सौन्दर्य शास्त्र की अभिरूचि वाले के रूप में प्रशंसा की गई है। किन्तु इस तथाकथित सौन्दर्य शास्त्र के प्रति अभिरूचि रखने वाले मुजाहिद ने, अनेकों हिन्दू मन्दिरों, और हिन्दू भवन निर्माण कला केन्द्रों, का बड़े असाधारण जोश के साथ विध्वंस किया था।

अब्दुल हमीद लाहौरी ने अपने इतिहास अभिलेख, 'बादशाह नामा' में लिखा था, *''महामहिम शहंशाह महोदय की सूचना में लाया गया कि अविश्वासियों (हिन्दुओं) के एक सशक्त केन्द्र, बनारस, में उनके पिताजी के शासनकाल में अनेकों मन्दिरों के पुनः निर्माण का काम प्रारम्भ हुआ था किन्तु वे अपूर्ण रह गये थे और अविश्वासी (हिन्दू) अब उन्हें पूर्ण कर देने के इच्छुक हैं। इस्लाम पंथ के रक्षक, महामहिम, ने आदेश दिया कि बनारस में और उनके सारे राज्य में सभी स्थानों पर जिन मन्दिरों का निर्माण प्रारम्भ हो गया है, उन्हें विध्वंस कर दिया जाए। इलाहाबाद प्रदेश से सूचना प्राप्त को गई कि जिला बनारस के छियत्तर मन्दिरों का ध्वंस कर दिया गया था।''* (बादशाहनामा : अब्दुल हमीद लाहौरी, ईलियट और डाउसन, खण्ड VII , पृष्ठ 36)

1632 में ''कश्मीर से लौटते समय शाहजहाँ को बताया गया कि अनेकों महिलायें हिन्दू हो गईं और उन्होंने हिन्दू परिवारों में शादी कर ली थी। शहंशाह के आदेश पर इन सभी हिन्दुओं को बन्दी बना लिया गया। प्रथम उन सभी पर इतना आर्थिक दण्ड थोपा गया कि उनमें से कोई भुगतान नहीं कर सका। तब इस्लाम स्वीकार कर लेने और मृत्यु में से एक को चुन लेने का विकल्प दिया गया। चूंकि किसी ने धर्मान्तरण स्वीकार नहीं किया, अतः उन्हें वध कर दिया गया। लगभग चार हजार पाँच सौ महिलाओं को बलात् मुसलमान बना लिया गया।'' (हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ दी इण्डियन पीपुल : आर. सी. मजदूमदार, खण्ड VII, पृष्ठ 312)

''मनुष्य के रूप में, शाहजहाँ एक नीच और पथभ्रष्ट व्यक्ति था। उसके बाबा अकबर के हरम में पाँच हजार महिलायें, अधिकांशतः हिन्दू थीं। अकबर की मृत्यु के पश्चात् जहाँगीर को हरम, उत्तराधिकार में मिला और उसने रखैलों की संख्या बढ़ाकर छः हजार कर ली। और वही हरम जब शाहजहाँ को प्राप्त हुआ, तो उसने उसे और भी बढ़ा दिया। उसने हिन्दू महिलाओं की व्यापक छाँट द्वारा हरम को और सम्पन्न किया। बुढ़ियाओं को भगा कर और अन्य हिन्दू

परिवारों से युवतियों को बलात लाकर हरम को बढ़ाता ही रहा।'' (अकबर दी ग्रेट मुगल : वी. स्थिम, पृष्ठ 359)

हिन्दू महिलाओं से सैक्स सम्बन्धों के लिए दासवृत्ति

शाहजहाँ भगाई हुई हिन्दू महिलाओं को सैक्स, दासता और सैक्स व्यापार को प्रश्रय देता था, और अक्सर अपने मंत्रियों और सम्बन्धियों को पुरस्कार स्वरूप अनेकों हिन्दू महिलाओं को दिया करता था। वह व्यभिचारी, नर पशु यौनाचार के प्रति इतना उत्साही था, कि हिन्दू महिलाओं के बाजार ***(मीना बाजार)*** लगाया करता था, यहाँ तक कि अपने महल में भी। सुप्रसिद्ध यूरोपीय यात्री फ्रांकोइस बर्नियर ने इस विषय में टिप्पणी की थी कि, ***''महल में बार-बार लगने वाले मीना बाज़ार, जहाँ भगा कर लाई हुई सैकड़ों हिन्दू महिलाओं का क्रय-विक्रय हुआ करता था, राज्य द्वारा बड़ी संख्या में नाचने वाली लड़कियों की व्यवस्था, और नपुंसक बनाये गये सैकड़ों लड़कों की हरमों में उपस्थिति, शाहजहाँ की काम लिप्सा के समाधान के लिए ही थी।'''*** (ट्रेविल्स इन दी मुगल ऐम्पायर--फ्रान्कोइस बर्नियरः पुनः लिखित वी. स्मिथ).

16. औरंगज़ेब (1658-1707 सी.ई.)

अपने पूर्वजों से पूर्णतः भिन्न, औरंगज़ेब, कम से कम अपने मूल वास्तविक स्वरूप और भावनानुसार ही, लोगों के ज्ञान में है। इरफान हबीब, और उसके अन्य टोली के साथियों के, औंरगज़ेब के जिहादी कुकृत्यों को न्यायोचित ठहराने के अथक प्रयास किए हैं। उसके जिहादी कुकृत्य, उदाहरणार्थ बलात् धर्मान्तरण, मन्दिर विध्वंस और सिक्ख गुरूओं ***और*** सत्पुरूषों के वध, इस मुजाहिद को पन्थ निरपेक्ष (सैक्यूलर) प्रस्थापित करने की दिशा में, तनिक भी सहयोगी, नहीं हो सके हैं। चूंकि इस लेख के अति सीमित आकार के कारण, औरंगज़ेब की धार्मिक कट्टरता और उन्माद का संक्षिप्ततम विवरण भी समाविष्ट नहीं किया जा सकता है। तो भी हम उसके द्वारा हिन्दुस्तान के मूर्ति पूजकों के विरूद्ध जिहादी कुकृत्यों की, एक झलक मात्र देने का प्रयास कर रह हैं।

गुरु तेग बहादुर का वध

कश्मीर घाटी के पंडित कृपाराम के नेत्तत्व में 17 ब्राह्मणों का एक प्रतिनिधि मण्डल गुरु तेग बहादुर जी के पास मई 1675 को गया, और अपने गर्वनर इफ्तिकार खाँ के माध्यम से, औरंगज़ेब के द्वारा, उन पर किये जाने वाले अत्याचारों और यातनाओं की शिकायतें कीं, उन्होंने गुरु जी को बताया कि उनके सामने दो मार्गों : मृत्यु और इस्लाम—में से एक को चुन लेने का आग्रह किया जा रहा है। उन्होंने गुरु जी से कहा, ***''इस अन्धकार भरे काल में, आप ही हमारे एक मात्र स्वामी एवम् सर्वस्व हैं। अब आप पर ही हमारी जाति और धर्म की रक्षा का भार निर्भर करता है। अन्यथा हम सम्मान के साथ अपने जीवन, और पीढ़ियों पुराने धर्म के पालन में सर्वथा असमर्थ हैं। हमारे लिए यह सब असम्भव हो चला है।''***

जब उसके पन्थ और पन्थानुयाइयों पर पूर्णतः अनावश्यक रूप में आक्रमण हो रहा हो, तब 'योद्धा सन्त' उपेक्षा भाव दिखा पाने में सर्वथा असमर्थ था। गुरु जी ने उन्हें सान्त्वना दी और प्रोत्साहित किया। और हिन्दुओं द्वारा कश्मीर में बलात् धर्म परिवर्तन के प्रतिरोध का नेतृत्व किया, इससे औरंगज़ेब क्रुद्ध हो गया और उसने गुरु जी को बन्दी बनाये जाने के लिए आदेश दे दिये। जब गुरु जी को औरंगज़ेब के सम्मुख प्रस्तुत किया गया तब उसने गुरु जी के सामने 'मृत्यु और इस्लाम' में से एक को चुन लेने का विकल्प प्रस्तुत किया। गुरु जी ने इस्लाम स्वीकार कर लेने को मना कर दिया और फिर शहंशाह के आदेशानुसार, पाँच दिन तक अमानवीय यंत्रणायें देने के उपरान्त, गुरु जी का सिर काट दिया गया। इस पर गुरु गोविन्द सिंह ने कहा था, ***''कि उन्होंने (गुरु जी ने) अपना रक्त (बलि) देकर हिन्दुओं के तिलक और यज्ञोपवीत की रक्षा की।''*** (विचित्र नाटक-गुरु गोविन्द सिंह : ग्रन्थ सूरज प्रकाश-भाई संतोख सिंह : इवौल्यूशन ऑफ खालसा, प्रोफ़ैसर आई बनर्जी)

डॉ. संगत सिंह ने गुरु तेग़बहादुर और उनके शिष्यों के बलिदान का वर्णन इस प्रकार दिया है : ''गुरु तेग़बहादुर अपने दरबार के तीन

प्रमुख व्यक्तियों दीवान मतीदास सतीदास और दयाल दास सहित कश्मीर के ब्राह्मणों का मामला प्रस्तुत करने के लिए देहली को चले। परन्तु 12 जुलाई 1675 को वे गाँव मलिकपुर रंगान परगना घनौला में बन्दी बना लिया गए और उन्हें सरहिंद जेल में बन्द कर दिया गया जहाँ वे चार माह तक बन्द रहे। बाद में औरंगज़ेब के आदेश पर उन्हें दिल्ली भेज दिया गया।

गुरु तेग़बहादुर को, जब वे सरहिन्द जेल में बन्द थे, अनेकों यातनाऐं दीं गई एक पक्षी की तरह और अन्त में 5 नवम्बर 1675 को उन्हें लोहे के पिंजाड़े में बन्द करके, दिल्ली लाया गया। दिल्ली के सूबेदार और शाही काज़ी सक्रिय हो गए और उन्होंने गुरु तेग़बहादुर के सामने तीन विकल्प रखे : (1) वे चमत्कार दिखलाऐं, (2) इस्लाम स्वीकार करें या (3) मृत्यु दण्ड भुगतें। गुरु तेग़बहादुर के तीनों शिष्यों-भाई मति दास, भाई दयाल दास और भाई सतीदास ने पहले दोनों विकल्पों को अस्वीकार कर दिया और तीसरे विकल्प मृत्यु दण्ड को चुना। भाई मति दास के दोनों पैरों को बांधकर उन्हें आरे से दो टुकड़ों में चीर कर मारा गया; भाई दयालदास को खौलते पानी के कढ़ाव में उबाल कर मारा गया, जबकि भाई सती दास के शरीर पर रूई लपेट कर उन्हें ज़िन्दा जलाकर मारा गया। तीनों शिष्यों की शहादत के बाद, 11 नवम्बर, 1675 को गुरु तेग़ बहादुर का सिर धड़ से अलग कर दिया गया'' (पृ. 61-63)

गुरु गोविन्द सिंह के दो बेटों को ज़िन्दा दीवार में चिनवाया गया

''गुरु गोविन्द सिंह के दो किशोर बेटों ज़ोरावर सिंह और फतेहसिंह को इस्लाम स्वीकार न करने के कारण दीवार में ज़िन्दा चिनवा दिया गया। इससे पहले उन्हें चार दिनों तक अनेकों यातनाऐं दी गईं। क्योंकि जब दीवार उनकी गरदनों तक ऊंची पहुँची, वह गिर गई तो 12 दिसम्बर 1705 को उनका गला काट कर हत्या कर दी गई। इस बर्बरता पूर्ण हत्या के समाचार के आघात से व्यथित गुरु की माता जी का निर्धन हो गया।'' (संगत सिंह पृ. 76)

औरंगज़ेब द्वारा मन्दिरों का विनाश

(हिस्ट्री ऑफ औरंगज़ेब–सर जदुनाथ सरकार, खण्ड III , अवैण्डिक्स V से)

(अ) राज्यारोहण से पहिले

(*i*) *''सीतादास जौहरी द्वारा सरशपुर के निकट बनवाये गये चिन्तामन मन्दिर का विध्वंस कर, उसके स्थान पर शहज़ादे औरंगज़ेब के आदेशानुसार 1645 में क्वातुल-इस्लाम नामक मस्जिद बनवा दी गई।''* (मीरात-ई-अहमदी, 232) दी बौम्बे गज़टियर खण्ड I, भाग I, पृष्ठ 280) में *''आगे कहता है कि मन्दिर में एक गाय का वध भी किया गया।''*

(*ii*) *''मेरे आदेशानुसार, मेरे प्रवेश से पूर्व के दिनों में, अहमदाबाद और गुजरात के अन्य परगनों में अनेकों मन्दिरों का विध्वंस कर दिया गया था। उनकी मरम्मत कर दी गई और उनमें पुनः मूर्ति पूजा आरम्भ हो गई थी। मेरे पहले के आदेश दिनाङ्क 20 नवम्बर 1665, को व्यवहार में लाओ।''* (मीरात, पृष्ठ 275)

(*iii*) *''औरंगाबाद के निकट सतारा गाँव मेरा शिकार स्थल था। पहाड़ी के शिखर पर यहाँ खाण्डे राय की मूर्ति युक्त एक मन्दिर था। अल्लाह की महिमा से मैंने उसे ध्वंस्त कर दिया।''* (कलीमात-ई-तय्यीबात 7 बी में, औरंगज़ेब से बीदर बख्त को पत्र)

(ब) राज्यारोहण के पश्चात्

(3) *''मेरे शासन काल के प्रारम्भिक समय में सोमनाथ मन्दिर का विध्वंस कर दिया गया था और मूर्ति पूजा समाप्त कर दी गई थी। यदि मूर्ति पूजकों ने उसी स्थान पर मूर्ति पूजा पुनः प्रारम्भ कर दी हो तो मन्दिर को इस प्रकार विध्वंस करो कि भवन का कोई चिह्न अवशेष ही न रहे।''* (अपने शासन के अन्तिम दशक में औरंगज़ेब का पत्र-इनायतुल्ला का अखबार 10a मीरात-ई-अहमदी, पृष्ठ 372)

(4) 19 दिसम्बर 1661 को मीर जुम्ला ने, वहाँ के राजा और लोगों द्वारा खाली किये कूच विहार शहर में प्रवेश किया और, *"सैय्यद मौहम्मद सादिक को मुख्य न्यायाधीश नियुक्त कर दिया और आदेश दिया कि सभी हिन्दू मन्दिरों का ध्वंस कर दिया जाए और उनके स्थान पर मस्जिदें बनवा दी जाएँ। सेनानायक ने स्वयं, युद्ध की कुल्हाड़ी लेकर, नारायण की मूर्ति का विध्वंस कर दिया।"* (स्टीयूअर्ट्स बङ्गाल)

(5) *"जैसे ही शहंशाह ने सुना कि दाराशुकोह ने मथुरा के केशवराय मन्दिर में पत्थरों की एक बाड़ को पुनः स्थापित करा दिया है, तो उसने कटाक्ष किया, कि इस्लामी पंथ में तो मन्दिर की ओर देखना भी पाप है और इस दारा ने मन्दिर की बाड़ को पुनः स्थापित करा दिया है। मुहम्मदियों के लिए यह आचरण शोभाजनक नहीं है। बाड़ को हटा दो। उसके आदेशानुसार मथुरा के फौजदार अब्दुलनबी खान ने बाड़ को हटा दिया।"* (अखबारातः 9वाँ वर्ष, स्बीत 7, 14 अक्टूबर 1666)

(6) 20 नवम्बर 1665 *"चूंकि महामहिम शहंशाह के ध्यान में लाया गया कि गुजरात प्रान्त के निकट के क्षेत्रों के लोगों ने शंहशाह के प्रवेश से पूर्व के शाही आदेशों के अन्तर्गत ध्वंस किये गये मन्दिरों को पुनः बना लिया है....अतः महामहिम आदेश देते हैं कि.....पूर्व में ध्वंस किये गये और हाल ही में पुनः स्थापित मन्दिरों का विध्वंस कर दिया जाए।"* (फरमान जो मीरात 273 में दिया गया)

(7) 9 अप्रैल 1669 *"सभी प्रान्तों के गवर्नरों को शहंशाह ने आदेश दिया कि अविश्वासियों के सभी स्कूलों और मन्दिरों का बिध्वंस कर दिया जाए और उनकी शिक्षा और धार्मिक क्रियाओं को पूरी शक्ति के साथ समाप्त कर दिया जाए–"* (मासिर-ई-आलमगीरी, (डी ग्राफ, 1670 में जब वह हुगली में था आदेश सुना ओरमें का फ्रोग, 250)

(8) मई 1669 *''गदा धारी सलील बहादुर को मालारान के मन्दिर को तोड़ने के लिए भेजा गया।''* (मासीर-ई-आलम गीरी पृ. 84)

(9) 2 सितम्बर 1669 *''न्यायालय में समाचार आया कि शाही आदेशानुसार उसके अफसरों ने बनारस के विश्वनाथ मन्दिर का विध्वंस कर दिया था''* (वही, पृ. 88)

(10) जनवरी 1670 *''रमज़ान के इस महीने में धार्मिक मन वाले शहंशाह ने मथुरा के केशव का देहरा नामक मन्दिर के विध्वंस का आदेश दिया। अल्पकाल में उसके अफसरों ने आज्ञा पालन कर दी। बहुत बड़े व्यय के साथ उस मन्दिर के स्थान पर एक मस्जिद बना दी गई। उस मन्दिर का निर्माण बीर सिंह बुन्देला द्वारा तेतीस लाख रुपयों के व्यय से कराया गया था। महान पन्थ इस्लाम के अल्लाह की ख्याति बढ़े कि, अविश्वास और अशांति के विनाशक, इस पवित्र शासन में, इतना महान, आश्चर्यजनक, और देखने में असम्भव, कार्य सम्पन्न हो गया। शहंशाह की आस्था और उसकी अल्लाह के प्रति भक्ति की महिमा के इस उदाहरण को देखकर राजा लोग आश्चर्यचकित, अनुभव करने लगे और भौचक्के हो ऐसे देख रहे थे जैसे एक मूर्ति दीवाल को देखती है। मन्दिर में स्थापित छोटी बड़ी सारी मूर्तियाँ, जिनमें बहुमूल्य जवाहरात जड़े थे, आगरा नगर में लाई गईं, और जहाँनारा मस्जिद की सीढ़ियों में लगा दी गईं ताकि, उन्हें निरन्तर पैरों तले रौंदा जा सकें।''* (वही, पृष्ठ 95-96)

(11) *''सैनोन के सीताराम जी मन्दिर का उसने आंशिक विध्वंस किया; उसके अफसरों में से एक ने पुजारी को काट डाला, मूर्ति को तोड़ दिया, और गोड़ा की देवीपाटन के पूजाग्रह को अपवित्र कर दिया।''* (क्रुक का एन. डब्ल्यू. पी. 112)

(12) *''कटक से लेकर उड़ीसा की सीमा पर मेदिनीपुर तक के सभी थानों के फौजदारों, प्रशासन अधिकारियों (मुतसद्दिसों),*

जागीरदारों के प्रतिनिधियों, कोरियों, औ अमल कर्ता सेवकों के लिए आदेश प्रसारित किये गये कि; उड़ीसा प्रान्त के एक समाचार पत्र से समाचार पाकर कि मेदिनीपुर के एक गाँव तिलकुटी में एक नया मन्दिर बनाया गया है, शहंशाह के आदेशानुसार शाही भुगतान के स्वामी असद खाँन ने पत्र लिखा और आदेश दिया कि उस मन्दिर का और महत्वहीन अविश्वासियों द्वारा प्रदेश भर, में जहाँ कहीं, कोई मन्दिर बनाया गया हो, सभी का विनाश कर दिया जाए। अतः अधिकतम तीव्रता से, आपको आदेश दिया जाता है, कि इस पत्र की प्राप्ति के तुरन्त बाद, आप उपर्लिखित मन्दिरों का अविलम्ब विध्वंस कर दें। विगत दस बारह सालों में, जो भी मूर्तिघर बना हो, भले को वह ईंटों से बनाया गया हो, या मिट्टी से, प्रत्येक को अविलम्ब नष्ट कर दिया जाए। घृणित अविश्वासियों को, उनके प्राचीन मन्दिरों की मरम्मत भी, नहीं करनी देनी चाहिए। काजी की सील के अन्तर्गत और पवित्र शेखों द्वारा प्रमाणित मन्दिरों के विनाश की सूचना न्यायालय में भेज दी जानी चाहिए।'' (मराकात-ई-अबुल हसन, (1670 में पूर्ण की गई) पृष्ठ 202)

(13) *''हर एक परगने में थानों के अफ़सर मूर्ति भञ्जन के आदेशों के साथ आते हैं।''* (27 जून 1672 को लिखित और जे. एम. रे. के बङ्गाली हिस्ट्री और ढाका आई, 389 में प्रकाशित, ढाका जिले के धर्मारिया स्थान के यशो माधव मन्दिर में सुरक्षित रखे, पत्र के अनुसार)

(14) *''खण्डेला के राजपूतों को दण्ड देने, और उस स्थान के बड़े मन्दिर के विध्वंस करने के लिए दराब खाँ को भेजा गया था।''* (मासीर-ई-आलमगीरी 171)। *''उसने 8 मार्च 1679 को खण्डेला और शानुला के मन्दिरों को विध्वंस कर दिया। आसपास के अन्य मन्दिरों को भी ध्वंस्त कर दिया है।''* (मासीर-ई-आलमगीरी पृ. 173)

(15) 25 मई 1679, *''जोधपुर में मन्दिरों को ध्वस्त करके और खण्डित मूर्तियों की कई गाड़ियाँ भर कर खान-ई-जहान बहादुर लौटा। शंहशाह ने आदेश दिया कि मूतियाँ, जिनमें अधिकांश*

सोने, चाँदी, पीतल, ताँबा, या पत्थर की थीं, को दरबार के चौकोर मैदान में बिखेर दिया जाए और जामा मस्जिद की सीढ़ियों में लगा दिया जाए ताकि उनको, पैरों तले रोंदा जा सके।'' (मासीर-ई-आलमगीरी पृष्ठ 175)

(16) 17 जनवरी 1980 *''उदयपुर के महाराणा के महल के सामने एक विशाल मन्दिर स्थित था जो अपने युग के महानतम आश्चर्यजनक भवनों में से एक था, और अविश्वासियों ने जिसके निमार्ण के ऊपर अपार धन व्यय किया था, उसे विध्वंस कर दिया गया, और उसकी मूर्तियाँ खण्डित कर दी गईं।''* (मासीर-ई-आलमगीरी पृष्ठ 168)

(17) *''24 जनवरी को शंहशाह उदय सागर झील को देखने गया और उस,के किनारे स्थित तीनों मन्दिरों के विध्वंस का आदेश दे आया।''* (वही, पृष्ठ 188)

(18) *''29 जनवरी को हसन अली खाँ ने सूचित किया कि उदयपुर के चारों ओर के अन्य 172 मन्दिर ध्वस्त कर दिये गये हैं''* (वही, पृष्ठ 189)

(19) *''22 फरवरी को शहंशाह चित्तौड़ देखने गया और उसके आदेश से वहाँ के 63 मन्दिरों का विध्वंस कर दिया गया।''* (वही, पृष्ठ 189)

(20) *''10 अगस्त 1680 आबू टुराह दरबार में लौटा और उसने सूचित किया कि उसने आम्बेर (जयपुर) में 66 मन्दिर तोड़ दिये हैं''* (वही, पृष्ठ 194)।

(21) *2 अगस्त 1680 को पश्चिमी मेवाड़ में सोमेश्वर मन्दिर को तोड़ देने का आदेश दिया गया।* (ऐडुब, 287a और 290a)

(22) सितम्बर 1687 गोल कुण्डा की विजय के पश्चात् शहंशाह ने *''अब्दुर रहीम खाँ को हैदराबाद शहर का आचरण निरोधक नियुक्त किया और आदेश दिया कि गैर-मुसलमानों के रीति*

रिवाज़ों व परम्पराओं तथा इस्लाम धर्म के विरूद्ध नवीन विचारों को समाप्त कर दे और मन्दिरों को ध्वस्त कर उनके स्थानों पर मस्जिदें बनवा दे।'' (ख़फी खान ii पृष्ठ 358-359)

(23) *''1693 में शंहशाह ने वाद नगर के हाटेश्वर, मन्दिर जो नागर ब्राह्मणों का संरक्षक था, को ध्वस्त करने का आदेश किया।''*–(मीरात, पृष्ठ 346)

(24) *1698 के मध्य में ''हमीदुद्दीन खाँन बहादुर, जिसे बीजापुर के मन्दिर को ध्वस्त करने और उस स्थान पर मस्जिद बनाने के लिए नियुक्त किया था,* आदेशों का पालन कर दरबार में वापिस आया था। शहंशाह ने उसकी प्रशंसा की थी।'' (मीरात, पृष्ठ 396)

(25) *''मन्दिर का विध्वंस किसी भी समय सम्भव है क्योंकि वह अपने स्थान से भाग कर नहीं जा सकता।''–(औरंगज़ेब से जुल्फि कार खान और मुगल खान को पत्र)* (कलीमत-ई-तय्यीबात, पृष्ठ 39a)

(26) *''महाराष्ट्र के नगरों के मकान बहुत अधिक मजबूत हैं क्योंकि वे पत्थरों और लोहे के द्वारा बनवाये गये हैं। मेरे अभियानों के मध्य कुल्हाड़ियाँ ले जाने वाले सरकारी आदमियों के पास पर्याप्त शक्ति सामर्थ्य व अवसर नहीं रहता कि मार्ग में दृष्टिगत हो जाने वाले, गैर-मुसलमानों के मन्दिरों को, तोड़ कर चूराकर उन्हें भूमिसात कर सकें। तुम्हें एक परम्परा निष्ठ निरीक्षक (दरोगा) नियुक्त कर देना चाहिए जो बाद में सुविधानुसार मन्दिरों को नष्ट करा के उनकी नीवों को खुदवा दिया करे।''* (औरंगज़ेब से, रूहुल्ला खान को कालीमत-ई-औरंगज़ेब में पृष्ठ 34 रामपुर M.S. और 35a I.0.L.M.S. 3301)

(27) *1 जनवरी 1705 को ''कुल्हाड़ीधारी आदमियों के दरोगा, मुहम्मद खलील को शहंशाह ने बुलाया.....आदेश दिया कि पण्ढरपुर के मन्दिरों को नष्ट कर दिया जाए और डेरे के कसाइयों को ले जाकर, मन्दिरों में गायों का वध कराया जाए.....आज्ञा पालन हुई''* (अखबारात 49-7)

17. अहमद शाह अब्दाली (1757 और 1761 सी.ई.)

मथुरा और वृन्दावन में जिहाद (1757)

"किसान जाटों ने निश्चय कर लिया था कि विध्वंसक, ब्रज भूमि की पवित्र राजधानी में, उनकी लाशों पर होकर ही जा सकेंगे. ..मथुरा के आठ मील उत्तर में 28 फरवरी 1757 को जवाहर सिंह ने दस हजार से भी कम आदमियों के साथ आक्रमणकारियों का डटकर जीवन मरण की बाजी लगाकर प्रतिरोध किया। सूर्योदय के बाद युद्ध नौ घण्टे तक चला और अन्त में दोनों ओर के दस बारह हजार पैदल योद्धा मर गये, घायलों की गिनती तो अगणनीय थी।"

"हिन्दू प्रतिरोधक अब आक्रमणकारियों के सामने बुरी तरह धराशायी हो गये। प्रथम मार्च के दिन निकलने के बहुत प्रारम्भिक काल में अफ़गान अश्वारोही फौज, बिना दीवाल वाले और बिना किसी प्रकार का संदेह करने वाले, मथुरा शहर में फट पड़ी। और ने अपने स्वामियों के आदेशों से, और न पिछले दिन प्राप्त कठोरतम प्रतिरोध के कारण, अर्थात् दोनों ही कारणों से, वे कोई किसी प्रकार की भी दया दिखाने की मनस्थिति में नहीं थे। पूरे चार घण्टे तक, हिन्दू जनसंख्या का बिना किसी पक्षपात के, भरपूर मात्रा में, नरसंहार किया गया। सभी के सभी निहत्थे असैनिक ही थे। उनमें से कुछ पुजारी थे...."मूर्तियाँ तोड़ दी गईं और इस्लाम वीरों द्वारा वे पोलों की गेदों की भाँति ठुकराई गईं", (हुसैनशाही पृष्ठ 39)"

नरसंहार के पश्चात ज्योंही अहमदशाह की सेनायें मथुरा से आगे चली गईं तो नजीब व उसकी सेना, वहाँ पीछे तीन दिन तक रही आई। असंख्य धन लूटा और बहुत सी सुन्दर हिन्दू महिलाओं को बन्दी बनाकर ले गया।" (नूर 15 b) यमुना की नीली लहरों ने उन सभी अपनी पुत्रियों को शाश्वत शांति दी जितनी उसकी गोद में, उसकी फैली बाहों को दौड़कर पकड़ सकीं। कुछ अन्यों ने,

अपने सम्मान सुरक्षा और अपमान से बचाव के अवसर के रूप में, निकटस्थ, अपने घरों के कुओं में, कूदकर मृत्यु का आलिंगन कर लिया। किन्तु उनकी उन बहिनों के लिए, जो जीवित तो रही आईं, उनके सामने मृत्यु से भी कहीं अधिक बुरे भाग्य से, कहीं, कैसी भी, सुरक्षा नहीं थी। घटना के पन्दह दिन बाद एक मुस्लिम प्रत्यक्षदर्शी ने विध्वंस हुए शहर के दृश्य का वर्णन किया है। "गलियों और बाजारों में सर्वत्र वध किये हुए व्यक्तियों के शिर रहित धड़, बिखरे पड़े थे। सारे शहर में आग लगी हुई थी। बहुत से भवनों को तोड़ दिया गया था। जमुना में बहने वाला पानी पीले जैसे रंग का था मानो कि रक्त से दूषित हो गया हो।"

"मथुरा के विनाश से मुक्ति पा, जहान खान, आदेशों के अनुसार सारे देश में लूटपाट करता हुआ घूमता फिरा। मथुरा से सात मील उत्तर में, वृन्दावन भी नहीं बच सका....पूर्णतः शांत स्वाभाव वाले, आक्रामकताहीन, सन्त विष्णु भक्तों पर, वृन्दावन में सामान्यजनों के नरसंहार का अभ्यास किया गया। (6 मार्च) उसी मुसलमान डाइरी लेखक ने वृन्दावन का भ्रमण कर लिखा था; *"जहाँ कहीं देखोगे शवों के ढेर देखने को मिलेंगे। तुम अपना मार्ग बड़ी कठिनाई से निकाल सकते थे क्योंकि शवों की संख्या के आधिक्य और बिखराव तथा रक्त के बहाव के कारण मार्ग पूरी तरह रुक गया था। एक स्थान पर जहाँ हम पहुँचे तो देखा कि लगभग दो सौ बच्चों के शवों को ढेर पड़ा था। किसी भी शव के साथ शिर नहीं था....दुर्गन्ध और सड़ान्ध हवा में इतनी अधिक थी कि मुँह खोलने और साँस लेना भी कष्ट कर था।"* (फॉल ऑफ़ दी मुगल ऐम्पायर-सर जदुनाथ सरकार खण्ड II, आवृत्ति IV, पृष्ठ 69-70)

अब्दाली का गोकुल पर आक्रमण

"अपन डेरे की एक टुकड़ी को गोकुल विजय के लिए भेजा गया। किन्तु यहाँ पर राजपूताना और उत्तर भारत के नागा सन्यासी

सैनिक रूप के थे। राख लपेटे, नग्न शरीर चार हजार सन्यासी सैनिक, बाहर खड़े थे और तब तक लड़ते रहे जब तक उनमें से आधे मर न गये, और उतने ही शत्रु पक्ष के सैनिकों की भी मृत्यु हुई। सारे वैरागी तो मर गये, किन्तु शहर के देवता गोकुल नाथ बच रहे, जैसाकि एक मराठा समाचार पत्र ने लिखा।'' (राजवाड़े i 63, वही, पृष्ठ 70-71)

पानीपात में जिहाद (1761)

''युद्ध के प्रमुख स्थल पर कत्ल हुए शवों के इकत्तीस, पृथक-पृथक, ढेर गिने गये थे। प्रत्येक ढेर में शवों की संख्या, पाँच सौ से लेकर एक हजार तक, और चार ढेरों में पन्द्रह सौ तक शव थे, कुल मिलाकर अट्ठाईस हजार शव थे।''

इनके अतिरिक्त मराठा डेरे के चारों ओर की रवाई शवों से पूरी तरह भरी हुई थी। लम्बी घेरा बन्दी के कारण, इनमें से कुछ रोगों, और अकाल के शिकार थे तो कुछ घायल आदमी थे, जो युद्ध स्थल से बचकर, रेंग कर, वहाँ मरने आ पहुँचे थे। भूख और थकान के कारण, मरने वालों और दुर्रानी की निरन्तर बिना रुके पीछा करने वाली सेना के सामने प्रतिरोध करने वालों, के मर कर गिर जाने वाले शवों से, पानीपत के पश्चिम और दक्षिण में, मराठों की पीछे लौटती हुई सेना की दिशा में, जंगल और सड़क भरे पड़े थे। इनकी संख्या—तीन चौथाई असैनिक और एक चौथाई सैनिक—युद्ध में मरने वालों की संख्या से बहुत कम नहीं थीं। जो घायल पड़े थे शीत की विकरालता के कारण मर गये।''

''संघर्षमय महाविनाश के पश्चात पूर्ण निर्दयतापूर्वक, नरसंहार प्रारम्भ हुआ। मूर्खता अथवा हताशा वश कई लाख मराठे जो विरोधी वातावरण वाले शहर पानीपत में छिप गये थे, उन्हें अगले दिन खोज लिया गया, और तलवार से वध कर दिया गया। एक अति अविश्वसनीय विवरण के अनुसार अब्दुस समद खान के पुत्रों और मियाँ कुत्ब को अपने पिता की मृत्यु का बदला ले लेने के लिए

पूरे एक दिन भर मराठों के लाइन लगाकर वध करने की दुर्रानी की, शाही, अनुमति मिल गई थी'', और इसमें लगभग नौ हजार लोगों का वध किया गया था [भाऊ बखर 123]; वे सभी प्रत्यक्षत; असैनिक व निहत्थे ही थे। प्रत्यक्षदर्शी काशीराज पण्डित ने इस दृश्य का वर्णन इस प्रकार किया है—''दुर्रानी के प्रत्येक सैनिक ने, अपने-अपने डेरों से, सौ या दो सौ, बन्दी बाहर निकाले, और यह चिल्लाते हुए कि, वह अपने देश से जब चला था तब उसकी माँ, बाप, बहिन और पत्नी ने उससे कहा था कि पवित्र धर्म युद्ध में विजय पा लेने के बाद वह उनके प्रत्येक के नाम से इतने काफिरों का वध करे कि उस काम के कारण (सुरा 8 आयत 59-60) *उन्हें उचित पुरस्कार के लिए धार्मिक श्रेष्ठता की मान्यता मिल जाए' , और उन्हें डेरों के बाहरी क्षेत्रों में तलवारों से वध कर दिया।*

''इस प्रकार हजारों और अन्य नागरिक पूर्ण निर्ममता पूर्वक कत्ल कर दिये गये। शाह के डेरे में उसके और उसके सरदारों के आवासों को छोड़कर, प्रत्येक डेरे में उसके सामने कटे हुए शिरों के ढ़ेर पड़े हुए थे।'' (वहीं, पृष्ठ 210-11)

18. टीपू सुल्तान (1786-1799 सी.ई.)

तथाकथित अकबर महान के पश्चात हमारे मार्क्सिस्ट इतिहासज्ञों की दृष्टि में सैक्यूलरवार, प्रजातंत्र, उपनिवेशवाद विरोधी व सहिष्णुता का निष्कर्ष निकालने के लिए टीपू सुल्तान एक जीता जागता, सशरीर उदाहरण है। किन्तु सामयिक प्रलेखों से पूर्णतः स्पष्ट है कि धार्मिक आदेशों (9:73) से प्रोत्साहित कुर्ग और मलाबार के हिन्दुओं पर टीपू के अत्याचार उन क्षेत्रों के इतिहास में अद्वितीय ही थें। उपर्लिखित इतिहासज्ञों (मार्क्सिस्टों) की नस्ल ने, टीपू को, उसके द्वारा किये गये बर्बर अत्याचारों को पूर्णतः, छिपा कर, उस आतताई को सैक्यूलरवादी, राष्ट्रवादी, देवतातुल्य, प्रस्तुत करने में कोई भी, कमी नहीं रखी है, ताकि हम, मूर्ति पूजकों की पृथक-पृथक मूर्ख जाति, जो छद्म देवाताओं की भी पूजाकर लेते हैं, उसे वैसा ही मान लें। और सत्य तो यह है कि

बहुतांश में ये इतिहासकार ***अपने इस कुटिल उद्देश्य में,*** भले को पूरी तरह नहीं, कुछ सफल भी हो गये हैं, किन्तु महा महिम टीपू सुल्तान बड़े कृपालु और उदार थे कि उन्होंने ***अपने द्वारा*** हिन्दुओं पर किये गये अत्याचारों का वर्णन, स्वयं अपने ही, विवरणों में, छोड़ दिया है। इस प्रकार टीपू सुल्तान के स्वयं के विवरण और अन्य सामयिक प्रलेखों से दक्षिण भारत के इस मुजाहिद का वास्तविक स्वरूप, पूर्णतः प्रकाशित हो जाता है।

टीपू के पत्र

टीपू द्वारा लिखित पत्रों और सूचनाओं, के कुछ अंश निम्नांकित हैं। विख्यात इतिहासज्ञ, सरदार पाणिक्कर, ने लंदन के इण्डिया औफिस लाइब्रेरी से इन पत्रों के मूलों को खोजा था।

(1) अब्दुल खादर को 22 मार्च 1788 लिखित पत्र

''बारह हजार से अधिक हिन्दुओं को इस्लाम में धर्मान्तरित किया गया। इनमें अनेकों नम्बूदिरी ब्राह्मण थे। इस उपलब्धि का हिन्दुओं के मध्य व्यापक प्रचार किया जाए। स्थानीय हिन्दुओं को आपके पास लाया जाए, और उन्हें इस्लाम में धर्मान्तरित किया जाए। किसी भी नम्बूदिरी को छोड़ा न जाए।'' (भाषा पोशनी-मलयालम जर्नल, अगस्त 1923)

(12) कालीकट के अपने सेना नायक को लिखित पत्र (14 दिसम्बर, 1788)

''मैं तुम्हारे पास मीर हुसैन अली के साथ अपने दो अनुयायी भेज रहा हूँ। उनके साथ तुम सभी हिन्दुओं को बन्दी बना लेना और वध कर देना.....।'' मेरे आदेश हैं कि बीस वर्ष से कम उम्र वालों को कारागृह में रख लेना और शेष में से पाँच हजार को पेड़ पर लटकाकर वध कर देना।'' (वही)

(3) बदरुज़ समाँ खान को लिखित पत्र (19 जनवरी 1790)

"क्या तुम्हें ज्ञात नहीं है निकट समय में मैंने मलाबार में एक बड़ी विजय प्राप्त की है। चार लाख से अधिक हिन्दुओं को मुसलमान बना लिया गया था। मेरा अब अति शीघ्र ही उस पापी रमन नायर की ओर अग्रसर होने का निश्चय है। यह विचार कर कि कालान्तर में वह और उसकी प्रजा इस्लाम में धर्मान्तरित कर लिए जाएँगे। मैंने श्री रङ्गा पटनम वापस जाने का विचार त्याग दिया है।" (वही)

टीपू ने हिन्दुओं के प्रति यातनाओं के लिए ***मलाबार*** के विभिन्न क्षेत्रों के अपने सेना नायकों को अनेकों पत्र लिखे थे।

(4) ***"जिले के प्रत्येक हिन्दू का इस्लाम में आदर (धर्मान्तरण) किया जाना चाहिए; उन्हें उनके छिपने के स्थान में खोजा जाना चाहिए; उनके इस्लाम में सर्वव्यापी धर्मान्तरण के लिए सभी मार्ग व युक्तियाँ—सत्य और असत्य, कपट और बल-सभी का प्रयोग किया जाना चाहिए।"*** (हिस्टौरीकल स्कैचैज़ ऑफ दी साउथ ऑफ इण्डिया इन एन अटेम्पट टू ट्रेस दी हिस्ट्री ऑफ मैसूर—मार्क विल्क्स, खण्ड 2, पृष्ठ 120)

(5) मैसूर के तृतीय युद्ध (1792) के पूर्व से लेकर निरन्तर 1798 तक अफ़गानिस्तान के शासक, अहमदशाह अब्दाली के प्रपौत्र, ज़मनशाह, के साथ टीपू ने पत्र व्यवहार स्थापित कर लिया था। कबीर कौसर द्वारा लिखित, 'हिस्ट्री ऑफ टीपू सुल्तान' (पृष्ठ' 141-147) में इस पत्र व्यवहार का अनुवाद हुआ है। उस पत्र व्यवहार के कुछ अंश नीचे दिये गये हैं।

टीपू से ज़मन शाह के लिए पत्र

"महामहिम आपको सूचित किया गया होगा कि, मेरी महान अभिलाषा का उद्देश्य जिहाद है। इस युक्ति का इस भूमि पर परिणाम यह है कि अल्लाह, इस भूमि के मध्य, मुहम्मदीय उपनिवेश

के चिह्न की रक्षा करता रहता है, 'नोआ के आर्क' की भाँति रक्षा करता है और त्यागे हुए अविश्वासियों की बढ़ी हुई भुजाओं को काटता रहता है।"

(6) टीपू से ज़मनशाह को, पत्र दिनांक शहबान का सातवाँ 1211 हिजरी (तदनुसार 5 फरवरी 1797) : *"...इन परिस्थितियों में जो, पूर्व से लेकर पश्चिम तक, सूर्य के स्वर्ग के केन्द्र में होने के कारण, सभी को ज्ञात हैं। मैं विचार करता हूँ कि अल्लाह और उसके पैगम्बर के आदेशों से एक मत हो हमें अपने धर्म के शत्रुओं के विरूद्ध जिहाद क्रियान्वित करने के लिए, संगठित हो जाना चाहिए। इस क्षेत्र के पन्थ के अनुयायी, शुक्रवार के दिन एक निश्चिय किये हुए स्थान पर सदैव एकत्र होकर इन शब्दों में प्रार्थना करते हैं। "हे अल्लाह! उन लोगों को, जिन्होंने पन्थ का मार्ग रोक रखा है, कत्ल कर दो। उनके पापों को लिए, उनके लिए निश्चिय दण्ड द्वारा, उनके शिरों को दण्ड दो।"*

मेरा पूरा विश्वास है कि सर्वशक्तिमान अल्लाह अपने प्रियजनों के हित के लिए उनकी प्रार्थनाएं स्वीकार कर लेगा और पवित्र उद्देश्य की गुणवत्ता के कारण हमारे सामूहिक प्रयासों को उस उद्देश्य के लिए फलीभूत कर देगा। और इन शब्दों को सफल करेगा *"तेरी (अल्लाह की) सेनायें ही विजयी होगी", तेरे प्रभाव से हम विजयी और सफल होंगे।*

शिला लेख

टीपू की बहुचर्चित तलवार* पर फारसी भाषा में निम्नांकित शब्द लिखे थे–*"मेरी चमकती तलवार अविश्वासियों के विनाश के लिए आकाश की कड़कती बिजली है। तू हमारा मालिक है, हमारी मदद कर उन लोगों के विरूद्ध जो अविश्वासी हैं। हे मालिक! जो मुहम्मद के मत को विकसित करता है, उसे विजयी बना। जो मुहम्मद के मत को नहीं मानता उसकी बुद्धि को भ्रष्ट कर; और जो ऐसी मनोवृत्ति रखते हैं, हमें उनसे दूर रख। अल्लाह मालिक बड़ी विजय में तेरी*

मदद करे, हे मुहम्मद!'' (हिस्ट्री ऑफ मैसूर, सी.एच. राउ, खण्ड 3, पृष्ठ 1073)

*ब्रिटिश म्यूजियम लण्डन का जर्नल

हमारे सैक्यूलरिस्ट इतिहासज्ञों की ज्ञान के लिए श्री रङ्गापटनम दुर्ग में प्राप्त टीपू का एक शिला लेख पर्याप्त महत्वपूर्ण है। शिलालेख के शब्द इस प्रकार हैं– ***''हे सर्वशक्तिमान अल्लाह! गैर-मुसलमानों के समस्त समुदाय को समाप्त कर दे। उनकी सारी जाति को बिखरा दो, उनके पैरों को लड़खड़ा दो। और उनकी बुद्धियों को फेर दो! मृत्यु को उनके निकट ला दो उनके पोषण के साधनों को समाप्त कर दो। उनकी जिन्दगी के दिनों को कम कर दो। उनके शरीर सदैव उनकी चिंता के विषय बने रहें, उनके नेत्रों की दृष्टि छीन लो, उनके चेहरे काले कर दो, उनको बोलने के अङ्ग को नष्ट कर दो! उन्हें 'शिदौद' की भाँति कत्ल कर दो, तथा फ़रोहा की तरह डुबा दो, और भयङ्करतम क्रोध के साथ उनसे मिलो। हे बदला लेने वाले! हे संसार के मालिक पिता! मैं उदास हूँ,! हारा हूँ,! मुझे अपनी मदद दो!''*** (वही, पृष्ठ 1074)

टीपू का आत्म लिखित का जीवन चरित्र

टीपू की फ़ारसी में लिखी, 'सुल्तान-उत-तवारीख' और 'तारीख-ई-खुदादादी' नाम वाली दो जीवनियाँ हैं। बाद वाली पहली जीवनी का लगभग नकल है। ये दोनों ही जीवनियाँ लंदन की इण्डिया आफ़िस लाइब्रेरी में एम. एस. एस. क्रम 521 और 299 क्रमानुसार रखी हुई हैं। इन दोनों जीवनियों में हिन्दुओं पर उसके द्वारा ढाये गये अत्याचारों, और दी गई यातनाओं, का विस्तृत वर्णन टीपू ने किया है। यहाँ तक कि मोहिब्बुल हसन, जिसने अपनी पुस्तक, हिस्ट्री ऑफ टीपू सुल्तान, में टीपू को एक समझदार, उदार, और सैक्यूलर शासक प्रस्तुत करने में कोई भी कमी नहीं रखी थी, को भी स्वीकार करना पड़ा था कि ***''तारीख यानी कि टीपू की जीवनियों के पढ़ने के बाद टीपू का जो चित्र उभरता है, वह एक ऐसे धर्मान्ध, पन्थ के लिए***

मतवाले, या पागल, का है जो मुस्लिमेतर लोगों के वध और उनके इस्लाम में बलात परिवर्तन कराने में ही सदैव लिप्त रहा आया।'' (हिस्ट्री ऑफ टीपू सुल्तान, मोहिब्बुल हसन, पृष्ठ 357)

प्रत्यक्ष दर्शियों के वर्णन

इस्लाम के प्रोत्साहन के लिए टीपू द्वारा व्यवहार में लाये अत्याचारों के प्रत्यक्ष दर्शियों में से एक पुर्तगाली यात्री और इतिहासकार, फ्रा बारटोलोमाको है। उसने 1790 में, जो कुछ मलाबार में देखा उसे उसने अपनी पुस्तक, 'वौयेज टू ईस्ट इण्डीज' में लिखा था :*''कालीकट में अधिकांश आदमियों और औरतों को फाँसी पर लटका दिया जाता था। पहले माताओं को उनके बच्चों को उनकी गर्दनों से बाँधकर लटकाकर फाँसी दी जाती थी। उस बर्बर टीपू द्वारा नङ्गे हिन्दू और ईसाई लोगों को हाथियों की टांगों से बँधवा दिया जाता था और हाथियों को तब तक दौड़ाया जाता था जब तक कि उन सर्वथा असहाय, निरीह, विपत्ति ग्रस्त प्राणियों के शरीरों के चिथड़े-चिथड़े नहीं हो जाते थे। मन्दिरों और गिरजों में आग लगाने, खण्डित करने, और ध्वंस करने के आदेश दिये जाते थे। यातनाओं का उपर्लिखित रूपान्तर टीपू की सेना से बच भागने वाले और वाराप्पुझा पहुँच पाने वाले अभागे विपत्ति ग्रस्त व्यक्तियों से वृत्तों के आधार पर था....मैंने स्वयं अनेकों ऐसे विपत्ति ग्रस्त व्यक्तियों का वाराप्पुझा नदी को नाव द्वारा पार कर जाने के लिए सहयोग किया था।''* (वौयेज टू ईस्ट इण्डीज़ : फ्रा बारटोलोमाको, पृष्ठ 141-142)

टीपू द्वारा मन्दिरों का विध्वंस

दी मैसूर गज़ेटियर बताता है कि *''टीपू ने दक्षिण भारत में आठ सौ से अधिक मन्दिर नष्ट किये थे।''*

के.पी. पद्मनाभ मैनन द्वारा लिखित, 'हिस्ट्री ऑफ कोचीन', और श्रीधरन मैनन द्वारा लिखित, 'हिस्ट्री ऑफ केरल' उन नष्ट किये गये, मन्दिरों में से कुछ का वर्णन करते हैं–*''चिन्गम महीना 952 मलयालम ऐरा तदनुसार अगस्त 1786 में टीपू की फौज ने प्रसिद्ध पेरुमनम*

मन्दिर की मूर्तियों का विध्वंस किया और त्रिचूर और करवन्नूर नदी के मध्य के सभी मन्दिरों का विध्वंस कर दिया। इरिनेजालाकुडा और थिरुवाञ्चीकुलम मन्दिरों को भी टीपू की सेना द्वारा खण्डितकर नष्ट किया गया।'' ''अन्य प्रसिद्ध मन्दिरों में से कुछ, जिन्हें लूटा गया, और नष्ट किया गया, वे थे–त्रिप्रङ्गोट, थिचैम्बरम, थिरुमवाया, थिरवन्नूर, कालीकट थाली, हेमम्बिका मन्दिर पालघाट का जैन मन्दिर, माम्मियूर, परम्बाताली, पेम्मायान्दु, थिरवनजीकुलम, त्रिचूर का बडक्खुमन्नाथन मन्दिर, बैलूर का शिवा मन्दिर आदि।''

''टीपू की व्यक्तिगत डायरी के अनुसार चिराकुल राजा ने सेना द्वारा स्थानीय मन्दिरों को विनाश से बचाने के लिए, टीपू सुल्तान को चार लाख रूपये का सेना चाँदी देने का प्रस्ताव रखा था। किन्तु टीपू ने उत्तर किया था, ''यदि सारी दुनिया भी मुझे दे दी जाए तो भी मैं हिन्दू मन्दिरों को नष्ट करने से नहीं रुकूँगा।'' (फ्रीडम स्ट्रगिल इन केरल : सरदार के. एम. पाणिक्कर)

टीपू द्वारा केरल की विजय के प्रलयंकारी व भयावह परिणामों का सविस्तार वर्णन, 'गज़ैटियर ऑफ केरल' के सम्पादक और विख्यात इतिहासकार ए. श्रीधर मैनन द्वारा किया गया है। उसके अनुसार, *''हिन्दू लोग, विशेष कर नायर और उनके सरदार लोग जिन्होंने इस्लामी आक्रमणकारियों का प्रतिरोध किया था, टीपू के क्रोध के प्रमुख भाजन बन गये थे। सैकड़ों नायर महिलाओं और बच्चों को भगा लिया गया और श्रीरङ्ग पटनम ले जाया गया या डचों के हाथ दास के रूप में बेच दिया गया था। हजारों ब्राह्मणों, क्षत्रियों और हिन्दुओं के अन्य सम्माननीय वर्गों के लोगों को बलात इस्लाम में धर्मान्तरित कर दिया गया था तथा उन्हें उनके पैतृक घरों से भगा दिया गया था।''*

टीपू सुल्तान और भारतीय राष्ट्रवाद

हमारे मार्क्सिस्ट इतिहासकारों द्वारा टीपू सुल्तान जैसे हृदय हीन और अत्याचारी, को वीर पुरुष के रूप में स्वागत किया गया है। किन्तु

महत्वपूर्ण प्रश्न है कि टीपू का किस राष्ट्रीयता से सम्बन्ध था और उसके जीवन की प्रेरणा स्रोत कौन-सी राष्ट्रीयता थी ? किसी राष्ट्र का जन्म सभ्यता से होता है। राष्ट्रीयता किसी सभ्यता विशेष की मानवीय महत्त्वाकांक्षा होती है, जिसका उदय एक विचार प्रवाह से होता है, जो ऐसी उदीयमानता की प्रतिरूप सांस्कृतिक लक्षण से दिशा पाता है। टीपू का सम्बन्ध उस राष्ट्र से कभी भी नहीं रहा जिसके गृह स्थान का, उसके पन्थ के सह मतावलम्बियों ने, एक हजार वर्ष तक विध्वंस किया, और लूटा। वह हिन्दू भूमि का एक मुस्लिम शासक था। ***जैसा उसने स्वयं कहा, उसके जीवन का उद्देश्य अपने राज्य को दारुल इस्लाम (इस्लामी देश) बनाना था।*** केवल ब्रिटिशों के विरूद्ध युद्ध करने और उनके द्वारा मारे जाने मात्र से कोई राष्ट्रवादी नहीं बन जाता। ***टीपू ब्रिटिशों से अपने ताज की सुरक्षा के लिए लड़ा था न कि देश को विदेशी गुलामी से मुक्त कराने के लिए।*** उसने तो स्वयं, भारत पर आक्रमण करने, और राज्य करने के लिए अफगानिस्तान के सुलतान ज़हनशाह को आमंत्रित किया था। (जहनशाह को लिखे पत्रों को पढ़िये)

सैक्यूलरिस्ट, जैसा कहना पसन्द करते हैं, कि इण्डियन नेशनलिज्म अपने प्रादुर्भाव के समय से ही हिन्दू राष्ट्रीयता के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं रही है। हमारे देशवासियों के हृदयों में, अलैक्ज़ैण्डर से लेकर हूण, और बिन कासिम से लेकर ब्रिटिश सभी आक्रमणकारियों के विरूद्ध, अपने न रुकने वाले प्रतिरोध के लिए, अभीष्ट प्रेरणा इसी राष्ट्रीयता की भावना से प्राप्त होती रही है। टीपू जैसा एक मुजाहिद, हमारे राष्ट्रीय गर्व और मान्यताओं के लिए, केवल अनुपयुक्त एवम् बेमेल ही नहीं है, परन्तु घातक भी है। भारत के सैक्यूलरिस्टों की समझ में आ जाना चाहिए कि इन मुस्लिम अत्याचारियों और आतताइयों के, हिन्दुओं पर किये गये अत्याचारों, को छिपाकर, तथा उन्हें सैक्यूलरिज्म का लबादा पहनाने से, कोई कैसा भी लाभ नहीं हो सकेगा। इससे और अधिक मात्रा में गजनबी, गौरी, मुगल, बाबर और टीपू पैदा होंगे जो सैक्यूलरिज्म के जनाजे, को देश में ढोते रहेंगे।

सामान्य हिन्दुओं को भी समझ लेना चाहिए कि; अपने देश के इतिहास का पूर्ण ज्ञान; और अपने पूर्वजों के भाग्य, दुर्भाग्य, से पाठ सीख लेना अनिवार्य है; क्योंकि इतिहास की पुनरावृत्ति होती है, उन मूर्खों के लिए, जो अपने इतिहास से अभीष्ट पाठ नहीं लेते, और चेतावनियों को नहीं समझ पाते, या समझना नहीं चाहते।

अध्याय–4

कुरान में गैर-मुसलमानों के विरूद्ध जिहाद और भेदभाव के आदेश

–डा. के वी. पालीवाल

कुरान की ये आयतें हैं जो मुसलमानों और गैर-मुसलमानों के बीच ईर्ष्या, द्वेष, हिंसा, जिहाद और घृणा फैलाने का संदेश देती हैं। सभी आयतें मक्तवा अल-हसनात, रामपुर (उत्तर प्रदेश) द्वारा प्रकाशित **'कुरान मजीद'** (1980) मुहम्मद फारुक खाँ के हिन्दी अनुवाद से ली गई हैं।

1. अल्लाह के अलावा किसी अन्य को न पूजो

1. अल्लाह और उसके 'रसूल' के हुक्म पर चलो, आपस में न झगड़ो, नहीं तो तुम में कमज़ोरी आ जाएगी और तुम्हारी हवा उखड़ जायेगी; और धैर्य से काम लो ! **(8 : 46, पृ. 355)**

2. (हे मुहम्मद !) हमने तुम्हें लोगों के लिए 'रसूल' बनाकर भेजा है और (इस पर) गवाह की हैसियत से अल्लाह काफ़ी है। जिसने 'रसूल' का आदेश माना वास्तव में उसने अल्लाह का आदेश माना **(4 : 79-80, पृ. 235)**

3. हे वे लोगो जो ईमान लाये हो ! अल्लाह का हुक्म मानो और 'रसूल' का हुक्म मानो, और अपना किया–धरा बरबाद न करो। **(47 : 33, पृ. 934)**

4. वही है जिसने अपने 'रसूल' को मार्गदर्शन और सच्चे 'दीन' (सत्य धर्म) के साथ भेजा, ताकि उसे समस्त 'दीन' पर प्रभुत्व प्रदान करे, चाहे मुश्रिकों (मूर्त्ति पूजकों) को यह ना पसन्द ही क्यों न हो। **(9 : 33, पृ. 373)**

2. मुसलमान आपस में भाई-भाई

1. और यदि ईमानवालों के दो गिरोह परस्पर लड़ पड़ें तो उनके बीच सुलह-सफ़ाई करा दो। (49 : 9, पृ. 950)

2. ईमानवाले तो भाई-भाई हैं। तो अपने दो भाइयों के बीच सुलह-सफाई करा दो और अल्लाह का डर रखो ताकि तुम पर दया की जाए। (49 : 10, पृ. 950)

3. तो यदि वे 'तौबा' कर लें और 'नमाज' कायम करें और 'जकात' दें तो तुम्हारे 'दीनी' भाई हैं। और जानने वालों के लिए हम अपनी 'आयतें' खोल-खोलकर बयान करते हैं। (9 : 11, पृ. 369)

3. गैर-मुसलमानों के प्रति पक्षपातपूर्ण आदेश

1. अल्लाह उनको मार्ग नहीं दिखाता जो अवज्ञाकारी हैं। (9 : 24, पृ. 371)

2. अल्लाह 'काफ़िरों' को मार्ग नहीं दिखाता (9 : 37, पृ. 374)

3. तो मेरा डर रखो, हे बुद्धि वालो ! (2 : 197, पृ. 159)

4. हे लोगो ! अपने 'रब' का डर रखो। निश्चय ही उस घड़ी का भूकम्प बड़ी (भयानक) चीज़ है। (22 : 1 पृ. 589)

5. और यदि तेरा 'रब' चाहता तो धरती में जितने लोग हैं, वे सब के सब ईमान ले आते, फिर क्या तू लोगों को विवश करेगा कि वे 'ईमान' वाले जो जाएं। (10 : 99, पृ. 410)

6. और अल्लाह के सिवा किसी ऐसे को न पुकार, जो न तुझे लाभ पहुँचा सकें और न हानि, यदि तूने ऐसा किया तो तू जालिमों में से होगा। (10 : 106, पृ. 411)

7. और (बादलों की) गरज और फिरिश्ते उसके भय के कारण उसी की प्रशंसा के साथ 'तसबीह' करते हैं, वह कड़कती बिजलियाँ भेजता है फिर उन्हें जिस पर चाहता है, गिरा देता है। (13 : 13, पृ. 456)

8. और याद करो जब तुम्हारे 'रब' ने तुम्हें सूचित कर दिया था कि तुमने कृतज्ञता दिखलाई तो मैं तुम्हें और अधिक दूँगा; और यदि अकृतज्ञ बने, तो मेरी यातना बहुत सख्त है (14 : 7, पृ. 465)

9. और इससे पथभ्रष्ट वह केवल उन्हीं लोगों को करता है जो अवज्ञाकारी होते हैं। (2 : 26, पृ. 130)

10. अल्लाह 'काफिरों' को घेरे हुए है। (2 : 19, पृ. 129)

11. जिसे अल्लाह मार्ग से भटका दे, उसे कोई मार्ग पर लाने वाला नहीं। (7 : 186, पृ. 342)

12. अल्लाह 'ज़ालिमों' को सीधा मार्ग नहीं दिखाया करता। (2 : 258, पृ. 173)

13. अल्लाह उसका तुमसे हिसाब लेगा। फिर जिसे चाहेगा क्षमा करेगा और जिसे चाहेगा यातना देगा, अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है। (2 : 284, पृ. 179)

14. और अल्लाह के मार्ग में खर्च करो। (2 : 195, पृ. 158)

15. वह जिसे चाहता है सीधा मार्ग दिखाता है। (2 : 142, पृ. 148)

16. जो 'इस्लाम' के सिवा कोई और 'दीन' चाहेगा तो वह कभी उससे (अल्लाह से) कबूल नहीं किया जाएगा और वह 'आखिरत' में टोटा पाने वालों में से होगा। (3 : 85, पृ. 198)

17. निश्चय ही उन लोगों ने कुफ्र किया जिन्होंने कहा "अल्लाह" तो तीन में एक है, हालांकि अकेले 'इलाह' (पूज्य) के सिवा कोई 'इलाह' नहीं है। (5 : 73, पृ. 271)

4. गैर-मुसलमान शत्रु समान

1. जो कोई अल्लाह और उसके 'फरिश्तों' और उसके 'रसूलों' और 'जिबरील' और 'मीकाइल' का शत्रु हुआ तो ऐसे 'काफ़िरों' का शत्रु अल्लाह है (2 : 98, पृ. 141)

2. निस्संदेह 'काफ़िर' तुम्हारे (ईमानवालों के) खुले दुश्मन हैं। **(4 : 101, पृ. 239)**

3. और जो कोई अल्लाह और उसके 'रसूल' का विरोध करें तो निस्संदेह अल्लाह भी कड़ी सजा देने वाला है। **(8 : 13 पृ. 351)**

4. ओ ईमान वालो! 'मुश्रिक' (मूर्त्तिपूजक) तो नापाक हैं। तो इस वर्ष के पश्चात् ये 'मस्जिदें हराम' (काबा) के पास फटकने न पाऐं।' **(9 : 28, पृ. 371)**

5. निसंदेह अल्लाह ने काफ़िरों' के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी हैं। **(4 : 102, पृ. 240)**

6. जिन लोगों ने कुफ्र किया और अल्लाह के मार्ग से रोका और 'काफ़िर' ही रहकर मर गए, अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा नहीं करेगा। **(47 : 34, पृ. 934)**

7. और काफ़िरों के लिए उसने दुखदायिनी यातना तैयार कर रखी है। **(33 : 8, पृ. 746)**

8. कह दो : 'अल्लाह' और 'रसूल' की आज्ञा का पालन करो। फिर यदि वे मुँह मोड़ें लो जान लें कि अल्लाह 'काफिरों' से प्रेम नहीं करता।' **(3 : 32, पृ. 190)**

9. निश्चय ही (भूमि पर) चलने वाले सबसे बुरे जीव अल्लाह की दृष्टि में वे लोग हैं जिन्होंने 'कुफ़्' किया, फिर वे ईमान नहीं लाते। **(8 : 55, पृ. 357)**

10. जो 'काफिर' हैं, जालिम वही हैं। **(2 : 254, पृ. 171)**

5. गैर-मुसलमानों से मित्रता न करो

1. हे 'ईमानवालो' तुम 'यहूदियों' और 'ईसाइयों' को मित्र न बनाओ। वे आपस में एक दूसरे के मित्र हैं और जो कोई तुमसें से उनको मित्र बनाएगा वह उन्हीं में से होगा। **(5 : 51, पृ. 267)**

2. हे ईमानवालो! तुमसे पहले जिनको 'किताब' दी गई थी, जिन्होंने तुम्हारे 'दीन' की हंसी और खेल बना लिया है उन्हें और 'काफ़िरों' को अपना मित्र न बनाओ और अल्लाह से डरते रहो, यदि तुम ईमान वाले हो। **(5 : 57, पृ. 268)**

3. फिर हमने उनके बीच 'कियामत' के दिन तक के लिए वैमनस्य व द्वेष की आग भड़का दी है। **(5 : 14, पृ. 260)**

4. वे चाहते हैं कि जिस तरह वे 'काफ़िर' हुए हैं उसी तरह तुम भी 'काफ़िर' हो जाओ। फिर तुम एक-जैसे हो जाओ। तो उनमें से किसी को साथी न बनाना, जब तक जिन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर दूसरे संरक्षक–मित्र बना लिए हैं, उनकी मिसाल ऐसी है जैसे मकड़ी हो जिसने एक घर बना रखा है और निश्चय ही सब घरों में कमजोर घर मकड़ी का घर होता है। क्या ही अच्छा होता यदि वे लोग जानते। **(29 : 41, पृ. 706)**

5. हे ईमानवालो! अपनों के सिवा दूसरों को अपना भेदी न बनाओ, ये तुम्हें क्षति पहुँचाने में कुछ भी उठा नहीं रखेंगे....इनका द्वेष तो इनके मुँह से व्यक्त हो चुका है और जो कुछ इनके सीने छिपाए हुए हैं, वह इससे भी बढ़कर है। **(3 : 118, पृ. 203)**

6. हे ईमानवालो! अपने बापों और अपने भाइयों को अपना मित्र न बनाओ यदि वे ईमान की अपेक्षा कुफ्र को पंसद करें और तुममें से जो कोई उनसे मित्रता का नाता जोड़ेगा तो ऐसे ही लोग ज़ालिम होंगे। **(9 : 23, पृ. 370)**

7. ईमानलाने वालों को चाहिए कि वे ईमानवालों के विरूद्ध काफिरों को अपना संरक्षक-मित्र न बनाएँ और जो कोई ऐसा करेगा तो उसका अल्लाह से कोई भी नाता नहीं। **(3 : 28, पृ. 189)**

8. हे 'ईमानवालो!' ईमानवालों के मुकाबलें में काफ़िरों को मित्र न बनाओ। क्या तुम अपने ही विरूद्ध अल्लाह के लिए एक स्पष्ट तर्क संचित करना चाहते हो? **(4 : 144, पृ. 247)**

9. हे ईमानवालो! तुम मेरे दुश्मनों को और अपने दुश्मनों को अपना न बनाओ। **(60 : 1, पृ. 1029)**

6. गैर-मुसलमानों के लिए जहन्नम की आग

1. और जो कोई अल्लाह और उसके 'रसूल' की अवज्ञा करेगा और उसकी सीमाओं से आगे बढ़ेगा, उसे अल्लाह आग (जहन्नम) में डालेगा, जहाँ उसे सदा रहना होगा और उसके लिए अपमानजनक यातना है **(4 : 14, पृ. 223)**

2. जिन लोगों ने हमारी आयतों को इंकार किया, उन्हें हम जल्द अग्नि में झोंक देंगे। जब उनकी खालें पक जाएँगी तो हम उन्हें और दूसरी ख़ालों से बदल देंगे ताकि वे यातना का रसास्वादन कर लें। **(4 : 56, पृ. 231)**

3. निसंदेह जिन लोगों ने 'कुफ्र' किया है 'किताबवालों' और 'मुश्रिकों' में से वे 'जहन्नम' की आग में होंगे। जहाँ वे सदा रहेंगे। यही लोग दुष्टतम हैं। **(98 : 6, पृ. 1184)**

4. यह बदला है अल्लाह के शत्रुओं का (जहन्नम की) आग। इसी में उनका सदा घर है, इसके बदले में कि वे हमारी 'आयतों' का इंकार करते थे। **(41 : 28, पृ. 865)**

5. (कहा जायेगा) घेर लाओ उन लोगों को जिन्होंने जुल्म किया और उनके जोड़ीवालों (पत्नियों) को और उसको जिसे ये पूजते थे अल्लाह के सिवा, फिर उन सबको भड़कती आग ('जहन्नम') का मार्ग दिखाओ। **(37 : 22-23, पृ. 799)**

6. और जिन लोगों ने 'कुफ्र' किया और हमारी 'आयतों' को झुठलाया वही आग (जहन्नम) में रहने वाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे। **(2 : 39, पृ. 132)**

7. यह है (तुम्हारी सज़ा) इसका मज़ा चखो, और यह भी (जान लो) कि काफ़िरों के लिए 'आग' (जहन्नम) की यातना है। **(8 : 14, पृ. 351)**

8. (कहा जायेगा) निश्चय ही तुम और वह जिसे तुम अल्लाह के सिवाय पूजते थे, 'जहन्नम' का ईधन हो। तुम अवश्य उसके घाट उतरोगे। **(21 : 98, पृ. 585)**

9. ये ('ईमानवाले' और 'काफ़िर') दो प्रतिवादी हैं जो अपने 'रब' के बारे में झगड़ते हैं। तो जिन लोगों ने कुफ्र किया, उनके लिए अग्नि के वस्त्र काटे जा चुके हैं–उनके सिरों पर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा जिससे जो कुछ उनके पेटों में है वह और (उनकी) खालें गल जायेंगी और उनके लिए लोहे के गुर्ज़ (गदायें) होंगे (जिनसे उनकी गत बनाई जायेगी)। जब कभी वे दुःख के कारण उस ('जहन्नम') से निकलना चाहेंगे फिर उसी में लौटा दिए जायेंगे (कहा जायेगा) चखो मज़ा जलने की यातना का। **(22 : 19, पृ. 592)**

10. एक ओर यह है और (दूसरी ओर) सरकशों के लिए निश्चय ही बुरा ठिकाना है 'जहन्नम' जिसमें वे प्रवेश करेंगे क्या ही बुरी आरामगाह है। यह लो चखो-खौलता हुआ पानी और पीप-रक्त साथ ही कुछ और इसी से मिलता जुलता, भिन्न-भिन्न प्रकार लो। लो यह एक पूरा गिरोह तुम्हारे साथ घुसा चला आ रहा है। न मिले कोई जगह इनको। ये आग में जलने वाले हैं। **(38 : 55-59, पृ.824)**

11. अल्लाह ने इन 'मुनाफिक' पुरूषों और 'मुनाफ़िक' स्त्रियों और 'काफ़िरों' से जहन्नम की आग का वादा किया है जिसमें वे सदा रहेंगे। यही उन्हें बस है। अल्लाह ने उन्हें लानत की और उनके लिए स्थाई यातना है। **(9 : 68, पृ. 379)**

12. जिन्होंने 'कुफ्र' किया और हमारी 'आयतों' को झुठलाया वही लोग 'जहन्नम' वाले हैं। **(5 : 10, पृ. 259)**

13. वे (काफ़िर) चाहेंगे कि (जहन्नम की) आग से निकल जाऐं परन्तु वे उससे निकल नहीं सकेंगे। उनके लिए स्थाई यातना है। **(5 : 37, पृ. 264)**

14. (हे मुहम्मद) और 'मुनाफिक' पुरुषों और 'मुनाफिक' स्त्रियों और 'मुशिरक' पुरुषों और 'मुशिरक' स्त्रियों को यातना दे, जो अल्लाह

के बारे में बुरा गुमान रखते हैं। उन्हीं पर बुरा चक्कर आ पड़ा है और अल्लाह उन पर क्रुद्ध हुआ और उन पर लानत की, और उसने उनके लिए 'जहन्नम' तैयार कर रखा है, और वह पहुँचने की बुरी जगह है। (48 : 6, पृ. 940)

15. और जिन लोगों ने हमारी 'आयतों' को झुठलाया है उन्हें यातना पहुँच के रहेगी, इसलिए कि वे अवज्ञा करते हैं। (6 : 49, पृ. 289)

16. और जिन लोगों ने 'कुफ्र' किया है वे 'जहन्नम' की ओर फेर लाए जायेंगे ताकि अल्लाह नापाक को पाक से छांट कर अलग करे और नापाक को एक-दूसरे पर रखकर एक ढ़ेर बनाए और फिर उसे 'जहन्नम' में झोंक दे। (8 : 36-37, पृ. 354)

17. किसी नबी के लिए यह सम्भव नहीं कि उसके पास कैदी हों जब तक कि वह धरती में (विरोधी दल को) कुचल कर रख न दे। (8 : 67, पृ. 359)

18. यह न समझो कि जिन लोगों ने 'कुफ्र' किया है वे धरती में हरा देने वाले हैं। उनका ठिकाना आग है—और वह क्या ही बुरा ठिकाना है। (24 : 57, पृ. 632)

19. पकड़ो! इसको और इसे जकड़ लो फिर (जहन्नम की) भड़कती आग में उसे डाल दो फिर एक जंजीर में जो सत्तर हाथ लम्बी है, इसे बांध दो। यह महिमाशाली अल्लाह पर ईमान नहीं रखता है। (69 : 30-33, पृ. 1071)

20. जिन लोगों ने 'कुफ्र' किया उनसे कह दो (ओ मुहम्मद) कि जल्दी ही तुम पराजित होंगे, 'जहन्नम' की ओर हो के आओगे और वह क्या ही बुरा ठिकाना है (3.12, पृ. 187)

21. और इसमें से जो लोग 'काफ़िर' हैं हमने उनके लिए दुःखद यातना तैयार कर रखी है। (4 : 161, पृ. 250)

22. काफिरों के लिए अपमानित करने वाली यातना है। (2 : 90, पृ. 140)

7. मुसलमानों से प्रेम और काफिरों को जहन्नम का दण्ड

1. यह इसलिए कि इन लोगों ने अल्लाह और उसके 'रसूल' का विरोध किया और जो कोई अल्लाह और उसके 'रसूल' का विरोध करे, तो निसंदेह अल्लाह भी कड़ी सज़ा देने वाला है। (8 : 13, पृ. 351)

2. जो कोई अल्लाह के साथ (किसी को) शरीक करेगा उस पर अल्लाह ने 'जन्नत' हराम कर दी है और उसका ठिकाना आग (जहन्नम) है और जालिमों का कोई सहायक नहीं। (5 : 72, पृ. 271)

3. तो जो लोग 'ईमान ले आए' अल्लाह ने उन्हें अपनी अनुज्ञा से उस सच्चाई का मार्ग दिखा दिया, जिसमें लोगों ने मतभेद किया था। अल्लाह जिसे चाहता है, सीधा मार्ग दिखा देता है। (2 : 213, पृ. 161)

4. 'मुशिरक' स्त्रियों से जब तक वे 'ईमान' न लाऐं विवाह न करो। ईमानवाली एक लौंडी, एक 'मुशिरक' स्त्री से अच्छी है, यद्यपि वह तुम्हें भली लगे। और 'मुशिरक' पुरुषों से (अपनी स्त्रियों का) विवाह न करो जब तक कि वे ईमान न लाऐं। ईमानवाला एक गुलाम, एक 'मुशिरक' से अच्छा है यद्यपि वह भला लगे। (2 : 221, पृ. 163)

5. और जो कोई अल्लाह का और उसके 'रसूल' का हुक्म मानेगा, उसे वह ऐसे बागों (जन्नत) में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रहीं होंगी, और जो कोई पलट जायेगा, उसे वे दुखदायिनी यातना देगा। (48 : 17, पृ. 942)

6. निश्चय ही अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाये और अनुकूल कर्म किए ऐसे बागों में (जन्नत) दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें वह रही होंगी, और 'कुफ्र' करने वाले सुख (सांसारिक) भोग रहे हैं और खाते हैं जैसे जानवर खाते हैं और ('जहन्नम' की) 'आग' उनका ठिकाना है। (47 : 12, पृ. 930)

7. 'नमाज़' कायम करो और 'ज़कात' दो और 'रसूल' का हुक्म मानो ताकि तुम पर दया की जाए। **(24 : 56, पृ. 632)**

8. उस दिन 'जन्नत' वालों के ठहरने की जगह भी उत्तम होगी और दोपहर में आराम करने वाले को स्थान भी बहुत अच्छा होगा... ..वह दिन काफ़िरों के लिए कठिन होगा। **(25 : 24-26, पृ. 640)**

9. और हम में.कुछ तो मुस्लिम हैं और हममें कुछ मार्ग से फिरे हुए हैं। तो जो मुस्लिम हुए उन्होंने तो भलाई का मार्ग पसन्द कर लिया। रहे वे लोग जो मार्ग से फिरे हुए हैं, तो वे 'जहन्नम' का ईंधन हुए **(72 : 14-15, पृ. 1086)**

10. हम तुमसे और अल्लाह के सिवा जिसे भी तुम पूजते हो उससे अलग हैं हम तुम्हें नहीं मानते। और हमारे और तुम्हारे बीच सदा के लिए शत्रुता और विद्वेष उभर आया है जब तक कि तुम अकेले अल्लाह पर 'ईमान' न लाओ—बस यह है कि इब्राहिम ने अपने बाप से इतनी बात कह दी थी कि मैं तुम्हारे लिए क्षमा की प्रार्थना अवश्य कर दूँगा और अल्लाह के आगे तुम्हारे लिए कुछ भी करना मेरे बस में नहीं है **(60 : 4, पृ. 1030)**

11. मुहम्मद, अल्लाह के 'रसूल' हैं। और जो लोग उनके साथ हैं वे 'काफिरों' के मुकाबले में कठोर और आपस में दयालु हैं। **(48 : 29, पृ. 945)**

12. ये वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की, फिर उन्हें बहरा कर दिया और उनकी आँखों को अन्धा कर दिया। **(47 : 23, पृ. 932)**

13. तो इन 'काफ़िरों' पर अल्लाह की फिटकार है। **(2 : 89, पृ. 140)**

14. फिर जब उन्होंने हमारी यातना देखी, तो कहने लगे—हम अल्लाह पर जो अकेला है, ईमान लाए और जिस (किसी) को हम उसका सहयोगी ठहराते थे उसको हमने छोड़ दिया। परन्तु ऐसा न था कि उनका 'ईमान' लाना उनके काम आता जबकि उन्होंने हमारी

यातना को देख लिया—यह अल्लाह की रीति है जो उसके बन्दों में पहले से चली आई है—और उस समय 'काफ़िर' टोटे में पड़ गए। (40 : 84-85, पृ. 858)

15. जो हमारी 'आयतों पर ईमान' लाए और मुस्लिम थे—दाखिल हो जाओ जन्नत में पूरी खुशियों के साथ तुम और तुम्हारे संघाती (पत्नी)। उस ('जन्नत वालों') के आगे सोने की तश्तरियों और प्याले गर्दिश करेंगे और वहाँ हर वह चीज़ होगी आत्माएं जिसे चाहे और आँखें जिससे लज्जत पाऐं और तुम उसमें सदैव रहोगे और यह वह 'जन्नत' है जिसके तुम वारिस बनाए गए उन कर्मों के बदले में जो तुम करते थे। तुम्हारे लिए यहाँ बहुत मेवे हैं जिन्हें तुम खाओगे। (43 : 69-73, पृ. 897)

16. (हे नबी) कह दो ! हे लोगो! मैं तो बस तुम्हारे लिए एक प्रत्यक्ष सचेत करने वाला हूँ। तो जो लोग 'ईमान' लाये और अनुकूल कर्म किए, उनके लिए क्षमा और सम्मानित आजिविका है और जिन लोगों ने हमारी आयतों के बारे में हमें हराने के लिए विरोध-भाव से दौड़-धूप की, वही भड़कती 'आग' (जहन्नत में रहने) वाले हैं। (22 : 49-51, पृ. 597)

17. राज्य उस दिन (कयामत) अल्लाह का होगा। वह उनके बीच फैसला करेगा। तो जो लोग 'ईमान' लाए और अनुकूल कर्म किए वे नैमत भरी जन्नतों में होंगे। और जिन लोगों ने कुफ्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया, उनके लिए अपमानजनक यातना होगी। (22 : 56-57, पृ. 598)

8. गैर-मुसलमानों से लड़ो और जान से मारो

1. फिर जब हराम महीने बीत जाऐं, तो 'मुशिरकों' को जहाँ—कहीं पाओ कत्ल करो, और उन्हें पकड़ों और उन्हें घेरो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो। यदि वे 'तोबा' कर लें और 'नमाज़' क़ायम करें और 'ज़कात' दें तो उनका मार्ग छोड़ दो। (9 : 5, पृ. 368)

2. हे 'ईमानवालो'! उन काफिरों से लड़ो जो तुम्हारे आसपास हैं और चाहिए कि वे तुम में सख्ती पाऐं। **(9 : 123, पृ. 391)**

3. तुम पर युद्ध फर्ज़ किया गया, और वह तुम्हें अप्रिय है—और हो सकता है एक चीज तुम्हें बुरी लगे और वह तुम्हारे लिए अच्छी हो, और हो सकता है, कि एक चीज़ तम्हें प्रिय हो और वह तम्हारे लिए बुरी हो। अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। **(2 : 216, पृ. 162)**

4. हे नबी! ईमानवालों को लड़ाई पर उभारो। यदि तुमसें बीस जमे रहने वाले होगें तो वह दो सौ पर भी प्रभुत्व प्राप्त करेंगे और तुम में सौ हों तो वे एक हज़ार 'काफ़िरों' पर भारी रहेंगे, क्योंकि वे ऐसे लोग हैं जो समझ बूझ नहीं रखते। **(8 : 65, पृ. 358)**

5. जहाँ तक हो सके तुम लोग (सेना) शक्ति और तैयार बंधे हुए घोड़े उनके लिए तैयार रखे ताकि इसके द्वारा अल्लाह के शत्रुओं और अपने शत्रुओं और इनके सिवा औरों को भय-भीत कर दो जिन्हें तुम नहीं जानते। **(8 : 60, पृ. 357)**

6. 'किताबवाले' जो न अल्लाह पर ईमान लाते हैं और न 'आखिरत', पर और न उसे 'हराम' करते हैं जिसे अल्लाह और उसके 'रसूल' ने 'हराम' ठहराया है और न सच्चे 'दीन' को अपना 'दीन' बनाते हैं, उनसे लड़ो यहाँ तक कि वे अप्रतिष्ठित होकर अपने हाथ से जिज़िया देने लगें। **(9 : 29, पृ. 372)**

7. इन 'मुश्रिकों' के लिए अल्लाह और उसके 'रसूल' के नजदीक कोई सन्धि कैसे हो सकती है सिवाय उन लोगों के जिनसे तुमने 'मस्जिदे हराम' (काबा) के पास संधि की थी ? **(9 : 7, पृ. 368)**

8. और यह कि जो 'आखिरत' पर 'ईमान' नहीं लाते, हमने उनके लिए दुखदायिनी यातना तैयार कर रखी है। **(17 : 10, पृ. 508)**

9. और जब हम किसी बस्ती को विनष्ट करने का इरादा कर लेते हैं तो हम वहाँ के सुखभोगी लोगों को हुक्म देते हैं फिर वे उसमें अवज्ञा करने लग जाते हैं, तब उस बस्ती पर वह (यातना की) बात साबित

हो जाती है, फिर हम उसे बिल्कुल जड़ से उखाड़ फैंकते हैं। (17 : 16, पृ. 509)

10. जिन लोगों ने कुफ्र किया वे यह न समझें कि वे बाजी ले गए। वे कभी हरा नहीं सकते। (8 : 59, पृ. 357)

11. और उनसे युद्ध करो जहाँ तक कि फ़ितना शेष न रहे और 'दीन' अल्लाह का हो जाए। (2 : 193, पृ. 158)

12. और अल्लाह की राह में युद्ध करो और जान लो कि अल्लाह सुनने और जानने वाला है। (2 : 244, पृ. 169)

13. जो लोग सांसारिक जीवन के बदले 'आखिरत' का सौदा करें, उन्हें चाहिए कि वे अल्लाह के मार्ग में युद्ध करें। जो अल्लाह के मार्ग में युद्ध करेगा तो चाहे वह मारा जाए या विजयी हो, उसे जल्द हम बड़ा पुरस्कार प्रदान करेंगे। (4 : 74, पृ. 234)

14. जो लोग 'ईमान' लाए अल्लाह के मार्ग में युद्ध करते हैं। और जिन लोगों में 'कुफ्र' किया वे मूर्तियों के मार्ग में युद्ध करते हैं। तो तुम शैतान के साथियों से लड़ो। (4 : 76, पृ. 234)

15. और तुम उनसे लड़ो यहाँ तक कि फ़ितना (उपद्रव) बाकी न रहे और दीन (धर्म) पूरा-का-पूरा अल्लाह के लिए हो जाए। (8 : 39, पृ. 354)

16. तो यदि ये लोग तुम्हें लड़ाई में मिल जाएं तो (इनकी खबर लेकर) इनके द्वारा उन लोगों को भगा दो जो उनके पीछे हैं। कदाचित् वे चेतें (8 : 57, पृ. 357)

17. अब जब 'कुफ्र' करने वालों से तुम्हारी मुठ-भेड़ हो तो गरदनें मारना, यहाँ तक कि जब तक उन्हें कुचल चुको तो बन्धनों में जकड़ो।" (47 : 4, पृ. 929)

18. निसंदेह अल्लाह उन लोगों से प्रेम रखता है जो उसके मार्ग में पंक्ति बद्ध होकर लड़ते हैं मानो वे सीसा पिलाई हुई (मज़बूत) दीवार हैं। (61 : 4, पृ. 1034)

19. जो लोग विरोध करते हैं 'अल्लाह' का और उसके 'रसूल' का वे बुरी तरह परास्त हुए जैसे वह लोग परास्त हुए जो इनसे पहले थे और हमने खुली खुली आयतें उतार दी हैं और 'काफ़िरों' के लिए अपमानजनक यातनाएँ हैं। **(58 : 5, पृ. 1016)**

20. और अपराधियों को 'जहन्नम' की ओर हाँककर उसके घाट पहुँचा देंगे। **(19 : 86, पृ. 553)**

21. और हराम (असम्भव) था हर उस बस्ती के लिए (पलटना) जिनको हमने विनष्ट कर दिया था। निश्चय ही वे पलटने वाले थे। **(21 : 95, पृ. 584)**

22. हे ईमानवालो! जब तुम एक सेना के रूप में 'काफ़िरों' से भिड़ो तो उनसे पीठ न फेरो। **(8 : 15, पृ. 351)**

23. यह है (मामला), और यह (जान लो) कि अल्लाह 'काफ़िरों' की चालों को कमज़ोर करने वाला है। **(8 : 18, पृ. 351)**

24. तो यदि तुममें से सौ जमे रहने वाले होंगे तो वे दो सौ पर प्रभुत्व प्राप्त कर लेंगे और यदि तुममें हजार होंगे तो दो हज़ार पर अल्लाह के हुक्म से भारी रहेंगे। **(8 : 66, पृ. 358)**

25. कि वे अल्लाह की राह में हिजरत न करें और यदि वे इससे फिर जाएं तो उन्हें जहाँ कहीं पाओ पकड़ो और उनका वध करो और उनमें से किसी को साथी और सहायक न बनाना। **(4 : 89, पृ. 237)**

26. तो अवश्य हम कुफ्र करने वालों को यातना का मज़ा चखाएंगे, और अवश्य ही हम इन्हें सबसे बुरा बदला देंगे उस काम का जो वे करते थे **(41 : 27, पृ. 865)**

27. तुमने उन्हें कत्ल नहीं किया, बल्कि अल्लाह ने उन्हें कत्ल किया। **(8 : 17, पृ. 351)**

28. फिटकारे हुए, जहाँ कहीं पाए जाएंगे पकड़े जायेंगे और बुरी तरह कत्ल किए जाएंगे। **(33 : 61, पृ. 759)**

29. तो तुम उन लोगों को जो 'ईमान' ला चुके हैं, जमाए रखो। मैं अभी 'काफिरों' के दिलों में रौब डाले देता हूँ। तो तुम उनकी गरदनों पर मारो और उनके हर जोड़ पर चोट लगाओ। **(8 : 12, पृ. 350)**

30. उनसे ("काफ़िरों") लड़ो अल्लाह तुम्हारे हाथों उन्हें यातना देगा, और उन्हें रुसवा करेगा और उनके मुकाबले में तुम्हारी सहायता करेगा। **(9 : 14, पृ. 369)**

31. यदि तुम न निकलोगे तो अल्लाह तम्हें दुःख देने वाली यातना देगा, और तुम्हारे सिवा किसी और गिरोह को ले आएगा। **(9 : 39, पृ. 374)**

32. ताकि अल्लाह 'मुनाफिक' पुरुषों और 'मुनाफ़िक' स्त्रियों और 'मुशिरक' पुरुषों और 'मुशिरक' स्त्रियों को दण्ड दें। **(33 : 73, पृ. 760)**

33. और अल्लाह की राह में उन लोगों से युद्ध करो। **(2 : 190, पृ. 157)**

34. अल्लाह के साथ शिर्क (बहुदेवतावाद) न करना। **(31 : 13, पृ. 727)**

35. और उससे बढ़कर जालिम कौन होगा जिसे उसके 'रब' की 'आयतों' के द्वारा चेताया जाए, और फिर वह उनसे मुँह फेर ले। निश्चय ही हमें ऐसे अपराधियों से बदला लेना है। **(32 : 22, पृ. 736)**

36. जो लोग अल्लाह और उसके 'रसूल' से लड़ते हैं और धरती में बिगाड़ पैदा करने के लिए दौड़-धूप करते हैं, उनकी, सज़ा यही है कि बुरी तरह कत्ल किए जाएं या रसूली पर चढ़ाये जाएं या उनके हाथ और उनके पांव विपरीत दिशाओं से काट डाले जाएं। या उनको देश निकाला दे दिया जाए। यह रूसवाई तो उनके लिए दुनिया में हैं और 'आखिरत' में उनके लिए यातना है। **(5.33, पृ. 263)**

37. और यदि तुम अल्लाह के मार्ग में मारे गए या मर गए, तो अल्लाह की क्षमा और दयालुता उन सब चीजों से है जिन्हें ये लोग इकट्ठे किए जाओगे। **(3 : 157-158, पृ. 209)**

38. और जो अल्लाह के मार्ग में मारे गए, उन्हें मरा हुआ न समझो। बल्कि वे अपने 'रब' के पास जीवित हैं, रोज़ी पा रहे हैं। (3 : 16 9, पृ. 211)

9. गैर-मुसलमानों के विरूद्ध लड़ो और जिहाद करो

1. तो 'काफिरों' की बात न मानना और इस (कुरान) से तुम उनसे बड़ा 'जिहाद' करो। (25 : 52, पृ. 643)

2. निकल पड़ो, चाहे हल्के हो या बोझल, और अपने मालों और जानों के साथ अल्लाह के मार्ग में 'जिहाद' करो। यह तुम्हारे लिए अच्छा है यदि तुम जानो। (9 : 41, पृ. 375)

3. निश्चय ही जो लोग 'ईमान' लाए और 'हिज़रत' की और अल्लाह के मार्ग अपनी जान और अपने माल से 'जिहाद' किया और जिन लोगों ने (हिजरत करने वालों को) जगह दी और सहायता की—वे एक दूसरे के संरक्षक हैं। और जो जिन लोगों ने हमारे हेतु कष्ट किया हम उन्हें अपने मार्ग दिखा देंगे और निसंदेह अल्लाह उत्तमकारी के साथ है। (29 : 69, पृ. 711)

4. हे नबी! 'काफिरों' और 'मुनाफिकों' के साथ 'जिहाद' करो और उन पर सख्ती करो और उनका ठिकाना 'जहन्नम' है (66 : 9, पृ. 1055)

5. और उन लोगों को जो अल्लाह के मार्ग में मारे जाते हैं, मुरदा न कहो, वे तो जीवित हैं, परन्तु तुम्हें इसकी अनुभूति नहीं होती। (2 : 154, पृ. 150)

6. उसकी (अल्लाह की) राह में 'जिहाद' करो (5 : 35, पृ. 263)

7. और जिन लोगों ने अल्लाह के मार्ग में घर बार छोड़ा फिर कत्ल कर दिए गये या मर गये, अल्लाह उन्हें अच्छी रोज़ी प्रदान करेगा। (22 : 50, पृ. 598)

8. और कहते हैं कि कोई व्यक्ति जन्नत में प्रवेश नहीं कर सकता सिवाय उसके जो यहूदी या ईसाई है। ये उनकी कामनाएँ हैं। कहोः यदि तुम सच्चे हो तो अपने प्रमाण प्रस्तुत करो। (2 : 111, पृ. 143)

9. 'ईमान वाले' तो बस वे हैं जो अल्लाह पर और उसके 'रसूल' पर ईमान लाए फिर संदेह में नहीं पड़े और अपने मालों और अपनी जानों को अल्लाह की राह में लगा दिया। यही लोग सच्चे हैं। **(49 : 15, पृ. 952)**

10. हे 'ईमानवाले!' क्या मैं तुम्हें एक ऐसा व्यापार बताऊ जो तुम को एक दुःख भरी यातना से बचा ले। ईमान रखो अल्लाह और उसके 'रसूल' पर और 'जिहाद' करो अल्लाह के मार्ग में अपने मालों और अपनी जानों से यह तुम्हारे लिए उत्तम है यदि तुम ज्ञान रखते हो। वह तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा और तुम्हें ऐस बागों दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रहीं होगीं और अच्छे अच्छे घरों में भी जो सदा बहार बागों में होंगे। यह है बड़ी सफलता। **(61 : 10-12, पृ. 1035)**

11. और अल्लाह को छोड़कर वे उसको पूजते हैं जो न उन्हें लाभ पहुँचा सकता है और न हानि पहुँचा जा सकता है। और 'काफ़िर' अपने 'रब' के मुकाबले में (विद्रोहियों का) पृष्ठ पोषक बना हुआ है। **(25 : 55, पृ. 644)**

12. जो लोग अल्लाह पर और अन्तिम दिन पर ईमान रखते हैं वे कभी तुमसे इसकी इजाजत नहीं मांगेंगे कि अपने माल और अपनी जानों के साथ 'जिहाद' न करे। अल्लाह उन लोगों को जानता है जो डरने वाले हैं। **(9 : 44, पृ. 376)**

13. हे नबी! 'काफिरों' और मुनाफिकों' से 'जिहाद' करो! और उनके साथ सख्ती से पेश आओ। उनका ठिकाना 'जहन्नम' है और वह क्या ही बुरा ठिकाना है। **(9 : 73, पृ. 380)**

14. हे 'ईमानवालो'! तुम्हें क्या हो गया कि जब तुमसे कहा गया कि अल्लाह के मार्ग में निकलो, तो तुम घर पर ढ़ह गए। क्या तुम 'आखिरत' को छोड़कर सांसारिक जीवन पर राज़ी हो गए ? तो सांसारिक जीवन सुख सामग्री 'आखिरत' की अपेक्षा बहुत थोड़ी है। **(9 : 37, पृ. 374)**

15. निसंदेह महीनों की गिनती-अल्लाह की किताब में उस दिन से कि उसने आकाशों और धरती को पैदा किया—अल्लाह की दृष्टि में बारह महीनों की है। इनमें चार आदर के हैं। यही सीधा दीन (धर्म) है। तो तुम इनमें (युद्ध और रक्तपात करके) अपने-आप पर जुल्म न करो और तुम सब मिलकर 'मुशिरकों' से लड़ो जिस तरह वे सब मिलकर तुम से लड़ते हैं। और जान लो कि अल्लाह उन लोगों के साथ है जो डरने वाले (अल्लाह से) हैं। **(9 : 36, पृ. 373)**

16. जो लोग ईमान लाए और हिजरत की और अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जानों से जिहाद किया अल्लाह के यहाँ (उनके लिए) बड़ा दर्जा है। और वही हैं जो सफलता प्राप्त करने वाले हैं। उन्हें उनका रब शुभ सूचना देता है, अपनी दयालुता और रज़ामंदी की, और ऐसे बागों (जन्नत) की जिनमें उनके लिए स्थायी सुख है। उनमें वे सदैव रहेंगे। निसंदेह अल्लाह के पास बड़ा बदला (इनाम) है। **(9 : 20-22, पृ. 370)**

17. और जान लो कि जो चीज़ 'गनीमत' के रूप में तुमने प्राप्त की है उनका पाँचवा भाग अल्लाह का, रसूल का और (रसूल के) नातेदारों का, और अनाथों और मुहताजों और मुसाफ़िर का है। **(8 : 41, पृ. 354)**

18. निश्चय ही जो लोग 'ईनाम' लाए और 'हिजरत' की और अल्लाह के मार्ग में अपनी जान और अपने माल से जिहाद किया और जिन लोगों ने (हिज्ररत करने वालों को) जगह दी और सहायता की, वे एक-दूसरे के संरक्षक-मित्र हैं और जो लोग 'ईमान' ले आए परन्तु हिजरत नहीं की, तो उनसे तुम्हारा संरक्षण (और मैत्री आदि) का कोई सम्बन्ध नहीं है जब तक कि वे हिज़रत न करें। **(8 : 72, पृ. 360)**

19. तो (हे मुशिरको!) इस भू-भाग में चार महीने और चल फिर लो और मान लो कि तुम अल्लाह को हरा नहीं सकते और यह कि अल्लाह 'काफिरों' को अपमानित करने वाला है। और अल्लाह और उसके 'रसूल' की ओर से बड़े हज्ज के दिन लोगों के लिए मुनादी की

जाती है कि अल्लाह 'मुश्रिकों' (के प्रति जिम्मेदारी) से बरी है, और उसका रसूल भी। तो, यदि तुम लोग तौबा कर लो, तो तुम्हारे ही लिए अच्छा है, परन्तु यदि तुम मुँह मोड़ते हो तो जान लो कि तुम अल्लाह को हरा नहीं सकते। और जिन लोगों ने कुफ्र किया है उन्हें दुःख देने वाली यातना की मंगल सूचना दे दो। (9 : 2-3, पृ. 367)

20. बिना किसी आपत्ति के बैठे रहने वाले 'मोमिन' और अपने धन और प्राणों के साथ अल्लाह के मार्ग में 'जिहाद' करने वाले बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह ने बैठे रहनेवालों की अपेक्षा अपने धन और अपने प्राणों से 'जिहाद' करने वालों का एक दर्जा बड़ा रखा है। (4 : 95, पृ. 238)

21. और जो कोई अपने घर से अल्लाह और उसके 'रसूल' की ओर 'हिज़रत' करने निकले, फिर उसकी मृत्यु आ जाए, तो उसका प्रतिदान अल्लाह के जिम्मे हो गया। (4 : 100, पृ. 239)

22. तुम तो अल्लाह के मार्ग में युद्ध करो-तुम पर अपने सिवा किसी और का दायित्व नहीं-और 'ईमानवालों' को भी इसके लिए उभारो हो सकता है अल्लाह 'काफिरों' का ज़ोर तोड़ दे। (4 : 84, पृ. 236)

23. किसी न किसी समय 'कुफ्र' करने वाले कामना करेंगे कि क्या ही अच्छा होता कि 'मुस्लिम' होते। (15.2, पृ. 473)

24. निश्चय ही अल्लाह का डर रखने वाले ऐसे स्थान में होंगे जहाँ कोई खटका न होगा। बागों और जल-स्त्रोतों के बीच, पतले और गाढ़े रेशमी वस्त्र पहनेंगे और एक-दूसरे के आमने-सामने होंगे। यह होगा! और हम उनका विवाह बड़ी और सुन्दर आंखों वाली परम रूपवती स्त्रियों से कर देंगे। वे वहाँ निश्चिन्ततापूर्वक हर प्रकार के मेवे तलब करते होंगे। वे वहाँ मृत्यु का मज़ा कभी न चखेंगे। बस पहली मृत्यु (दुनिया में), जो आ चुकी वह आ चुकी। और वह उन्हें भड़कती अग्नि (जहन्नम) की यातना से बचा देगा। यह सब अनुग्रह होगा तेरे 'रब' का। यही बड़ी सफलता है। (44 : 51-57, पृ. 907-908)

Selected Bibliography

1. **The Koran**—ed. N.J. Dawood. Penguin. 4th Edn. 1973.

2. **Glorious Koran** Md. Marmaduke Pickthall. New American Library. London.

3. **Hadis**—Sahi Bukhari, Sahi Trimzi.

4. **The Hidayah of Burhanuddin Ali.** Trans. C. Hamilton, 1791. New Delhi reprint. 1985.

5. **Tuhfat-ul-Mujaheedin** trans. M.J. Rowlandson, London, 1933.

6. **This is Jihad!** Anwar Shaikh, Cardiff. 1999.

7. **Islam : Arab National Movement,** Anwar Shaikh. Cardiff 1999.

8. **Dictionary of Islam.** T.P. Hughes, 1885. Indian reprint 1976.

9. **The Life of Mohomet.** Sir William Muir. London 1894. Indian reprint 1992 (Voice Of India).

10. **Mohammed & the Rise of Islam.** D.S. Margoliouth, London. 1905 Indian reprint 1985 (Voice Of India).

11. **Understanding Islam Through Hadis.** Ram Swarup, Voice of India 1987.

12. **The Quranic Concept of War.** Brig. S.K. Malik, with a forward by Gen. Zia-ul-Haq. Lahore 1979. Delhi Reprit. 1986.

13. **Akbar-nama** Abul Fazl, Trns. H. Beveridge. Delhi Reprint. 1993.

14. **Babur-namas of Babur.** Trns. A.S. Beveridge, Delhi Reprint. 1979.

15. **The History of India as told by its own Historians** H.M. Elliot & J. Dowson. [Collection of Arabic & Persian Chronicles.] 8 vols Delhi reprint. 1990.

16. **Akbar the Great Moghul.** V. Smith. Delhi Reprint 1962.

17. **Fall of the Mughal Empire.** Sir Jadunath Sarkar. Delhi. Reprint. 1991.

18. **History of Aurangzeb.** Sir Jadunath Sarkar. New Delhi. Reprint. 1972.

19. **The History and Culture of Indian people**, R.C. Majumdar (ed). Vol- VI, VII, Bharatiya Vidya Bhavan, Bombay 1973.

20. **A Forgotten Empire**, Robert Sewell, Delhi Reprint. 1962.

21. **Guru Tegh Bahadur.** Ranbir Singh. Hind Books. Delhi 1976.

22. **The History of Tipu Sultan.** Kabir Kausar.

23. **History of the Khiliji's** Prof. K.S. Lal. Delhi 1988.

24. **The Mughal Harem.** Prof. K.S. Lal. Delhi 1988.

25. **Hindu Temples : What happned To Them :** Sitaram Goel. Voice of India.

26. **Negationism in India : Concealing Records of Islam.** K. Elst. Voice of India. 1992.

27. **The Rehla of Ibn Batutah.** Eng. Trns. by Dr. Madadi Hussian 1953.

28. **Voyages of East Indies :** Fra Bartolomaco-Jaico Books— 1974.

29. **Travels in the Mughal Empire.** Francois Bernier. Revised & edited by V. Smith. Oxford 1934, Reprint 1978.

30. **Alberuni's India.** Trns. Edward Sachao London 1910.

31. **History of Mysore**, C.H. Rao, vol- II & III.

32. **Freedom Struggle in Kerala**-Sardar K.M. Panickar.

33. **The Sikhs in History**, Dr. Sangat Singh Uncommon Books, Delhi.

भारत में जिहाद विद्वानों की दृष्टि में

स्वामी विवेकानन्द "उनके ही अपने ऐतिहासिक लेखों के अनुसार जब पहली बार मुसलमान भारत आये तो भारत में हिन्दुओं की जनसंख्या साठ करोड़ थी। इस कथन में न्यून वर्णन का दोष हो सकता है किन्तु अतिशयोक्ति का नहीं; क्योंकि मुसलमानों के अत्याचारों के कारण असंख्यों हिन्दुओं का वध हो गया ....किन्तु अब वे हिन्दू घटकर बीस करोड़ रह गये है।" (कम्पलीट वर्क्स खण्ड V पृष्ठ 233)

बिल डयूरैण्ट "इतिहास में इस्लाम द्वारा भारत की विजय के इतिहास की कहानी सम्भवतः सर्वाधिक रक्त रञ्जित है। यह एक अति निराशा जनक कहानी है। क्योंकि इसका प्रत्यक्ष आदर्श वा निष्कर्ष यही है कि सभ्यता जो एक इतनी बहुमूल्य व महान है जिसमें शांति और स्वतंत्रता, संस्कृति और शांति का इतना कोमंल मिश्रण है उसे भी कोई भी विदेशी, [illegible]र, आक्रमणकारी अथवा भीतर ही बढ़ जाने वाले वा पनप जाने वाले आतताई किसी भी क्षण नष्ट भृष्ट वा समाप्त कर सकते हैं।" (दी स्टोरी ऑफ सिविलिज़ेशन)

कोनार्ड ऐल्स्ट "बलात् मुस्लिम विजयें हिन्दुओं के लिए सोहलवीं शती तक जीवन मरण के संघर्ष का ही प्रश्न बनीं रहीं। सम्पूर्ण शहर जला दिये गये थे। सम्पूर्ण जनसंख्या का वध कर दिया गया था। प्रत्येक आक्रामक संघर्ष में, हजारों का वध कर दिया जाता था और उतनी ही संख्या को बन्दी बना लिया जाता था और देश से बाहर निकाल दिया जाता था। प्रत्येक आक्रान्ता ने वध किये हुए हिन्दुओं के शिरों के वस्तुतः पहाड़ खड़े किये थे। एक हजार ईसवी में अफ़गानिस्तान की बलात विजय के बाद हिन्दुओं का वध कर, पूर्ण सफ़ाया कर दिया गया था; उस स्थान को अभी भी 'हिन्दू कुश' यानी कि हिन्दुओं के कत्ले आम का स्थान कहा जाता है।" (http :/home 123 India. com/hinduswarj).